जॉर्ज मूलर :
एक अद्‌भुत प्रार्थना योद्धा

साजु जे मैथ्यू

मार्गम् बुक्स
पोस्ट बॉक्स नं. 3
बिलासपुर, छ.ग. 495001

George Muller : Ek Adbhut Prarthana Yodhha
(Hindi)
Translated by:
A J Abraham
Prarthana Veeranaya George Muller
(Malayalam) Original

I[st] Edition - April 2005

Published by
Margam Books,
Post Box No. 3,
Bilaspur-495001
Chhattisgarh

Printed by
Graphic Systems & Co.
Mallappally, Ph : 0469 - 2782260

Rs. 40

For Private Circulation only

आमुख

जोर्ज मूलर ! हर युग की मसीही कलीसियाओं विशेषकर आधुनिक भौतिकतावादी कलीसिया के लिए मूलर एक आश्चर्य है। किसी के लिए वे एक प्रार्थना योद्धा हैं तो किसी के लिए वे एक कट्टर मसीही हैं। चाहे कुछ भी हो उन्होने केवल प्रार्थना की सहायता से दो हजार से भी अधिक बच्चों को भोजन, वस्त्र, शिक्षा और घर जैसा वातावरण दिया। संसार के विभिन्न भागों के दस हजार से भी अधिक बच्चों का मुफ्त शिक्षा प्रदान की। सुसमाचार रहित स्थानों पर सेवा करने वाले सैकड़ों सुसमाचारकों को उन्होने वित्तीय सहायता दी। उन्होने लाखों की संख्या में बाईबल तथा करोड़ों की संख्या में सुसमाचार की प्रतियां वितरित की।

इन बातों से मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ बल्कि इस बात से हुआ कि इन सारे कार्यो को करने के लिए करोड़ों रुपयों का प्रबंध उन्होने केवल प्रार्थना से किया; न कि किसी से धन के लिए अपील करके।

आज भी हमारे सुसमाचार सेवा के क्षेत्रों में कई वीर योद्धा हैं। कई लोग कुछ कर भी रहें हैं। कई लोग तो अपनी सेवा का बढ़ा चढ़ाकर वर्णन करके आर्थिक सहायता करने वालों की खोज करके उनकी सहायता से सफलता प्राप्त करते हैं। आज सेवा को बढ़ाने के लिए तथा आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए जो व्यवसायिक तरीके अपनाये जाते हैं उन्हे सही समझा जाता है। इन तरीकों में किसी को भी कोई त्रुटि नजर नहीं आती। अधिकांश लोग सोचते हैं कि इसके बिना काम नहीं चलेगा। जोर्ज मूलर को इतिहास की बात कहकर हम भूलने का प्रयास करते हैं।

हमारा विश्वास है कि इस आधुनिक युग में जबकि व्यवसायिक जीवन शैली सुसमाचारीय सेवाओं को लील रहा है, जोर्ज मूलर हमें मन परिवर्तन का संदेश देता है। एक ऐसा संदेश जो हमें अनुग्रह की सच्चाई, विश्वास की गहराईयों और विश्वास की पूर्णता की ओर ले चलती है। यह सच है कि इस ग्रंथ की रचना मेरे लिए भी पुनःसमर्पण का कारण बना।

जोर्ज मूलर के बारे में लिखी गई कई पुस्तकें और मूलर की कई रचनाएं इस पुस्तक का आधार है। जैसे रोगर स्टीर द्वारा रचित 'जोर्ज मूलर, डिलाइटड इन गाड', एफ.सी. बेयली द्वारा रचित जीवन चरित्र, रोगर स्टीर का ही 'मूलर कलक्शन्स्', ए.ई.सी. बुक्स द्वारा रचित 'आन्स्वेर्स दू प्रेयर बाइ मूलर' आदि। इस पुस्तक की रचना में मैं ने फेस्त बेयली की लेखन शैली को अपनाया है। बेयली की पुस्तक इस बात का अनुपम उदाहरण है कि जीवन चरित्र भी रोचक शैली में लिखा जा सकता है।

मेरी रचना में जोर्ज मूलर एक साधारण मनुष्य है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि उनका जीवन और दर्शन आज हमारे लिए भी अनुकरणीय है। हम भी उस विश्वास पथ पर चल सकते हैं। इसके लिए हममें थोड़ा और समर्पण तथा परमेश्वर पर भरोसा की आवश्यकता हो सकती है।

साजु
तिरुवल्ला,
केरल - ६८९ ५५०

1

''हाय दोस्तों! जोर्ज का पदार्पण हो चुका है .....मदिरा और परमेश्वर के वचन का एक साथ सेवन करने वाला विद्वान। धर्मशास्त्र से ज्यादा बियर की बोतलों के साथ अधिक समय व्यतीत करने वाला.....शराब खरीदने के लिए अपनी घड़ी और कपड़े गिरवी रखने वाला .....।''

जोर्ज को दोस्तों की बातों में मजा आ रहा था। इसी बीच मदिरालय की मद्धिम रोशनी में उसने अपने लिए एक खाली कुर्सी ढूंढ़ निकाली।

''दोस्तों, जोर्ज का कहना है कि वह लूथरन कलीसिया का पास्टर बनने के लिए पढ़ाई कर रहा है। जेल से बाहर आये हुए उसे थोड़े ही दिन हुए हैं .....।''

''बस एमिल, मैं परिचय का मोहताज नहीं हूँ .....यहाँ सब लोग मुझे जानते हैं .....।''

अपनी घूमने वाली कुर्सी पर बैठकर उसने एक चक्कर लगाया। फिर बैरे की ओर देखकर पुकार लगाई.....। ''....ओए.....मेरा हिस्सा ले आओ.....।''

मदिरालय के सभी लोग जोर्ज की आवाज से परिचित थे। उसने अभी उम्र के बीसवें वसंत को भी नहीं देखा है फिर भी पीने के मामले में वह बड़े-बड़ों को मात दे देता है। हाले विश्वविद्यालय के पास ही स्थित वह मदिरालय जोर्ज का स्थाई ठिकाना है जहाँ वह दोस्तों के साथ अपनी शामें गुलजार किया करता है। लेकिन आज तो दोपहर ही हुआ है। हाले विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र के छात्रों में से उसके अधिकांश मित्र भी यहाँ इकठ्ठा हैं।

जोर्ज उसी विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र का छात्र है। पढ़ाई वगैरह कालेज में ..... मदिरालय पहुंचने के बाद जोर्ज उन सबका हीरो है।

''ठीक है, अब तुम लोग अपनी बात जारी रख सकते हो। मेरे आने से तुम लोगों का मजा किरकिरा नहीं होना चाहिए .....।'' जोर्ज ने कहा।

''नहीं जोर्ज, बाकी बातें तुम्हारी ओर से ....हम लोग तो सुनने के लिए तैयार हैं। तुम अपने साहसिक कारनामों का वर्णन प्रारम्भ कर सकते हो।'' एमिल ने सबका प्रतिनिधि बनते हुए कहा।

कहानी सुनाना जोर्ज को भी अच्छा लगता है। जोर्ज ने अपनी कहानी प्रारम्भ की कि कैसे उसने हास्टल के अपने मित्रों को मूर्ख बनाया था।

''तुम लोग तो जानते ही हो कि जितना जेबखर्च मुझे मिलता है उसमें मेरा खर्च पूरा नहीं होता है। उधार ले लेकर मैं परेशान हो चुका था। मेरी घड़ी, कपड़े सब गिरवी रखा हुआ था। धर्मशास्त्र के विद्यार्थी तो बेचारे बहुत सीधे होते हैं। थोड़ा थोड़ा रुपया मैंने सबसे उधार ले रखा था। इसी बीच घर से मेरे पास मनिआर्डर आया।

लेकिन यदि मैं उस रुपये से सब की उधारी चुका देता तो अगले माह बियर कैसे पीता...? इसीलिए मैंने एक जोरदार योजना बनाई।

दोस्तों को बुलाकर मैंने उनसे कहा कि घर से पैसा आ गया है और मैं जल्द ही सबकी उधारी चुका दूंगा। मैंने उन्हे रुपया दिखा भी दिया। अब मैंने अपनी योजना पर अमल किया। मैंने रुपयों को जूतों के अंदर छुपा दिया। फिर मैं ने यह कहकर रोना शुरु किया कि मेरा रुपया खो गया है....। मेरा रोना सुनकर सब दौड़े चले आए.....। सब मिलकर मेरा रुपया खोजने लगे.....। लेकिन वह ऐसे कैसे मिलता.....?

चूंकि सबने रुपया पहले ही देख लिया था इसीलिए किसी को मुझ पर शक नहीं हुआ। वे एक एक कर आकर मुझे सांत्वना देने लगे। ''जोर्ज तुम परेशान मत हो..... मेरा रुपया मत देना.....समझ लो तुमने चुका दिया.....।''

''आखिर धर्मशास्त्र के विद्यार्थी हैं.....दया कैसे नहीं करते? बेचारे जोर्ज को अगले एक माह का खर्च भी तो चलाना है .....सबने मिलकर मेरे लिए चंदा किया। इस प्रकार पूरा उधारी भी चुक गया। घर से जो पैसा आया था वह जूते में .....और चंदा का पैसा जेब में ....। जोर्ज अब एक महीना आराम से बियर पी सकता है। कहो कैसी रही .....?''

दोस्तों को जोर्ज की कहानी अच्छी लगी। उन्होने मेज थपथपाकर अपनी खुशी का इजहार किया।

''जोर्ज, अब अपनी जेल वाली कहानी भी सुनाओ न ....'' एमिल ने आग्रहपूर्वक कहा। जोर्ज ने सोचा कि शायद कहानी सुनने के बाद मुफ्त में एक बोतल बियर मिल जाये.....।

''चार पाचँ वर्ष पहले की बात है....।'' जोर्ज ने कहानी प्रारंभ की।

''वुफन ब्यूटल में ब्राउन श्वेग राजाओं का जो महल था उसे होटल बना दिया गया था। मैं कुछ दिन वहाँ जाकर ठहर गया। क्या

राजसी जिंदगी थी.....आखिर जब बिल आया तो मेरे हाथ पांव फूल गये .....। पैसे तो थे नहीं.....। मैं खिड़की से कूदकर भागना चाहा....किन्तु सुरक्षा कर्मियों की नजरों में पड़ गया। आखिर पुलिस आयी। बिना मेरी ओर देखे वे मेरा परिचय लेने लगे। देखते भी कैसे? मैं तो सिर झुकाकर खड़ा था.....।

''नाम?'' उन्होने पूछा।

''जोर्ज मुलर....।''

''उम्र ?''

''सोलह...''

''जन्म तारीख...?''

''27 सितम्बर 1805''

''जन्म स्थान...?''

''क्रोपन स्टोड, प्रष्या...''

''यहाँ बढ़िया राजसी ठाठ-बाठ था। है न?''

''हाँ,....''

''लेकिन देने के लिये पैसे नही है....है न?''

आगे की कहानी वह अभिनय करके बताने लगा। कहानी का अंतिम हिस्सा एमिल ने सुनाया।

''.... फिर चार हफ्ते जेल में बिताना पडा। अंत में पिताजी ने पैसा देकर छुड़ाया। घर लाकर अच्छी तरह पिटाई की। है न?'' वह यह कहानी कई बार सुन चुक था।

''वे तो एक सरकारी नौकर हैं ....उनमें बुद्धि नहीं है। इसलिये तो उन्होने मेरी पिटाई की ....।'' जोर्ज का आकोश फट पड़ा। उसके पिताजी वास्तव में चुंगी लेने का काम करते थे। जेल से घर पहुंचने के बाद की घटनाओं का वर्णन जोर्ज स्वयं करने लगा। उसके पहुँचने के दो दिन बाद पिताजी घर पहुँचे थे क्योंकि नौकरी संबधी कार्य

के लिए वह कहीं दूर गये थे। अपनी घोड़ा गाड़ी के दरवाजों को जोर से बंद करके वह घर की ओर बढने लगे। जोर्ज समझ गया कि उनका क्रोध अभी शांत नहीं हुआ है। जोर्ज उपरी मंजिल की ओर जाने वाली सीढ़ी के उपरी हिस्से पर खड़ा था। उसने पिता को आते हुए देखा।

''.....तुम !!..... मेरी नजरों के सामने आने का दुस्साहस तुमने कैसे किया....?'' पिताजी जोर से चीखे। जोर्ज विचलित नहीं हुआ। वह अपने पिता की ओर आंखें फाड़कर देखने लगा।

''आप चाहते तो बहुत पहले ही जुर्माना भरकर मुझे जेल से छुड़ा सकते थे।'' वह गुर्राया।

''हाँ, लेकिन मैं ऐसा नहीं चाहता था.....। मैं तो चाह रहा था कि तुम कुछ दिन और जेल मे रहते। विश्वस्त रहना, आज्ञापालन करना... ये सब तुम्हें सीखना है। अच्छा, ये बताओ कि जेल मे जाकर तुमने कुछ सीखा या नहीं ?''

''यही कि जर्मनी की जेलों मे कैदियों को बहुत बुरा खाना दिया जाता है....।'' जोर्ज ने अपना विचार प्रगट किया।

''अच्छा भोजन तो तुम्हे वुफन ब्यूटल होटल मे मिल रहा था। फिर क्या हुआ...? सच बताओ ... तुम ये सब क्यों करते हो?''

''बस... यों ही मजा के लिये....''

''मजे के लिये! जब पुलिस की मार पड़ रही थी तब मजा आ रहा था न... अब तो कम से कम बातें मानना सीखो।'' पिताजी जोर्ज के चेहरे की ओर देखने लगे किंतु उसके चेहरे पर एक रिक्तता के अलावा कुछ नहीं था।

''अभी तो तुम १६ साल के हो....'' अचानक जोर्ज के पिताजी क्रोधित हो उठे और बेंत उठाकर वे उसे बुरी तरह मारने लगे। ''यह तुम्हे सिखाएगा ....'' वह बुदबुदाते रहे। जोर्ज खड़े खड़े मार खाता रहा, किन्तु उसके अन्दर का विद्रोही स्वभाव आसमान तक बढ़ गया।

''क्या एक मनुष्य को अधिकार है कि वह दूसरे मनुष्य को मारे?

.... यह कैसा रिश्ता है? .... क्या गुलाम और स्वामी का रिश्ता या पिता और बेटे का रिश्ता.....? हमेशा एक समूह दूसरे समूह से आज्ञापालन की अपेक्षा क्यों करता है? यह व्यक्ति जो मेरी पिटाई कर रहा है, वह मेरा पिता है या अध्यापक? होटल मैनेजर या पुलिस?... रुकिए....! आप एक सरकारी नौकर भर हैं .. अपने मालिकों की चमचागिरी करना ही आपको आता है। मैं आपकी बातें नहीं मान सकता।''

जोर्ज के पिता ठिठक गये। फिर उन्होनें कहा। ''देखता हूँ, कैसे नहीं मानोगे.....? बस मार की कमी है....।'' और बेंत फिर से हवा में लहरा उठा! दर्द के मारे जोर्ज कुलबुलाने लगा।

जोर्ज को मदिरालय में पहुँचें कई घंटे हो गये थे। अब तक वह बियर की दस बोतलें खाली कर चुका था। जोर्ज विचारों से बाहर आया। अपने सामने जो युवक बैठा था उस पर उसने ध्यान दिया। ....जाना पहचाना चेहरा.....इसे कहीं देखा है.....पर यहाँ नहीं.....।

''श्रीमान जोर्ज मूलर, आश्चर्य मत करो .....मैं बेट्टा हूँ, तुम्हारे साथ स्कूल में पढ़ता था।''

नशे में भी जोर्ज को याद आया। ''हाँ ....बेट्टा ..... मैं याद कर रहा हूँ। वेटर एक ग्लास और .....।''

''जोर्ज .... बहुत हो चुका..... अब तुम जाओ .....आधी रात हो गई है .....।''

''ठीक है..... ठीक है, मैं जा रहा हूँ, दोस्तों। शुभ रात्रि ..... ।''

जोर्ज मदिरालय की सीढियाँ उतरने लगा। वह अपने छात्रावास की ओर बढ़ने लगा। उसे आश्चर्य हुआ जब बेट्टा उसके साथ साथ चलने लगा।

''जोर्ज मैं तुम्हारा मित्र बनना चाहता हूँ।'' बेट्टा ने कहा। जोर्ज ने उसकी ओर देखा! यह क्या बात हुई..... कोई भी मेरा मित्र बन सकता है!'' जोर्ज ने कहा।

''नहीं जोर्ज, मैं तुम्हारा घनिष्ट मित्र बनना चाहता हूं। जब से मैं ने सुना था कि तुम यहाँ पढ़ रहे हो तभी से मैं तुमसे मिलना चाहता था।''

''ठीक है बेट्टा, हम घनिष्ट मित्र बन जाते हैं।'' जोर्ज मान गया।

''.....पर तुम क्यों मुझ जैसे पियक्कड़ को दोस्त बनाना चाहते हो? तुम तो स्कूल में एक बड़े अच्छे लड़के थे....। यही तो कारण है....। मेरे आराधना एवं प्रार्थनामय जीवन के बावजूद मैं तुमसे ईर्ष्या करता था। तुम्हें अध्यापकों से डर नहीं लगता था। पुलिस से भी तुम्हें डर नहीं लगता था। हमेशा हंसी मजाक करते रहते थे। अब भी तुम वैसे ही हो। तुम्हारे साथ रहने से मैं भी सब सीख सकता हूँ।''

''अच्छा, तो ये बात है बेट्टा, मैं तो सोच रहा था कि तुम्हारी संगति से मैं सुधर जाउंगा लेकिन यहाँ तो तुम मेरे जैसा बुरा बनना चाहते हो। देखते हैं कौन किसके जैसे बनता है....।''

''जोर्ज, तो तुम सुधरना चाहते हो .....? है न ?''

''चाहता हूँ बेट्टा, अभी तो मैं अध्ययन कर रहा हूँ लेकिन अध्ययन के बाद मैं किसी कलीसिया का पास्टर बन जाउंगा किंतु उससे पहले मुझे अपनी बुरी जिन्दगी छोड़नी होगी.... यही नहीं...।'' जोर्ज ने अपनी बात अधूरी ही छोड़ दी।

''.....यही नहीं.....।'' बेट्टा ने उसे अपनी बात पूरी करने के लिये उभारा।

''मैं इस जिन्दगी से तंग आ गया हूँ। मैं वास्तव मे सुधरना चाहता हूँ।'' जोर्ज ने बेट्टा की ओर देखा।

जोर्ज की आंखों की आंखों में सच्चाई की झलक थी।

2

''तुम मेरा मजाक मत उड़ाना, जोर्ज। वहाँ हम गीत गाते हैं, प्रार्थना करते हैं और संदेश भी सुनते हैं.....।'' जब वागनर के घर में हर शनिवार को होने वाली प्रार्थना सभा में मूलर ने आने की इच्छा प्रकट की तब बेट्टा ने ये बातें कही।

''संदेश सुनते हो.....! संदेश तो चर्च में दिया जाता है.....। बेट्टा, क्या तुम इतना भी नहीं जानते हो कि पादरी के बिना संदेश सुनना मना है?''

''जोर्ज हम एक छपे हुए संदेश को पढ़ते भर हैं।''

''हाँ तब ठीक है, कुछ भी हो बेट्टा, मैं तुम्हारे साथ इस सभा में आउंगा, हो सकता है इन सब से मेरे जीवन में सुधार हो जाए.....।''

''हाँ शायद....।''

वागनर का घर आडम्बर रहित था। अन्य घरों की तुलना में उनके घर के द्वार बहुत विशाल थे.....मानो वे उस घर में रहने वालों के हृदय की विशालता को बता रहें हों। साफ सुथरे वस्त्र पहने हुए कुछ लोग उस द्वार स् अन्दर की ओर जा रहे थे। बेट्टा और जोर्ज दोरों दरवाजे के सामने पहुँचें।

'ये मेरा दोस्त जोर्ज मूलर है.... धर्मशास्त्र का विद्यार्धी....।'' बेट्टा ने वागनर से जोर्ज का परिचय कराया।

''आईये, श्रीमान मूलर....।'' एक भाई के रुप में मैं आपका स्वागत करता हूँ। आप कोई भी क्यों न हो आपका स्वागत है। ये द्वार और हमारे हृदय आपके लिए खुले हुए हैं। अंदर जाकर अपना स्थान ग्रहण कीजिए। ये लीजिए गीत की किताब ..... इसे अपने पास रखिये।'' वागनर ने जोर्ज से हाथ मिलाते हुए कहा। उनका स्वागत करने का अंदाज बिल्कुल अनौपचारिक और गर्मजोशी से भरा हुआ था।

उसकी आखों में अब परिहास नहीं, बल्कि उत्सुकता नजर आने लगी थी।

वागनर के निजी अध्ययन कक्ष में लोग गोलाकार रुप में बैठे हुए थे।

जोर्ज अपने स्थान पर बैठकर चारों ओर उत्सुकता से देखने लगा। इन आडम्बर रहित लोगों को देख कर जोर्ज का मन छोटे बच्चे की तरह जिज्ञासु हो उठा।

अपने निजी कक्ष के मेज के सामने खड़े होकर वागनर ने कहना प्रारम्भ किया। ''आप सभों का स्वागत है। परमेश्वर अपनी आशिषों से आपको भर दें। भाई कैसर, क्या आप प्रार्थना में हमारी अगुवाई कर सकते हैं?''

जोर्ज के ठीक सामने कैसर भाई बैठे हुए थे। वागनर का आव्हान सुनकर वे उठ कर सब की तरफ मुंह करके खड़े हो गये। वह अपने घुटनों को आगे की ओर मोड़ने लगे। जोर्ज को लगा कि

अब वे गिरने वाले हैं। कोई उनको सम्भाल क्यों नहीं रहा?

अगले ही क्षण भाई कैसर के घुटने लकड़ी के उस फर्श पर टिक गये....। उन्होनें प्रार्थना करना प्रारम्भ किया। जोर्ज अविश्वास के साथ यह देख रहा था। प्रार्थना करने के लिये किसी को घुटनों पर खड़े होते हुए वह पहली बार देख रहा था। कैसर की प्रार्थना सुनकर ऐसा लग रहा था मानो वह कमरे में किसी व्यक्ति से बातें कर रहे हों। वह प्रार्थना करते समय इशारे भी करते जा रहे थे। जैसे वे उन्हें देख रहें हों जिससे वे प्रार्थना कर रहें हैं।

''बेट्टा.... उन्होनें घुटनों पर आकर क्यों प्रार्थना किया?'' जोर्ज ने फुसफुसाते हुए पूछा। ''तुम तंग मत करो.... प्रार्थना ऐसे ही की जाती है.... ज्यादा तो मैं भी नहीं जानता हूँ।''

''तुम तो जानते ही हो कि हमारी कलीसिया में प्रार्थना करने के लिये कोई भी घुटने पर खड़ा नहीं होता है लेकिन मैं यह बात जानना चाहता हूँ कि किस बात ने उन को प्रेरित किया कि वो प्रार्थना के लिये घुटने मोड़े? ''जोर्ज ने अपने प्रश्न उसका उत्तर स्वंय ही ढूंढ निकाला....। ''मै जानता हूँ बेट्टा, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने अपनी तुच्छता को स्वीकार करने के लिए उन्हें घुटनों पर खडा होना पड़ा ....। वे इस प्रकार परमेश्वर के प्रति अपनी आराधना और भक्ति को प्रकट कर रहे थे....। हाँ, कुछ यही बात है.....।''

सभा समाप्त होने के बाद सब लोग वागनर से विदा लेकर जाने लगे। ''....श्रीमान वागनर, आज आपके भवन में मैंने जो कुछ देखा उसे कभी नहीं भूल सकता। विशेष कर भाई कैसर का घुटनों पर प्रार्थना करना.... जो मेरे अंतरमन को छू गाया है।'' जोर्ज ने कहा।

''श्रीमान मूलर, मेरी बातें याद रखियेगा। यह घर और हमारे हृदय आपके लिये सदा खुले हैं। फिर से आईयेगा।'' वागनर ने जोर्ज से हाथ मिलाते हुए कहा।

मार्ग में जोर्ज शांत रहा.....। हास्टल पहुँच कर उसने शुभ रात्रि कहकर बेट्टा से विदा लिया।

वह अध्ययन कक्ष से गुजरते हुए अपने शयन कक्ष में पहुँचा।

वह दीपक जलाना भी भूल गया। वह अंधेरे मे ही बैठ गया....। वास्तव में क्या हुआ? यों ही उत्सुकतावश बेट्टा के साथ गया था....। सोचा था, दो तीन गीत गाउंगा फिर उनकी व्यवस्था उलंघन करने वाली बातों को लेकर बेट्टा का मजाक उड़ाउंगा.....। पर यह क्या ? कैसर को घुटने मोड़ने के लिए किसने प्ररित किया। उन्होने क्यों ऐसा किया.....? तुरंत ही जोर्ज अपनी अंतरात्मा में यह जान गया कि भाई कैसर जब कांपते हुए घुटनों पर खड़े होकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे तो अपने एक एक कण में परमेश्वर को अनुभव कर रहे थे।

कैसा महान व्यक्ति....!

कैसा महान परमेश्वर!

हां, यही तो अंतर है। बहुत वर्षो से कम से कम दृढीकरण संस्कार लेने के बाद से धर्मशास्त्र के उपदेशों को जोर्ज जानता था। 'पाप की छुड़ौती के लिए बलिदान' का सिद्धांत उसे कंठस्थ था। वह जानता था कि संसार को पाप से छुड़ाने के लिये प्रभु यीशु ने अपना प्राण दिया किंतु परमेश्वर उसके लिए कभी भी एक जीवित यर्थात नहीं था।

आज जब उसने एक व्यक्ति को परमेश्वर के सामने घुटने मोड़ते देखा तब उसने मानों परमेश्वर को ही देख लिया। वह अपने स्थान से खड़ा हुआ। बाहर की रोशनी में उसे अपना विद्यालय भवन दिखाई दे रहा था। जोर्ज अपने बिस्तर के पास पहुँचा। भाई कैसर ने अपने घुटनों को कैसे माड़ा था। जोर्ज ने अपने घुटनों को आगे की ओर झुकाया....। धीरे-धीरे वह मुड़ा। उसके घुटनों ने ठंडे फर्श को स्पर्श को स्पर्श किया। यह सर्वसामर्थी परमेश्वर के सामने स्वंय को दीन करने का उत्तम मार्ग हैं। निश्चय ही ऐसा करने वालों के लिए परमेश्वर एक वास्तविकता है।

आधे घण्टे से अधिक जोर्ज अपने घुटनों पर रहा। उसके होंठ बुदबुदाते रहे...। अंततः उसने कहा, ''हे परमेश्वर, आज की रात से मैं तेरा हो गया हूँ.....।'' न जाने क्यों जोर्ज ने एक गहरी सांस

छोड़ी, ''परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनंत जीवन पाए।'' यूहन्ना 3:16। ''इस बहुमूल्य सच्चाई का कुछ अंश तो आज प्रभु ने मुझे सिखाया। प्रभु यीशु मसीह के क्रूस की मृत्यु..... गतसमनी के बाग में उसकी तीव्र वेदना..... इन सबका धर्म वैज्ञानिक कारण मैं जानता था। मैं यह भी जानता था कि मेरा दंड यीशु ने उठा लिया। अपने प्रति परमेश्वर के प्रेम के विषय में मैं जानता था। यह भी सिखाया गया था कि उस प्रेम का कुछ न कुछ बदला मैं चुकाउं.....। लेकिन अब प्रभु यीशु के प्रेम को मैनें चखकर जान लिया है। यीशु मेरा प्रभु और मुक्तिदाता बन गया है। नया जीवन जीने के लिये मुझ में एक शक्ति आ गयी है।''

3

''जोर्ज, मैने सोचा था कि आप जल्दी आएगें। आप तो जानते थे कि पिता जी सुबह ही चले जाएगें। जल्दी आते तो हम ज्यादा देर तक बातें कर सकते थे। अब देखो, पिताजी के आने का समय हो गया है....।'' एमिगर ने शिकायत की। नीली आखों वाली वह सुन्दर लडकी वागनर के कक्ष के आइने में देखकर अपनी सुन्दरता के प्रति आश्वस्त हुई। अपनी सुन्दर टोपी को देखकर अपनी झालर दार फ्राक को सम्भालते हुए जोर्ज की ओर आयी।

''अपने टोपी को सिर पर ही रखो.... तुम्हारा यह रुप परियों की याद दिलाता है।'' जोर्ज ने कहा।

''अच्छा, यह बताईये, आप ने देर क्यों किया?'' उसकी शिकायत समाप्त नहीं हुई थी।

''मैं तुमसे मिलने नहीं, श्रीमान् वागनर से मिलने आया हूँ।''

''जोर्ज, आप तो उनसे कल प्रार्थना सभा में मिले थे। फिर आज

क्यों मिलना है?'' एमी कुर्सी के सहारे खड़ी होती हुई बोली। उसके रंग बिरंगी परिधान देखकर जोर्ज को मेघ धनुष की याद हो आई।

''मैं कुछ मिश्नरी पुस्तिकायें वापस करने आया हूँ।'' जोर्ज ने कहा।

''मिशनरी पुस्तिकायें....। उसके लिये आए हो? जोर्ज, आप सच में एक असाधारण व्यक्ति हैं।''

''एमी, मैनें अपने जिन्दगी में कभी भी इतनी उत्तेजनात्मक बातें नहीं पढी....। सुनो.... हमारे इस युग में जो कुछ हो रहा है....उससे ऐसा लगता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक अपने को दोहरा रहा है। मैं इन बातों को पहले नहीं जानता था। मसीहियत एक फूल के समान है। फूल के बीज उसी मे रहतें हैं। अचानक हवा आती है उसके बीज छिटककर हवा में उड़ने लगता है। एक इधर....दूसरा उधर.....तीसरा इधर.... फिर उधर.....।''

''बस, बस, जोर्ज। ज्यादा इशारों की जरुरत नहीं है। देखो, अभी मेरी टोपी गिर जाती।'' एमी ने व्यंग किया। उत्तेजित होने के बाद जोर्ज इसी प्रकार होश खो देता है। लेकिन जोर्ज ने उसकी बातें नहीं सुनीं। उसने अपनी बात जारी रखी।

''एक हवा चली, बीज छिटक कर इधर-उधर जा पड़े। एक मनुष्य .....जोन विलियम ..... उन्होने पूर्वी समुद्र के पार की यात्रा की.....दूसरा मनुष्य, जोन वैसली अमेरिका जाने के लिये जहाज पर सवार हो गया.... विलियम कैरी, भारत की ओर.....।''

''पता नहीं, मैं किसी को नहीं जानती....। जोन वैसली.... हां सुना है.... लेकिन वह अपने लायक आदमी नहीं है....। लोगों का कहना है कि वे विवाह करने में और एक जगह स्थिर होकर रहने में विश्वास नहीं करते थे....। बस यात्रा ही यात्रा....।''

जोर्ज ने एमी की बातों पर ध्यान दिया। उसे लगा कि इन मोतियों को यहाँ बिखेरने से कोई लाभ नहीं है। यह लड़की एक महान व्यक्ति के मिश्नरी दर्शन की तुलना विवाह जैसी बात से कर रही है....।

इस लड़की से क्या कहूँ?

''एमी, सुनो पिछले नवम्बर से मेरा जीवन बदल गया है.... विशेषकर के जब से मैंने इन पुस्तिकाओं को पढा है....। एमी, मैं एक रहस्य की बात बताउं....।''

''आपका रहस्य है न। बताइये मैं किसी से नहीं कहूँगी।''

''एमी, मैनें परमेश्वर से कहा...., 'परमेश्वर, इस संसार के किसी भी कोने में आप मुझे सुसमाचार के साथ भेज सकते हैं।'' जोर्ज ने उसकी ओर देखा। खाली बर्तन के समान उसका चेहरा भाव शून्य था। लगता है इसे समझ में नहीं आया।

वह प्रार्थना सभा मे आने वाली लड़कियों में से सबसे सुंदर थी। जोर्ज ने पहली बार तब ध्यान दिया था जब सभा के समय उसकी नजरें जोर्ज से मिली थी। उसने सोचा था कि उसके निर्णय को सुनकर एमी उसकी प्रशंसा करेगी। इसलिये उसने फिर से कहा....। ''मैनें एक सुसमाचारक बनने का निर्णय लिया है...। जोर्ज ने उसकी ओर देखा लेकिन इस बार भी कोई भाव नहीं था।

''अच्छी बात है, जोर्ज। लगता है, पिताजी आ गये। मैं उस तरफ जा रहीं हूँ। उम्मीद है अगले शनिवार तक आपके पागलपन में थोड़ी बहुत कमी आ जायेगी....।''

कई शनिवार बीत गये। मिशनरी बनने की उसकी अभिलाषा बढ़ती गयी। हर शनिवार को एमी पूछती, ''जोर्ज, आपका पागलपन कम हुआ कि नहीं?''

उसके उतर में जोर्ज मुस्करा दिया करता। ऐसे ही एक शनिवार को वागनर के लाईब्ररी कक्ष में जोर्ज पुनः एमी से मिला। उसने एकांत में अपने हृदय को खोला.....। ''एमी, मैं तुम्हें अपना जीवन साथी बनाना चाहता हूँ....।''

''मैं भी यही चाहती हूँ जोर्ज....। किन्तु उससे पहले.....।''

''.....उससे पहले?''

''.....उससे पहले आप अपने इस मिशनरी भूत को खत्म कर दो.....।''

''यह तुम क्या रही हौं? यह तो मैनें परमेश्वर से प्रतिज्ञा किया है .....।'' एमी ने जोर्ज की ओर देखा। दोनों की नजरें मिली।

''जोर्ज, इसका मतलब, क्या आप अपने मिशनरी बनने के प्रति गम्भीर हैं?''

''हाँ एमी, मैं इस बात के प्रति बहुत गम्भीर हूँ.....।''

''तब तो जोर्ज मुझे लगता है कि मैं इस जिन्दगी के लायक नहीं.....।''

''एमी, यह तो बाद की बात है। हम एक साथ उसके लिये परिश्रम कर सकते है....।''

''नहीं जोर्ज, मैं ऐसी जिन्दगी नहीं चाहती.....।''

''क्यों, क्या तुम यह सोच रही हो कि पिताजी अनुमति देंगें या नहीं?''

''नहीं पिताजी की बात नहीं है। यह मेरा स्वंय का निर्णय है....। मैं ठहरी आड़म्बर पंसद लड़की....। मुझे कीमती वस्त्र पहनना अच्छा लगता है.....मुझे एक अच्छा घर और हर सुविधा चाहिये....शहर में घूमने के लिये मुझे एक गाड़ी चाहिये। इन सबके बिना मैं तो जीने की बात सोच भी नहीं सकती....। नहीं, मैं एक मिशनरी से विवाह नहीं कर सकती....।''

''लेकिन एमी, मैंने एक मिशनरी बनना तय कर लिया है। और मैं तुमसे विवाह भी करना चाहता हूँ।''

''जोर्ज, थोड़ा और व्यवहारिक होकर सोचो। आप एक सेमिनरी अध्यापक क्यों नहीं बन सकते या फिर एक धर्म वैज्ञानिक...। ये दोनों ही बुरा काम नहीं है।''

''एमी, तुम क्या कहना चाहती हो....? क्या यह कि मैं परमेश्वर

की बुलाहट को त्याग दूँ?''

''जोर्ज, मैनें ऐसा नहीं कहा.....। मेरे कहने का अर्थ यह है कि आप मुझसे शादी करना चाहते हैं तो इन दोनो में से एक को चुनना होगा....।

''दोनों में से एक.....।''

''हाँ, किसी एक का चुनाव करना होगा। या तो मुझे या तो मिश्नरी जीवन को। अच्छा, मैं चलती हूँ। बाय.....।''

हाथ हिलाते हुए वह बाहर चली गई....। जोर्ज किंकर्तव्यविमूढ़ बैठा रह गया.....।

मौसम एक एक करके बदलते गये.....। एक सर्दी की सुबह हरमन बौल जोर्ज मूलर से मिलने आए। हरमन के वस्त्र साफ सुथरे किन्तु सस्ते थे। वह धन का इस्तेमाल सोच समझकर करते थे.....। वह एक मिशनरी थे। पोलैंड में रहने वाले यहूदियों के बीच सेवा करने वाला जर्मन मिशनरी.....।

जोर्ज ने हरमन को पहली बार वागनर के घर की सभा में देखा था। उन्होनें पूर्वी जर्मनी के एक धनी परिवार में जन्म लिया था। इसके बावजूद पोलैंड के गरीब यहूदियों के मध्य सेवा करने का उनका चुनाव मूलर के लिये आश्चर्य का कारण था।

''.....आप दो नाव पर एक साथ सवार नहीं हो सकते, श्रीमान मूलर! एक तरफ गरीबी की मार से त्रस्त पोलैंड के यहूदी.....। हो सकता है वे मुझ विदेशी से घृणा भी करते हों। दूसरी तरफ सुख सुविधाओं से भरपूर जीवन और समृद्ध भोजन.....। उनके टूटे हुए घरों के दृश्य उसकी आखों के सामने घूमने लगा.....।

''तुम दो नावों पर एक साथ सवार नहीं हो सकते.....। तुम्हें चुनाव करना ही होगा...।'' हरमन की बातें उसके कानों में गूंजने लगी.....।

''कुछ भी हो, यह बहुत बड़ा त्याग है।'' वह बुदबुदाया।

''मूलर, यह कोई बड़ी बात नहीं है, परमेश्वर चाहता है कि मैं ऐसा करूँ। इसलिये मेरी संतुष्टि का एकमात्र मार्ग परमेश्वर की इच्छा को पूरी करना है। मैं इसमें किसी भी क्रकार का त्याग नहीं देखता हूँ.....। जबसे मैंनें पोलैंड के गरीब यहूदियों के बीच में रहना शुरु किया है.....मैं अधिक संतुष्ट हूँ।''

''फिर भी भाई हरमन, आपने एक समृद्ध जिन्दगी छोड़ दी....।''

''रहने दो जोर्ज, मुझे हीरो बनाने का प्रयास मत करो....। यदि परमेश्वर आपसे ऐसा कहेगा तो आप भी ऐसा ही करेगें। है न?''

''.....अब मुझे भी ऐसा ही लग रहा है....।'' जोर्ज ने कहा।

'सिंह गरजा, कौन न डरेगा? परमेश्वर यहोवा वोला, कौन भविष्यद्वाणी न करेगा?'

अगला शनिवार.....

जोर्ज, वागनर के घर में जल्दी पहुंच चुका था। एमी उसका इंतजार कर रही थी। ''आपका पागलपन कुछ कम हुआ कि नहीं?'' एमी ने पूछा।

''सुनो एमी।'' जोर्ज ने कहा। ''मैनें अपना निर्णय ले लिया है। अब निर्णय लेने की बारी तुम्हारी है। या तो एक लूथरन मिश्नरी की पत्नी बनने का निर्णय करो या फिर अपने अर्थशून्य जीवन को जारी रखो।''

''जोर्ज, इतना हठ किसलिये....? यह क्या.....एकदम बदल गये....।''

''हां परमेश्वर पर भरोसा रख कर मैं एक नया व्यक्ति बन गया हूँ।''

''यह कोई नया परमेश्वर है.....?'' एमी ने व्यंग किया। जोर्ज उसके कटाक्ष पर चुप रहा.....।

उसने दृढता के साथ पूछा। ''एमी, तुमने क्या निर्णय लिया?''

''मेरा निर्णय? मैने पहले ही कह दिया है...।'' बाहर की ओर

जाते हुए वह बोली। ''.....मैं एक मिशनरी से विवाह नहीं कर सकती।''

जोर्ज ने उसे जाते हुये देखा। उसने मन ही मन कहा। ''तब तुम जोर्ज मूलर से कभी शादी नहीं कर पाओगी। तुम एक का ही चुनाव कर सकते हो.....। अपने लिये परमेश्वर की इच्छा जान लेने के बाद और कोई भी बात हमें सतुंष्ट नहीं कर सकती.....।''

जोर्ज को ऐसा लगा मानों परमेश्वर उसके बेहद निकट है, और वह हाथ बढ़ाकर उसे स्पर्श कर सकता है.....।

4

''जोर्ज.....मेरे नहीं का अर्थ नहीं ही होता है.....।''

''ठीक है पर क्यों? कारण भी तो बताईये.....।''

''तुम्हारे लिये इतना जानना काफी है। मैं तुम्हारे इन कागजातों पर दस्तखत नहीं करूँगा....।''

''क्योंकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि आपके इन दस्तखतों से मुझे मिशनरी इस्टिटयूट में प्रवेश मिल जाएगा। बताइये यही बात हैं न!''

''हाँ.....।''

''लेकिन मैं एक मिशनरी क्यों नहीं बन सकता.....?''

''बस, मैनें नहीं कह दिया न.....।''

''लेकिन आप तो मुझे एक सुसमाचार प्रचारक बनाना चाहते

थे.....। इसलिये तो आपने मुझे सेमिनरी भेजा था.....।''

''हाँ,.....मैनें तुम्हें एक पादरी बनाने के लिये सेमिनरी भेजा था.....एक लूथरन पादरी, जिसे ग्रामीण मसीही जन आदर के साथ देखते हैं। .....क्रिसमस के समय में भरपूर उपहार प्राप्त करनेवाला.....तुम तो जानते हो कि लूथरन पास्टर को अच्छी तनख्वाह मिलती है..... .....उसे रहने के लिए अच्छे विशाल, बहुत कमरों वाले घर मिलते हैं.....?''

''इन सबके लिये आप मुझे पादरी बनाना चाहते हैं.....?''

''हाँ, इन सब के लिये.....अन्यथा तुम्हारे जैसा कोई मूर्ख ही इतना खर्च करके चार साल सेमिनरी की पढ़ाई करेगा।''

''लेकिन मिशनरी कोर्स एक विशेष कोर्स.....।''

''क्या विशेष.....?''

''ये मिशनरी किस लायक होते हैं? वे जंगली लोगों के साथ भूखे रह सकते है..... किन्तु अपने बूढ़े मां-बाप को एक पैसा भी नहीं दे सकते.....।''

''अच्छा तो ये बात है.....पादरी का काम अच्छा काम है और मिशनरी का कार्य निकृष्ट है.....। तो आप यह चाहते हैं कि मैं पादरी की नौकरी कर आपको सुखी जिंदगी दूं।'' क्रोध से अधिक दुखित होकर जोर्ज ने कहा।

''हाँ मैं यही चाहता हूँ.....और कौन तुमसे ऐसी मांग कर सकता है.....? किसने तुम्हे पहनने को वस्त्र दिये.....? किसने तुम्हारे पैरों में चप्पल पहनाए.....? हर माह तुम्हे फीस कौन देता है.....? तुम्हें जेब खर्च कौन देता है.....? किसने तुम्हे जेल में से छुड़ाने के लिए पैसे दिये थे.....? जोर्ज, तुम एक कृतघ्न लड़के हो.....केवल अपने बारे मे सोचते हो.....हूँ.....मिशनरी बनना है।'' जोर्ज के पिताजी जोर से अपने पैरों को पटकते हुए बाहर निकल गये।

जोर्ज किंकर्तब्यविमूढ़ खड़ा रह गया.....। अगले दिन सुबह वे फिर

से खाने की मेज पर मिले.....।

''जोर्ज, तुम एक पिता के दुःख को समझो.....एक बूढ़े पिता के सपनों को तुम इस प्रकार कुचल नहीं सकते हो.....।'' उनकी आंखो मे दीन भाव उभर आए।

''पापा, आपसे किसने कहा कि आप बूढ़े हो गये हैं?'' किन्तु पिता ने जोर्ज की बातों पर ध्यान नहीं दिया।

''मैं चाहता था कि मैं गर्व के साथ कहता-- वह देखो, मेरा बेटा जा रहा है.....। अब मैं क्या कहूँगा.....? क्या यह कि वह जो मिशनरी जा रहा है, वह मेरा बेटा है? मेरी बात मानो....। बाईबल भी तो अपने माँ-बाप की बात मानने को कहती है।''

पापा, वही बाईबल यह भी कहती है कि अपने माता पिता को छोड़कर मेरे पीछे चलो.....। आप क्या कहते हैं कि मैं करूँ.....?''

''क्या करना है.....? अपने सेमिनारी अध्ययन के दौरान ही किसी अच्छी कलीसिया मे प्रवेश करने का प्रयास करो.....विवाह करो.....एक अच्छे पास्टर निवास को हथिया लो..... वहाँ तुम लोग रह लेना.....इस बूढ़े पिता के लिये विशाल खिड़कियों वाला एक कमरा दे देना।''

''क्या आप यह चाहते हैं कि एक विशाल खिड़कियों वाले कमरे के लिये मैं परमेश्वर को 'न' कह दूँ.....?''

''क्या तुम्हारी आत्मिकता इसी में है कि अपने बूढ़े और बीमार पिता को एक रुपया भी न देकर तुम घूम घूम कर सुसमाचार प्रचार करते रहो.....।''

''जोर्ज आंखे फाड़कर अपने पिता को देखने लगा....। उसके पिता न तो बूढ़े हैं और न ही बीमार। उनके पास नौकरी है.....सम्पति है.....बैंक में पैसा भी है.....।''

''.....एक बूढ़े को हमेशा अपने सुरक्षित भविष्य की चिन्ता करनी पड़ती है.....यदि तुम मुझे नहीं देखोगे तो कौन देखेगा.....।''

उसके पिता बुड़बुड़ाते रहे।

''पिताजी, आपकी इन शिकायतों के लिये परमेश्वर आपको क्षमा करे.....लेकिन मैं परमेश्वर को दिये अपने वचन को पूरा करूँगा.....। मैं एक लूथरन पादरी नहीं बनूँगा..... सुसमाचार सुनने के लिये लोग मेरा इंतजार कर रहे हैं.....मुझे वहाँ जाना है।''

''लेकिन मेरे दस्तखत के बाद ही तुम्हें मिशनरी कोर्स में प्रवेश मिलेगा.....।''

''नहीं, आप दस्तखत मत करना। मैं अपने इसी अध्ययन को जारी रखूँगा और बहुत अच्छे अंको से पास होउंगा। लेकिन एक बात नोट कर लीजिये.....। मैनें तुम्हें पढ़ाया....बड़ा किया.....यह सब कहने का अवसर मैं आपको नही दूँगा। जब आप मुझे पढ़ाने के लिये पैसा खर्च करेगें तभी तो यह सब कह पायेंगें.....। विश्वविद्यालय की पढ़ाई के लिये मैं आपसे एक रुपये भी नहीं लूँगा।''

''जोर्ज तुम बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हो.....। तुम क्या कर सकते हो? जब तक मैं पैसा नहीं दूँ तुम्हारी पढ़ाई कैसे पूरी होगी? जिदंगी कैसे चलेगी?''

''पापा, अपने परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए मैं दृढ़ शब्दों में कहता हूँ.....आज से मैं न तो अपनी पढ़ाई के लिये और न ही अपनी जिंदगी के लिये आपसे एक पैसा भी लूँगा.....। जब तक मैं जीवित हूँ....।'' अपनी वापसी यात्रा में जोर्ज अपने संकल्प के विषय सोचता रहा....।

''अब मैं स्वतंत्र हो गया हूँ.....पूरे संसार में केवल एक व्यक्ति के प्रति मैं जबाबदेह हूँ। वह है सर्वशक्तिमान परमेश्वर....।''

जोर्ज को यह समझना कठिन हो रहा था कि कौन सी बात उसे अधिक आनंदित कर रही थी --- पिता के बन्धन से छुटकारा या सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अधीनता....। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह जेल के बन्धन से बाहर निकल आया हो।

लेकिन जोर्ज एक बात समझ गया कि अध्ययन को जारी रखने

के लिये उसके पास फीस देने के लिये पैसे नहीं है.... स्वतंत्रता का अनुभव करते हुए भी जॉर्ज फीस के विषय सोचे बिना नहीं रह सका.....।

एक सुबह जब जॉर्ज अपने हॉस्टल में नाश्ता कर रहा था। परमेश्वर की उपस्थिति का दबाब उसके सहने से बाहर हो गया.....। उसने नाश्ते का प्लेट हटाकर एक तरफ रख दिया और ठंडे फर्श पर घुटनों के बल खड़ा हो गया.....। अपनी कुहनियों को उसने कुर्सी पर टिका लिया।

''....हे परमेश्वर आप जानते हैं कि मैंने क्या किया है, उसका भविष्य क्या है..... औऱ उसका परिणाम क्या होगा.....। आप यह भी जानते हैं कि मेरी आवश्यकता क्या है? मुझे कमरे का किराया देना है.....खाने के लिये भोजन चाहिए.....पुस्तकें खरीदनी है..... कॉलेज का फीस देना है.....और इन सारी बातों के लिये मैनें आप पर भरोसा किया है....। आप अपने समय पर और अपने तरीके से मेरी आवश्यकताओं को पूरा करेंगें.....मैं इंतजार करूँगा। .....मैं धीरज पूर्वक इंतजार करूँगा.....।'' एक क्षण रुककर उसने अपनी बात को पूरा किया..... यदि यही तेरी इच्छा हो तो....यीशु के नाम से, आमीन।

दरवाजे पर किसी की आहट सुनकर वह घुटनों पर से उठा। नाश्ते के प्लेट को ढकने के बाद उसने दरवाजा खोला.....। उसके धर्मविज्ञान के प्रोफेसर डॉ. तोलक दरवाजे पर खड़े थे.....। उनके साथ एक अपरिचित व्यक्ति भी थे..... देखने से ही वे विदेशी लगते थे।

''मूलर, यह डॉक्टर होड्ज हैं। अमेरिका के प्रिस्टन विश्वविद्यालय से आ रहे हैं....।''

''आईये, अंदर आइये, सर.....।''

जॉर्ज ने कुर्सी पर बिखरी हुई किताबों को हटाकर उनके लिये बैठने की जगह तैयार किया.....।

''मूलर, हम सीधे मतलब की बात करते हैं.....। डॉक्टर होड्ज

जर्मनी में कुछ अनुसंधान कर रहें है। उन्हें बहुत जल्दी जर्मन भाषा सीखनी है.....। मैनें उनसे कहा कि अंग्रेजी और जर्मन भाषा जानने वाला एक विद्यार्थी हमारे यहाँ है....। वह आपको सिखाएगा....। अर्थात् अब से डॉक्टर होड्ज तुम्हारे विद्यार्थी हैं। ''प्रोफेसर तोलक ने कहा।

''जॉर्ज नम्रता के साथ कहने लगा। मेरी अंग्रेजी उतनी अच्छी नहीं है....। बस कामचलाउ हैं....।''

''कोई बात नहीं....। मुझे साहित्यिक भाषा नहीं सीखना है....।'' डॉक्टर होड्ज ने कहा।

''फिर भी इस सत्र में.....'' जॉर्ज ने ज्यादा उत्साह न दिखाते हुए कहा।

''मूलर, लगता है तुम्हें मेरी बात समझ में नहीं आयी। यह पक्का बिजनेस है....। वे तुम्हें ट्यूशन फीस देंगें.....।'' प्रोफेसर तोलक ने समझाया।

''साधारण फीस से दुगुना मैं दूँगा....हप्ते में आठ घण्टा ही आपको पढ़ाना होगा..... डॉक्टर होड्ज ने कहा।

मूलर, उन पैसो से तुम्हे कॉलेज फीस और हॉस्टल फीस का एक चौथाई प्राप्त होगा.....। तोलक की बातें जोर्ज के मन को छू गई.....क्या यह परमेश्वर का मार्ग तो नहीं है.....। वह सोचने लगा.....। ''लेकिन बाकी पैसा कहाँ से मिलेगा.....।''

''बाकी अन्य लोग देंगे.....अन्य लोग।'' जॉर्ज दरवाजे की ओर देखने लगा....। क्या वहाँ कोई खड़ा है? ''श्रीमान मूलर, मेरे तीन मित्रगण भी जर्मन भाषा सीखने आएगें.....। आप हमें एक साथ बिठाकर पढ़ाना । वे सब भी इसी प्रकार फीस देगें..... साधारण फीस का दुगुना।''

साधारण फीस का दुगुना ....चार व्यक्तियों का ट्यूशन.... अर्थात् एक साधारण ट्यूशन मास्टर से अधिक प्रतिफल.....वह भी मेरे फीस के बराबर.....एमी की बातें उसे स्मरण आई ..... निश्चय ही यह

विशेष प्रकार का परमेश्वर हैं.....। लौटते समय प्रोफेसर तोलक ने कहा, ''इन अमेरिकन लोगों के लिये धन कुछ मायने नहीं रखता। उनके पास बहुत धन हैं.....।''

''नहीं, आप गलत कह रहें है .....।'' जॉर्ज ने कहा।

''क्यों?''

''वह धन अमेरिका वालों के पास नहीं है।''

''फिर ?''

''मेरे परमेश्वर के पास है....। उसके पास बहुत धन है।''

5

''आपके अंदर एक सिसकने वाली आत्मा है। आप झूठ बोल रहे हैं, आप .....।'' जॉर्ज ने ऊँची आवाज में बोलने का प्रयास किया।

''उसे वहीं रहने दीजिये न, अब किया भी क्या जा सकता है। उसे सिसकने दीजिये।''

''नहीं, उसे छुटकारा चाहिये। इस बात पर विश्वास कीजिए कि प्रभु यीशु मसीह पापियों का उद्धार करने के लिए इस संसार में आया और .....।''

''अच्छा बाद में मिलेंगे.....।'' वह व्यक्त मूलर को स्तब्ध कर चलता बना।

''कहाँ पर गलती हुई है..... ?''

ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है। जॉर्ज को मानो प्रकाशन मिला। वह

जान गया कि यहाँ वह स्वयं प्रयास कर रहा था। परमेश्वर की आत्मा को कार्य करने नहीं दिया गया।

उनकी प्रचार सेवा बहुत जोश से भरी हुई थी। अध्ययन के बीच में भी वह जर्मनी के विभिन्न भागों में 200 से भी अधिक पर्चे हर माह वितरित किया करते थे। अपने पुराने मित्रों को उन्होंने पत्र लिखकर विनती की कि वे यीशु के सुसमाचार पर विश्वास करें। शाम को टहलने जाते समय भी उसकी जेबों में पर्चे भरे होते थे जिसे वह रास्ते में बाँटते जाते। वह बीमारों का कुशलक्षेम जानने लगातार उनके पास जाते। एक बीमार के पास 13 हफ्ते तक लगातार जाने के बाद जब उसने यीशु को स्वीकार किया तब जॉर्ज बहुत उत्साहित हुए, लेकिन तब भी वह पवित्रात्मा के कार्य और परमेश्वर की सार्वभौमिकता के बारे में अनजान थे और अब पवित्रात्मा उन्हे नये सत्य की ओर ले जा रहा था।

''बिना पुत्र के कोई पिता की ओर आकर्षित नहीं होता। पवित्रात्मा आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा।''

''तो यह बात है। अभी तक मैं स्वयं ही यह कार्य कर रहा था लेकिन यह तो पवित्रात्मा का कार्य है।''

जॉर्ज ने परमेश्वर की सार्वभौमिकता और पवित्रात्मा के कार्य पर आश्रित होना सीखा। अपने कर्तव्य को विश्वास योग्यता के साथ पूरा करना ही मेरा भाग है। फल देना ईश्वर का भाग है। केवल ईश्वर का कार्य।

जॉर्ज ने अपना कार्य जारी रखा। पर्चे बाँटना, बीमारो की सेवा करना, व्यक्तिगत रूप से सुसमाचार सुनाना, पत्र लिखकर वचन देना आदि उसकी सेवा में शामिल थे। किन्तु परमेश्वर की सार्वभौमिकता के नये दर्शन के साथ। परमेश्वर ने उसे इस्तेमाल किया कि कॉलेज के सहपाठियों के मध्य वह एक प्रार्थना समूह स्थापित कर सकें।

एक दिन एक स्कूल शिक्षक जॉर्ज से मिलने पहुँचे। ''श्रीमान्

मूलर, क्या आप एक दिन हमारी कलीसिया में प्रचार करेंगे? हमारे बुजुर्ग पादरी के लिए यह एक सांत्वनादायक बात होगी।''

कुछ लोगों को सुसमाचार सुनाने के अलावा जॉर्ज ने चर्च में प्रचार के विषय में कभी सोचा भी नहीं था। फिर भी उन्होने एक बार प्रयास करने का निर्णय लिया।

सेमिनरी के वाचनालय में बैठ कर उन्होने एक संदेश तैयार किया। कई महान भक्तों के संदेशों को पड़ा। पूरा संदेश लिखकर उन्होने कंठस्थ कर लिया। 27 अगस्त 1926 को वह सेमिनरी के पास वाली ग्रामीण कलीसिया की ओर निकल पड़े। यात्रा से ठीक पहले एक बार पुनः अपने संदेश को दुहराना वह नहीं भूले।

दिन के 11 बजे थे। कलीसिया के पादरी वेदी के पास वाली कुर्सी पर बैठे थे। कलीसियाई जनों की दृष्टि में उदासीनता झलक रही थी। जॉर्ज पुलपिट की ओर बढ़ने लगे।

''परमेश्वर हमें विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराता है ..... जॉर्ज ने प्रचार करना आरंभ किया। उसके संदेश में अगस्तीन, लूथर, कैल्विन जैसे महान भक्त लोग जीवित हो उठे। जो कुछ उन्होने याद किया था वह सब बिना किसी गलती के लोगों के सामने उगल दिया।

जब तक प्रचार समाप्त नहीं हुआ, जॉर्ज की नजरें भवन के दीवारों पर टिकी रहीं। अंत में उन्होने पादरी की ओर देखा। उनका मुंह अधखुला था। वे गहरी नींद में पहुँच चुके थे। कलीसिया के लोगों की आँखों में अब भी उदासीनता थी। जॉर्ज अपने स्थान पर वापस बैठ गये।

दोपहर के बाद इस कलीसिया में एक और आराधना होती थी। विशेष कर उन लोगों के लिए जो सुबह की आराधना में शामिल नहीं हो पाते थे किन्तु पिछले 48 वर्षो के दौरान इस सभा में लिखित संदेश के अलावा कुछ भी नहीं पढ़ा गया था। जब जॉर्ज ने यह सुना तब उन्होने कहा कि वह पुनः सुबह का संदेश प्रचार कर सकते है।

संदेश का समय आ पहुँचा। जॉर्ज एक बार फिर अपने संदेश

को याद करने लगे। विश्वास के द्वारा धार्मिकता.....।

पुलपिट पर पहुँचते ही उन्होने कहा, ''हम मत्ती ५ वाँ अध्याय पढ़ेंगे।''

जॉर्ज को अपने शब्दों पर आश्चर्य हुआ। यह मैं क्या कह रहा हूँ? यह तो मेरे संदेश का भाग नहीं है। अब क्या करें? कोई बात नहीं। धीरे-धीरे मैं अपने संदेश में लौट आऊँगा।

वह बाइबल खोलकर पढ़ने लगे। धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं क्योंकि वे स्वर्ग के राज्य के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे सांत्वना पाएंगे....।

वह एक एक पद की व्याख्या करने लगे। उन्हे लगा मानो परमेश्वर उनके होठों से होकर बोल रहा है। उपस्थित लोगों में हलचल होने लगी। उनके आंखों की उदासीनता छंटने लगी। धर्म विज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें कहीं दूर रह गई। सुनने वालों में वचन गहराई तक जाने लगा। मूलर के चेहरे पर संतुष्टि के भाव उभर आये।

आराधना के पश्चात् जॉर्ज ने तुरंत ही वापसी की राह पकड़ी। शायद वह बुजुर्ग पादरी की उनींदी आंखों का सामना करना नहीं चाहते थे।

हॉले विश्वविद्यालय के चारों ओर की कलीसियाओं में वह अकसर जाने लगे। वह लगातार इन कलीसियाओं में प्रचार करने लगे। इस सेवा में उन्हे आनंद आने लगा। साथ ही साथ वह परमेश्वर से प्रार्थना करते रहे कि वह उसे उसका कार्यक्षेत्र दर्शायें। एक बार उनके शिक्षक डॉ. तोलक ने उनसे कहा कि वह बुकारस्ट में मिशनरी बन कर जाए। उसने मान भी लिया था। किन्तु तुर्की और रूस के मध्य युद्ध छिड़ने के कारण कॉन्टिनेन्टल सोसायटी ने यह योजना निरस्त कर दी थी।

उन्ही दिनों हॉले शहर में कैदियों के लिए एक सरकारी कर्मशाला प्रारंभ की गई। छोटे मोटे अपराधी वहाँ काम करते थे। जॉर्ज ने इनका पासबान बनने का आवेदन भेजा। उन्हे वहाँ नियुक्ति भी मिली।

रविवार को दोनों पहर और अन्य दिनों में एक दो बार उसे प्रचार का अवसर मिलने लगा।

उनके मध्य सेवा करने की कुछ योग्यताएँ मेरे पास भी है। एक तो यही है कि मै भी जेल में रहा हूँ। इसीलिये उन दीन लोगों के साथ मै सहानुभूति रख सका। उन्होने साक्षी दी कि मेरी सी सरलता उन्होंने किसी के भी व्यवहार में नहीं देखा है। जॉर्ज ने अपनी डायरी में नोट किया।

अध्ययन, जेल की नौकरी, कलीसियाओं मे सेवा, पर्चा वितरण.... इस प्रकार काम बहुत होने के बावजूद जॉर्ज को लगता था कि उसकी कर्मभूमि कही और है। किसी और स्थान को परमेश्वर ने उसके लिये तैयार किया है। उन्ही दिनों एक दिन सुबह डॉ. तोलक उनके पास आये।

''जॉर्ज, मुझे लगता है कि लंदन शहर को तुम्हारी आवश्यक्ता है।'' बातचीत के मध्य में उन्होने कहा।

''लंदन मे मै क्या करुँगा? मैं तो एक जर्मन युवक हूँ।'' जॉर्ज ने कहा।

''जॉर्ज, तुम लंदन के विषय में क्या जानते हो?''

''बस, मैंने किताबों में पढ़ा है। अपने रहवासियों को अधपेट भोजन देने वाले अनाथालय, गुलामों से काम करवाने वाले कारखाने, गंदगी से भरी हुई गलियाँ, गरीबी और....।''

''जॉर्ज, लंदन का मतलब यही नहीं है। तुमने लंदन सोसायटी के बारें में सुना होगा। वे यहूदियों के बीच मिशनरियों को भेजते हैं। पोलैंड और जर्मनी के समान लंदन में भी बहुत यहूदी हैं.....। क्या तुम उनके मध्य नहीं जा सकते?''

जॉर्ज को गहरा आश्चर्य हुआ। हरमन बौल ने जबसे यहूदियों के मध्य की सेवा के विषय में बताया था तब से यहूदियों के मध्य सेवा का बोझ सा महसूस हो रहा था। उसी दिन से वह इब्रानी भाषा भी सीखने लगे थे। पिछले दिनों ही जब हरमन का पत्र मिला था कि

स्वास्थगत कारणों से वह अपनी सेवा को विराम देना चाहते हैं, तब ही से इस विषय में गंभीरतापूर्वक विचार करते रहें थे। क्या, परमेश्वर बात कर रहा है। फिर भी, क्या परमेश्वर इतनी जल्दी बात करेगा?

''तुम ही सोचो, जॉर्ज।'' डॉ. तोलक ने कहा। ''यहूदियों के मध्य सेवा का जो वर्णन हरमन ने किया वह तुम्हे इतना अधिक प्रभावित किया कि तुम उस लड़की को छोड़ने के लिए भी तैयार हो गये जिसे तुम चाहते थे। तुमने स्वेच्छा से इब्रानी भाषा सीखा। तुम अंग्रेजी भाषा भी जानते हो। यहाँ तक कि अमेरिकन प्रोफसर को तुमने अंग्रेजी भाषा में पढ़ाया। तुम्हारे बुकारस्ट की यात्रा में भी व्यवधान हुआ। यह परमेश्वर के मार्ग हैं।''

''हाँ, यह परमेश्वर के मार्ग हैं।''

''हाँ, यह परमेश्वर के मार्ग ही हैं।'' अगले अप्रैल में तुम्हारी कक्षाएं भी समाप्त हो रही हैं।

उसी दिन जॉर्ज ने लंदन मिशन सोसायटी को आवेदन भेजा। डॉ. तोलक जर्मनी में उनके एजेंट थे। उन्होने जॉर्ज के लिए सिफारिशी पत्र भेजा। यह 1827 दिसंबर की बात थी।

जॉर्ज का विचार था कि लंदन मिशन एक सफताह के भीतर ही उन्हे बुलवा भेजेगा। लेकिन दिन बीतते गये। सफताह और महीने गुजरते रहे। आखिर 1828 मार्च महीने के मध्य में डॉ. तोलक जॉर्ज से मिले।

''मुझे लंदन से पत्र मिला है।''

''उन्होने क्या लिखा है? मुझे कब जाना है? मुझे कब ज्वाइनिंग देनी है?'' जॉर्ज अपनी उत्सुकता नहीं रोक पा रहे थे।

''जॉर्ज उन्होने एक बंडल कागज भेजा है। वे तुम्हारे विषय में अधिक जानना चाहते हैं. यह सब तुम्हे ही भरकर भेजना है। उसके बाद ही वे तुम्हारे विषय में विचार करेंगें। मैंने सबकुछ लिखा दिया था किन्तु वे तुम से ही पूरा विवरण चाहते हैं।'' उन्होने वे कागज जॉर्ज को दिये।

''ये ब्रिटिश अफसर भी कैसे से लोग हैं? जब परमेश्वर ने मुझे बुलाया है तब इस बात को मानने में उन्हे इतनी मुश्किल क्यों है? परमेश्वर की बुलाहट से महत्वपूर्ण और क्या बात हो सकती है?''

जॉर्ज को दुःख और क्रोध भी आया। फिर भी उन्होने समय निकालकर वह सब भरकर लंदन सोसायटी को भेज दिया।

फिर इंतजार। मार्च निकल गया। अप्रैल के बाद मई भी निकल गया। इस बीच हॉले विश्वविद्यालय का अध्ययन भी पूरा हो गया।

जून के मध्य मे लंदन से पत्र मिला। उन्हे लंदन पहुंचकर छः महीने प्रशिक्षण लेना है। उसके पश्चात् ही वे उसे मिशनरी के रूप में नियुक्ति देंगे।

जॉर्ज को अत्यधिक क्रोध आया। उन कागजों को लेकर वह बेट्टा के पास पहुँचे।

''छः माह और प्रशिक्षण। मैं। अब क्या पढ़ूँगा? मैं एक डिग्रीधारी हूँ। दो साल से मै हिब्रू सीख रहा हूँ।'' जॉर्ज फट पड़ा।

''लेकिन वे तुम्हे कुछ विशेष तरीके सिखाना चाहते होंगें।'' बेट्टा ने सांत्वना देना चाहा।

''नहीं, सब बकवास है। उनमें मनुष्यत्व नहीं है। वे भी मेरे पापा के सामान हैं।''

अपने कमरे में वापस आकर जॉर्ज ने उन्हे पत्र लिखा।

''आपका पत्र मिला।'' वह क्रोध से लिखने लगे। ''धन्यवाद.... मैं पासपोर्ट मिलते ही रवाना हो जाऊँगा। मैं आपकी शर्तो को स्वीकार करता हूँ।''

6

''मुझे यहाँ लाने के लिये परमेश्वर ने कितनी अद्‌भुत रीति से कार्य किया....इन बातों को सुनने के बाद डायरेक्टर महोदय समझ जायेगें कि मैं परमेश्वर के द्वारा विशेष रुप से नियुक्त व्यक्ति हूँ।'' इंग्लैण्ड की ओर जाने वाली जहाज में बैठकर मूलर ने सोचा.....।

तब वे छः महीने के प्रशिक्षण की अवधि और बाकी सारे नियमों की बात भूल जायेगें और फिर वह कहेंगें....। 'जॉर्ज, हमें खेद है कि हमने आपको परेशान किया.....। आज आराम कीजिए। कल से कार्य शुरु करतें हैं.....।'

लंदन सोसायटी के आफिस में बैठकर जॉर्ज अपने जीवन में घटित उस उद्‌भुत घटना का वर्णन करने लगा.....। मिशनरी बनने के आवेदन देते समय ही पासपोर्ट के लिये भी आवेदन कर दिया गया था, किन्तु पासपोर्ट आफिस से उसे यह जबाब मिला कि एक वर्ष तक सेना में काम किये बिना वह देश नहीं छोड़ सकता....। यूं तो

विश्वविद्यालय की पढ़ाई से पहले ही उसे सेना में काम कर लेना था, किन्तु पढ़ाई के कारण ही वह अब तक सेना में काम नही कर सका था। पर अब उसके पास कोई बहाना नहीं था। जॉर्ज परेशान हो गया। सैन्य अधिकारियों को उसने लिखा कि वह मिश्नरी बनने जा रहा है, इसलिये उसे सेना के कार्य से मुक्त रखा जाये.....। किन्तु उसे यह जबाब मिला कि वह देश की सेवा के बाद ही मिशनरी सेवा करे। परिस्थितियों का वर्णन करते हुए जॉर्ज ने सीधे राजा के पास पत्र लिखा.....। शाही दफ्तर से उसे जबाब मिला कि राजा देश के नियमों मे हस्तक्षेप करने के इच्छुक नहीं हैं।

बर्लिन मे रहने वाले उसके कुछ दोस्तों ने उच्च न्यायलय मे अपील करने का प्रयास किया किन्तु वे सफल नहीं हुए। अंत मे जॉर्ज सेना की नौकरी करने के लिये मजबूर हूआ।

इसके बाद एक अद्‌भुत घटना हुई। चिकित्सकीय परीक्षण मे यह बात सामने आई कि जॉर्ज सैनिक सेवा के लिये अयोग्य है। उसके अंदर क्षय रोग की संम्भावना पाई गयी। तीन साल पहले उसे पूर्ण रूप से योग्य और स्वस्थ बताया गया था लेकिन अब उसे क्षय रोग ग्रस्त बताया जा रहा था।

''इसलिये मैंने कहा कि परमेश्वर ने मुझे विशेष नियुक्ति दी है....। कब से अपना कार्य प्रारम्भ करूं?'' जॉर्ज मिशन डायरेक्टर की ओर देखने लगा किन्तु उन्होनें जॉर्ज की ओर नहीं देखा.....।

''आप स्नातक हैं?''

जॉर्ज ने कहा, ''जी हाँ.....।''

''और.....आपने यूनानी भाषा सीखा है.....?''

''हाँ, बिल्कुल। डिविनिटी की पढ़ाई से पहले बल्कि बीस वर्ष की उम्र से पहले मैने यूनानी साहित्य की किताबें पढ़ डाली थी, केवल शौक के लिये....।''

''अच्छी बात है मूलर, आपने असाधारण विद्वता दिखाई है....।''

''विश्वविद्यालय मे आपने कितने घंटे पढ़ाई की है?''

''वह....मैने विश्वविद्यालय मे नहीं पढ़ा है, बस भाषा से लगाव के कारण स्वयं ही किताबों से सीखा हैं।''

''.....ठीक है मूलर, क्या आप आरामिक भाषा जानते हैं।''

''.....जी ?''

''आरामिक नहीं जानते? कोई बात नहीं।''

''क्या आप रब्बूनि अक्षर माला जानते हैं?''

''.....नहीं सर.....!''

''लेकिन, आप ऐसी बातें क्यों कर रहें है?''

''मुझे परमेश्वर की बुलाहट मिली है.....। पिकाडली स्क्वयर मे रहने वाले यहूदियों से यह कहने के लिये कि परमेश्वर उन्हे प्रेम करता है मुझे रब्बूनि भाषा जानने की जरुरत नहीं है.....। मैं उन्हें सुसमाचार के पर्चे दूँगा और बताउँगा कि परमेश्वर ने मेरे लिये क्या क्या किया है.....।

निर्देशक ने जोर्ज को अधिक बोलने का अवसर न दिया।

''श्रीमान मूलर, इधर ध्यान दीजिये.....। यदि आप परिश्रम करेगें तो छः महिने में हिब्रू भाषा अच्छी तरह सीख लेंगे। उसके बाद.....।''

''सर, यही शुभ दिन है। मैं सीधे ही.....।''

''सुनिये श्रीमान मूलर, उसके बाद तुरंत ही आप पुराने नियम के जर्मन यहूदी अनुवाद को उसके मूल रब्बूनिक भाषा में पढ़ पाएंगें। उसके बाद आप सीधे सेवा में उतर सकते है..... ठीक है अब आप जा सकते है .....कल से ही पढ़ाई शुरू कर लीजिए।

''क्या हो गया श्रीमान मूलर आप मुझे आंख फाड़कर क्यों देख रहें हैं?''

''नहीं, कुछ नहीं, अभी आप मेरे पिता के समान लग रहे हैं.....।''

दिन में १२ घंटे की पढ़ाई.....उस सस्ते होटल के बंद कमरे में अक्षर माला और व्याकरण शास्त्र की किताबों के साथ उनका दम घुटने लगा। अरामी भाषा, इब्रानी भाषा और रब्बूनिक भाषा में लिखना.....।

आधी रात गये तक वह पढ़ाई करते .....किन्तु सुबह होने पर वह सब कुछ भूल जाते.....। सिर चकराने लगा.....। पीठ दर्द उसका साथी बन गया....। अंत में वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया.....

अस्पताल में उसे खून चढ़ाना पड़ा.....। कई कड़वी दवाईयाँ उसे पीनी पड़ी किन्तु बीमारी में कोई कमी नहीं आई.....। अंत में डॉक्टर ने उसे सलाह दी। ''श्रीमान मूलर, अब एक ही रास्ता बचा है....। सबसे अच्छी दवाई जो कोई भी डॉक्टर दे सकता है.....। बस आपको कुछ ताजी समुदी हवा की आवश्यकता है....। जितनी जल्दी हो सके इस जगह को छोड़कर समुद के किनारे जाकर रहने का प्रबंध कीजिए।''

''लेकिन डॉक्टर, मेरी पढ़ाई.....इब्रानी, अरामी, रब्बूनिक भाषा.....।''

''जिन्दा बचोगे तभी तो पढ़ाई करोगे.....। जितनी जल्दी सम्भव हो, इस जगह को छोड़ दो.....। मैं लिखकर दे देता हैं.....। सोसाइटी वाले आपको किसी समुद्री भूभाग में भेज देंगें।

1829 के मध्य में जॉर्ज मूलर लंदन शहर को छोड़कर इंग्लैण्ड के पश्चिमी भाग के टेन माउथ गाँव में पहुँचे.....। उस अनजान गाँव मे समुद्री लहरों की गूंज उसके अकेलेपन को और गहराने लगी.....। वह सोचने लगा, सुसमाचार सुनाने के लिये परमेश्वर की बुलाहट सुनकर इतनी दूर आया था लेकिन सोसाइटी वालों ने नर्सरी के बच्चे के समान अरामी, रब्बूनिक भाषा सीखने का काम दिया....। किसी न किसी तरीके से पढ़ने का निश्चय किया तब बीमार पड़ गया.....। टेन माउथ से उसने लंदन सोसाइटी वालों को लिखा

कि वे उसे इब्रानी भाषा की पढ़ाई से मुक्त कर दे किन्तु उन्होनें यह भी नहीं जताया कि उन्हें पत्र मिला है.....।

टेन माउथ की जिन्दगी में उसके अकेलेपन को समाप्त करने के लिये उसे एक मित्र मिला.....। हेनरी क्रेक। वह जॉर्ज का हमउम्र था और विश्वविद्यालय स्नातक था। पढ़ाई के दौरान ही उसने मन फिराया था.....। जॉर्ज के समान वह भी सुसमाचार प्रचार के लिए जोश से भरा हुआ था। उसका आचार व्यवहार उसके आत्म विश्वास को प्रगट करते थे। किन्तु हेनरी, जॉर्ज को एक जल्दबाज समझता था....। विपरीत स्वभाव होने के बाबजूद दोनों एक दूसरे के काफी निकट आ गये । .....वे घनिष्ट मित्र बन गये। वे वैचारिक मतभेद होने पर जोश के साथ वादविवाद करते थे फिर भी उन्होने एक दूसरे को आदर और प्यार देना नहीं भूला।

स्कॉटलैण्ड निवासी हेनरी इस योजना के साथ टेन माउथ पहुँचा था कि वह एन्टनी नोरिस ग्रोव्स के साथ मिलकर काम करेगे...। जॉर्ज ने इंग्लैण्ड में ही उनका नाम सुना था, किन्तु हेनरी से जॉर्ज ने उनके विषय में ज्यादा जानकारी प्राप्त की।

ग्रोव्स ने जो 'मसीही समर्पण' नामक पर्चा लिखा था, उससे जॉर्ज बहुत प्रभावित हुए... ....ग्रोव्स का कहना था कि यीशु के शब्दों का अक्षरशः पालन करने की आवश्यकता है। 'अपनी सम्पति बेचकर दान कर दो।' (लूका 12:33) 'अपने लिये पृथ्वी पर धन इकठ्ठा न करो.... परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो।' (मत्ती 6:19,20) ऐसे पदों को अक्षरशः पालन करने की आवश्यकता है...। ग्रोव्स की मान्यता थी कि प्रारम्भिक कलीसिया के समान आधुनिक कलीसिया को भी अपनी सम्पति बेचकर जरूरतमंदो मे बांटकर आदर्श बनने की आवश्यकता है.....। (प्रेरित 2:44,45) ग्रोव्स की कथनी और करनी मे अंतर नहीं था। ग्रोव्स एक दंत किा डॉक्टर था जो साल में डेढ़ हजार से अधिक पौण्ड कमाते था.... उन दिनों एक साधारण किसान की वार्षिक आमदनी 25 पौण्ड से ज्यादा नहीं होता था। शुरू मे वे अपनी कमाई का 10 प्रतिशत फिर 25 प्रतिशत

गरीबों को दिया करते थे। बाद में ''मेरा धन'' जैसी भावना उन्होनें छोड़ दी और अपने उपर बहुत थोड़ा सा धन खर्च करके बाकी वह जरूरमंद लोगों को देने लगे....। उसके बाद परमेश्वर की बुलाहट पाकर सब कुछ छोड़कर वे खाड़ी देशों में मिशनरी बनकर चले गये।

एन्टनी ग्रोव्स का जीवन और उपदेश ने जॉर्ज मूलर को बहुत प्रभावित किया। उन्होनें निश्यच किया कि एक वास्तविक मसीही के पास इतना समर्पण होना चाहिये कि वह अपना सब कुछ दूसरों के साथ बांट सके।

एक दास कैसे धनी, महान और संसार की दृष्टि मे आदर पाने की इच्छा कर सकता है.....? यह एक विरोधाभास है। विशेष करके तब, जब उसका स्वामी दरिद्र, असहाय और तिरस्कृत था। जॉर्ज ने अपनी डायरी मे लिखा - ''1825 नवम्बर मे मैने यीशु पर भरोसा रखना प्रारम्भ किया..... चार साल बाद इन सारी परेशानियों से गुजर कर 1829 जुलाई में परमेश्वर ने मुझे नया समर्पण का अनुभव दिया.....। अपना समय, सम्पति, सम्मान और स्वास्थ सब कुछ मैने यीशु के चरणों में समर्पित कर दिया.....। मैं अपने वजूद को परमेश्वर में ढूढ़ सका।

टेन माउथ पहुँचने के तुरंत बाद ही मूलर वहाँ के एबनेजर चैपल के पुनरारम्भ समारोह में भाग लिया..। हेनरी क्रेक भी उनके साथ थे। वहाँ की संगति से उन्हें काफी आशीषें मिली.....। जॉर्ज को वहाँ संदेश देने का अवसर भी मिला.....उनके संदेश का विषय था- एक मसीही और एक आनन्दित मसीही में अंतर.....।

समुद्र के किनारे बसे हुये उस मनोहर गांव में रहते हुये जॉर्ज का स्वास्थ पुनः लौटने लगा.....एक शाम समुद्र के रेतीले तट पर टहलते हुये हेनरी ने जॉर्ज से पूछा- ''जॉर्ज, तुम लंदन क्यों नहीं लौट जाते.....? लंदन सोसाइटी के अधिकारियों को नाराज करना तुम्हारे हित में नही है.... जितनी जल्दी हो, वहाँ जाकर अक्षर सीखो और अपने चुने हुये लोगों के पास जाने का यत्न करो.....।''

जॉर्ज के लौटने से मिशन के अधिकारियों को ज्यादा फर्क नहीं

पड़ा.....। हिब्रू भाषा की पढ़ाई से मुक्त करने के लिये जॉर्ज ने उन्हें जो पत्र लिखा था, उस पत्र के विषय में उनहोंनें कुछ नहीं कहा। जॉर्ज फिर से रब्बूनिक भाषा में यशा.५३ याद करने लगे.....। फिर से उनका सिर दर्द शुरु हो गया। उसके सपनों में बेंत लेकर उसकी पिटाई करने वाले पिताजी आने लगे....। किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि वह किसी व्यक्ति के सुसमाचार सुनाने की इच्छा को कुचल दे.....। जॉर्ज ने अपनी खिड़की को खोल दिया....। उन्होनें भटकी हुई भेड़ो को देखा.....। कुछ ट्रैक्ट्स उठाकर उन्होनें अपनी जेब में भर लिया.....फिर द्वार खोलकर गलियों मे निकल गये।

उसके बाद के हफ़्तों मे वह यहूदियों के बीच में सुसमाचार प्रचार मे लगे रहे....। वह यथासंभव बाजारों में पर्चे बांटा करते.....। गलियों मे जाकर वह लोगों से मित्रता करते और यीशु के बारे मे जानने के लिए अपने हॉस्टल आने का निमंत्रण देते.....। यहूदियों के कालोनी में वह सुसमाचार की सभाएं करने लगे.....। लगभग पचास यहूदी बच्चों ने सुसमाचार में रूचि दिखाई तब जॉर्ज ने उनके लिये एक सण्डे स्कूल प्रारम्भ किया। यह सब कुछ उन्होनें मिशन के अधिकारियों से सहमति लिये बिना ही किया था।

इस दौरन वह इब्रानी भाषा की कक्षाओं मे जाते रहे। पढाई और सेवकाई ने उन्हे फिर से बीमार कर दिया.....। क्रिसमस आने तक वह बहुत अधिक बीमार हो गये....। ठंड उनके सहने से बाहर हो गया.....। ठंड के कारण उनकी हड्डियों में भंयकर दर्द होने लगा.....। डॉक्टर की सलाह से और मिशन के अधिकारियों की अनुमति से वह एक बार फिर टेन माउथ जाने के लिये गाड़ी पर सवार हुए।

टेन माउथ के समुद्र तट पर बैठे हुए जॉर्ज को ऐसा लगा मानो गरजती हुई लहरें उनसे पूछ रही हों- ''.....कहाँ गये तुम्हारे वीर साहसी निर्णय.....? क्या हुआ उनका परिणाम.....? क्या वे भी इन लहरों के समान थी जो तट पर पहुँचकर बुलबुले भर रह जाती हैं..... केवल बुलबुले.....।''

किन्तु समुद्र ने जॉर्ज को कुछ और भी सिखाया.....। उस नीले

विशाल समुद्र को उसने नीले क्षितिज से एकाकार होते हुए देखा.....। उसे इच्छा हुई कि वह भी इस समुद्र के समान स्वतंत्र हो जाए....। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अलावा और किसी की अधीनता स्वीकार्य नहीं हो सकता.....। फिर एक शाम समुद्र तट की ठंडी रेत पर चलते हुये जॉर्ज ने हेनरी से कहा। ''.....मुझे नहीं लगता है कि मैं केवल यहूदियों के मध्य ही सेवा करूंगा.....।''

''क्या....?'' हेनरी उसकी बात को नहीं समझ पाया।

''.....मेरे लिये सब लोग बराबर हैं.....। इंग्लैण्ड में केवल यहूदी ही नहीं है....। हजारों अविश्वासी हैं....। नामधारी मसीही हैं....। यहूदियों के समान वे भी उस अच्छे चरवाहे को नहीं जानते.... मै उनके बीच मे भी यीशु के विषय में बताऊँगा।''

जॉर्ज ने हेनरी की तरफ देखा। वह शांत था किन्तु आंखे फाड़े जॉर्ज को देख रहा था।

''तुम इस प्रकार से मेरी तरफ क्यों देख रहे हो....। तुम शायद यह सोच रहे हो कि मैं अपने उत्तरदायित्व को पूरा नहीं कर रहा हूँ...।'' जॉर्ज ने कहा।

''हाँ....।'' हेनरी ने कहा। ''.....यहूदियो के बीच में सुसमाचार सुनाने के लिये ही लंदन सोसाइटी तुम्हें प्रशिक्षण दे रही हैं....। तुम शायद यह भूल गये हो।''

''नहीं हेनरी, मैं नहीं भूला हूँ....। आज ही मैं सोसाइटी को पत्र लिखूँगा कि परमेश्वर ने मुझे सब तरह के लोगों के बीच सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है। परमेश्वर जहाँ भी मुझे भेजेगा, मैं किसी भी माध्यम से किसी को भी सुसमाचार देने के लिए तैयार हूँ...।''

''जॉर्ज, मूर्खता मत करो....।''

''यह मूर्खता नहीं है.....। मैं लंदन सोसाइटी के मिशनरी के रुप मे काम करने को तैयार हूँ किन्तु मुझे क्या करना है, यह बताने की अनुमति मैं केवल अपने परमेश्वर को दूँगा। एक दास का, एक ही स्वामी.....। केवल मसीह ही मेरे स्वामी है।''

''जॉर्ज, वे लोग हमारी बात नही समझेगें। वे तुम्हें सहायता देना बन्द कर देगें....। इस अपरिचित देश में पर्याप्त धन के बिना तुम क्या कर पाओगे?''

''वे क्यों इतना कठोर बनतें हैं....? परमेश्वर की विशेष बुलाहट के कारण ही मैने यह निर्णय लिया है.....। वे लोग तो आत्मिक लोग हैं.....। वे अवश्य मेरी बात समझेगें। वे भी तो जानतें हैं कि मनुष्य से बढ़कर परमेश्वर की बात माननी चाहिये.....। यदि वे मेरी सहायता बन्द करना चाहते हैं तो उन्हें ऐसा करने दो....। विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान ही मै विश्वास से जीने का अभ्यास करने लगा था। आगे भी ऐसे जीना मेरे लिये मुश्किल नहीं हैं।''

जनवरी की ठंड उसे असहनीय लगने लगी। उसने अपने पिता को याद किया जो उसे मिशनरी प्रशिक्षण के लिए नहीं भेजना चाहते थे...। जॉर्ज ने अपना जेब टटोला। पाँच शिलिंग बाकी है....। इतने पैसे से एक पत्र भेजा जा सकता है....। उसने तुरंत ही अपना निर्णय लंदन सोसाइटी को लिख भेजा...।

इस बार मिशन सोसाइटी ने उसके पत्र का जबाब जल्दी ही दे दिया....। जनवरी 1830 के अंतिम सफ्ताह में जॉर्ज को सोसाइटी का पत्र मिला...।

''सोसाइटी, किसी भी व्यक्ति द्वारा पवित्र आत्मा की अगुवाई में लिए गये निर्णयों का आदर करती है। किन्तु सोसाइटी के निर्देशों की अवहेलना करने वाले किसी भी व्यक्ति को सोसाइटी अयोग्य करार दे सकती है। अतः लंदन मिशन सोसाइटी इस पत्र द्वारा आपको सूचित करती है कि आप एक प्रशिक्षु मिशनरी के रुप में आगे काम नहीं कर सकते हैं। किन्तु यदि आप अपने निर्णयों में परिवर्तन लाते हैं तो सोसाइटी की समिति अपने निर्णय पर पुनर्विचार कर सकती हैं।''

7

''ठीक है, मैं टेन माउथ में रहकर आपकी कलीसिया में पास्टर का काम करूंगा....। मैं आपको परमेश्वर के प्रकाशन के अनुसार वचन की सच्चाईयां सिखाऊंगा, लेकिन एक शर्त है....।'' जॉर्ज ने टेन माउथ के एब्नेजर चैपल के पुलपिट पर खड़े होकर अपने मछुवारे श्रोताओं से कहा।

वे लोग आपस मे एक दूसरे की ओर देखने लगे.....। मानो यह पूछ रहे हो कि उनका विदेशी चरवाहा कौन सा शर्त रख रहा है.....। लंदन मिशन सोसाइटी को पत्र लिखने के कुछ ही दिनों में जब उसे एबनेजर चैपल की ओर से पास्टर बनने का निमंत्रण मिला था तब उसे शंका हुई थी। ''.....क्या यह परमेश्वर की आवाज है?'' लेकिन एब्नेजर चर्च के लोगों ने एक साथ जब यह मांग रखी तब वह समझ गये कि यह परमेश्वर की आवाज है....।

फिर भी जॉर्ज ने कहा, ''मैं अपनी सेवा को सीमित करना नहीं

चाहता....। मैं हर उस जगह जाना चाहता हूँ जहाँ परमेश्वर मुझे भेजेगा....। लेकिन एक शर्त पर....।'' जॉर्ज ने फिर से कहा। ''मछुवारिन स्त्रियां उत्सुकता से उनकी ओर देखने लगीं। फिर वे अपने पतियों की ओर देखने लगीं। वे भी यह सुनने को उत्सुक थे कि उनके नये पास्टर की शर्त क्या है?

''मैं नहीं कह सकता कि मैं कब तक आप लोगों का पास्टर बना रहूँगा। जब मुझे जाना होगा तब आप लोगों को छोड़कर जाने का अधिकार मैं अपने पास सुरक्षित रखता हूँ।''

'वे मेरा संदेश पसंद करते हैं। सब लोग तो नहीं पर अधिकांश लोग.....।' उनके संदेश स्थापित परम्परा के विपरीत और असाधारण थें। जिन्हे उनका संदेश पसंद नहीं आया वे कलीसिया छोड़कर चले गये। अब जो हैं इस विदेशी चरवाहे की भेड़ बनने को तैयार हैं।

''जब तक परमेश्वर चाहता है कि मै यहाँ रहूँ, यहाँ रहकर आप लोगों की सेबा करूँगा। लेकिन जिस क्षण परमेश्वर मुझे जाने के लिये कहेगा मैं अपना बिस्तर बांध लूंगा। यही मेरी शर्त है.....।'' जॉर्ज ने कहा।

एक क्षण.....! लोगों की प्रतिक्रिया के लिए उसने कान लगाया। किन्तु किसी ने कुछ नही कहा। जॉर्ज मूलर ने आशीष वचन दिया। चैपल के बाहर पहुँचने पर उसने लोगों को फुसफुसाते सुना।

''आज या कल, ..हो सकता है परसों चले जाएं...। हाः...हाः...हाः मेरे पति भी ऐसा कहने लगेंगें तो मैं और बच्चे क्या करेगें?''

''लेकिन उनके तो बाल बच्चे नहीं हैं....एक बार शादी हो जाने दो, सब ठीक हो जाएगा....।'' उन मछुवारिन स्त्रियों ने अनुमान लगाया कि शादी के बाद जॉर्ज मूलर के सिद्धांत किस प्रकार बदल जाएंगे। किन्तु उन्हें यह मालूम नहीं था कि इस स्वतंत्रता के लिये उसने क्या कीमत चुकाया था। उन्हे अभी तक नही मालूम था कि कोई भी पत्नी उसके समर्पण में बाधक नही बन सकती थी। बेशक जॉर्ज को एक पत्नी की आवश्यकता थी लेकिन उसको नियंत्रित करने के लिये नही किन्तु उसका सहायक बनने के लिये।।

○ ○ ○

एक्सटर पहुँचकर तांगे पर बैठने के बाद जॉर्ज ने पता लिखा हुआ पर्ची ढूंढ़ा किन्तु वह कहीं गिर गया था। अब तक जॉर्ज डेवण प्रान्त का एक माने हुए प्रचारक बन चुके थे। टेन माउथ के एबनेजर चैपल के लोगों को इस बात से कोई समस्या नहीं थी कि उनका पास्टर भ्रमणकारी है। वे तो इतना भर चाहते थे कि परमेश्वर टेन माउथ छोड़ने के लिए मूलर से न कहे। टोप्शाम, शाल्डन, एक्समाउथ, लिब्सटन, विषप स्टिग्टन, चुग्ले, क्युलम्टन, न्युटन अम्बोट..... हर कहीं जॉर्ज प्रचारक के रुप में विख्यात हो चुके थे। अभी एक्सटर मे भी वे प्रचार के उद्धेश्य से आये है। मिस पगट्स के मित्र के घर में विश्राम करने के बाद रात्रि सभा मे भाग लेना। लेकिन मित्र का पता कहाँ है? जॉर्ज अपनी जेबों मे तलाशने लगे।

उनका नाम क्या है? हेल्स, हेक्स..... हाँ हेक्स ही है....। आगे की ओर झुककर जॉर्ज ने तांगे वाले से पूछा, ''हेक्स परिवार कहाँ रहता हैं?''

''इसी रास्ते सीधे जाने पर उनका घर आएगा। मैं आपको उनके घर तक पहुँचा दूँगा।'' तांगे वाले सज्जन ने कहा। उस बड़े घर को देखकर जॉर्ज के मन में अपरिचितत्व की भावना उत्पन्न हुई। एक नौकरानी बाहर की ओर झांककर भीतर कहीं खो गयी। जॉर्ज ने सोचा कि उसे यहाँ नहीं आना चाहिये था। कहीं धर्मशाला में ठहरना इससे अच्छा था। अन्दर से कुछ आवाजें पास आ रही थी। कुछ ही क्षणों में द्वार पर एक युवती प्रगट हुई। यही कोई 32-33 साल की होगी। जॉर्ज को देखकर उसके होंठों पर मुस्कान उभर आई मानो वे पहले से परिचित हों।

''श्रीमान मूलर?'' जॉर्ज ने हाँ मे सिर हिलाया।

''आईये, अंदर आईये। अपनी पेटी और कोट इधर दीजिये। हम आपका इंतजार कर रहें थे। मिस पगट्स ने पत्र में लिखा था....।''

''मिसेस हेक्स.....?'' जॉर्ज ने पूछा।

''अरे नहीं। अभी तक किसी अच्छे व्यक्ति की पत्नी बनने का सौभाग्य मुझे नहीं मिला है। मैं मेरी हूँ.....मिसेस हेक्स की तबियत ठीक नहीं है.....। मैं उनकी सेवा में हूँ। आप मुझे उनकी सहेली, सहायिका.....कुछ भी कह सकते हैं। अच्छा, बातें बाद में होंगीं। पहले आप नाश्ता करके आराम कर लीजिए। आपके संदेशो से हमें बहुत उम्मीद है.....।''

''कितनी उत्साही युवती है,'' जॉर्ज ने सोचा। पल भर में जॉर्ज के मन का एकाकीपन दूर हो गया। जल्द ही चाय आ गई। चाय की चुस्की लेते हुए वे बातें करने लगे। श्रीमती हेक्स के बारे में और उनके बोर्डिंग स्कूल के बारे में.....फिर उसके परिवार के बारे में.....। जॉर्ज उसकी बातों में खो गये।

''मेरा भाई भी एक मिशनरी हैं।'' उसने कहा। जॉर्ज को झटका सा लगा।

''मिशनरी! कहीं एन्टनी ग्रोव्स तो नहीं? जिन्होने मसीही समर्पण नामक लेख लिखा था.....। जो बिना किसी संस्था की सहायता के विदेशों मे सेवा के लिये निकले हैं.....।''

''हाँ, उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर को खाड़ी देशों मे उनकी आवश्यकता है। मेरी ग्रोव्स ने अपनी निगाहें उपर उठायी। ''..... हाँ, वे मेरे भाई हैं।''

''हे प्रभु, यह युवती एन्टनी ग्रोव्स की बहन है? एन्टनी ग्रोव्स जिसके 'मसीही समर्पण' नामक लेख ने मेरे विचारों एंव धारणाओं में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया।''

''एबनेजर चैपल में मेरी सालाना आय 55 पौण्ड है। एन्टनी ग्रोव्स की सालाना आय 15 हजार पौण्ड थी जब वे सबकुछ छोड़कर खाड़ी देश में मिशनरी बनकर गये थे। ऐसे महान व्यक्ति की बहन मेरे सामने बैठी है.....।''

''मैं आपके भाई का बहुत आदर करता हूँ।'' जॉर्ज मूलर इतना ही कह सके....। उस दिन आराधनालय की ओर जाते हुए उनके

मन में एमिगर का चित्र उभर आया। बहुत दिनों से वह उनके ख्यालों में नहीं थी। वह एमिगर और मेरी की तुलना करने लगे। एक तरफ एमिगर जो एक मिशनरी को अछूत मानती है तो दूसरी तरफ मेरी जो गर्व के साथ कहती है कि उसका एक भाई मिशनरी हैं।

वागनर का वह छोटा सा निजी कक्ष और एमिगर की व्यंग्य भरी हंसी को वह भुला नहीं पाये थे। जब वह संदेश देने के लिये खड़े हुए तब भी उनके होठों पर जर्मन भाषा ही आ रही थी। अंग्रेजी शब्दों के लिये उन्हे संघर्ष करना पड़ रहा था। उस दिन का उनका संदेश उनके सबसे अच्छे संदेशों मे से एक नहीं था।

फिर भी मिस्टर हेक्स और मिस मेरी ग्रोब्स जॉर्ज के पास पहुँचे। ''मिस्टर मूलर, आप वही प्रचार करते हैं जो बाईबल कहती हैं। हमें आपकी सहायता चाहिये। हो सके तो बीच बीच में आइयेगा.....।''

टेन माउथ वापस पहुँचने के बाद उन्होने पूरा विवरण हेनरी क्रेक से कह सुनाया।

''.....चमकती हुई बालू के समान निष्कंलक मन है उसका। सच में वह एक मिशनरी की बहन है.....।''

हेनरी के टेढ़े भौहों को देख कर जॉर्ज को लगा कि कुछ भी नहीं बोलना चाहिये था।

''.....जॉर्ज, क्या कहा, तुम फिर एक्सटर में प्रचार करने जाओगे?'' हेनरी ने पूछा।

''हाँ, मैने उनसे वादा किया है। ''सफ्ताह के बीच के दिनों की सभाओं का संचालन करने के लिये उनके पास कोई नहीं हैं।''

.....हेनरी यह सुनकर मुस्कुराया।

''तुम्हारी उम्र 25 साल.....वह कम से कम ३३ की तो होगी.....।''

''उम्र कोई बड़ी बात नहीं है। अच्छा जाने दो। चाहे कुछ भी वह एक निष्कंलक और समर्पण वाली युवती है।''

जॉर्ज के जीवन में और टेन माउथ की कलीसिया में कई बदलाव आने लगे। उनमे से एक था जॉर्ज का विश्वास के बपतिस्मा की ओर आकर्षित होना और उसे स्वीकार करना। हेनरी क्रेक पहले ही बपतिस्मा ले चुके थे। जॉर्ज अक्सर विश्वास के बपतिस्मा के विरुद्ध बातें किया करते थे। किन्तु 1830 के अप्रैल महीने में सीड माउथ में हुई सभा और उसके पश्चात् बपतिस्मा के विषय हुई बातचीत के बाद वह इस विषय में ज्यादा अध्ययन करने लगे। हेनरी क्रेक ने उन्हे बपतिस्मा दिया। एब्नेजर चैपल के अधिकतर लोगों ने जॉर्ज का अनुकरण कर बपतिस्मा स्वीकार किया।

अप्रैल के महीने में जॉर्ज ने अपनी कलीसिया की याजकीय परंपराओ के विरुद्ध बोला। परम्परागत रुप से यह माना जाता था कि प्रचार केवल पादरी ही कर सकते हैं किन्तु जॉर्ज मूलर ने कहा कि उनकी कलीसिया का कोई भी भाई दूसरों की आत्मिक उन्नति के लिये परमेश्वर के वचन से संदेश दे सकता है।

एक्सटर के चैपल में जॉर्ज मूलर ने कई बार प्रचार किया। मेरी ग्रोव्स का समर्पण जॉर्ज के लिये आश्चर्य की बात थी। जॉर्ज को यह बात समझ मे आ गई कि एक पुरुष के मन में एक स्त्री के प्रति प्रेम उत्पन्न होने के लिये उसकी खिलखिलाने वाली हंसी या मंहगे वस्त्र और उत्तेजित करने वाले सौंदर्य की आवश्यकता नही हैं। एक आत्मीय दृष्टि, एक आडम्बर रहित मन, इन सबसे भी एक पुरुष आकर्षित हो सकता हैं।

लेकिन विवाह के विषय मे सोचने से उलझन होती थी। उन्हे जर्मनी में बिताए हुये जेल की जिंदगी याद आई। वह सोचने लगे कि विवाह करने से वह जेल के बन्दी के समान तो नहीं हो जाएगा.....? उन्हे एक ही जगह पर रहना तो नही पड़ जाएगा.....। रोते बिलखते बच्चे..... अस्पताल..... घर की जरुरतें.....। यदि परमेश्वर किसी स्थान के लिये बुलाता है तो विवाहित होने के कारण हाँ कहना असम्भव तो नही हो जाएगा।

''नहीं.....। ऐसा कभी नहीं होगा....।'' मेरा विचार है कि यह

आपके लिये फंदा नहीं बनेगा बल्कि यह आपको उड़ने के लिये पंख देगा।''

7 अक्टूबर 1830 को जॉर्ज मूलर नामक जर्मन युवक का विवाह मेरी ग्रोव्स नामक ब्रिटिश युवती के साथ हुआ। विवाह समारोह बहुत ही साधारण था। निकट के मित्रों के साथ वे एक्सटर के संत डेविड चर्च पहुँचे। रेवरेन्ड जॉन अम्ब्रोड के नेतृत्व में विवाह सम्पन्न हुआ। मित्रों के साथ हेक्स परिवार उत्तरी हे के अपने बोर्डिंग स्कूल में पहुँचे।

उसके बाद सबके साथ प्रभु भोज की संगति। शाम को ही पति पत्नी ने टेन माउथ के लिये यात्रा प्रारंभ किया। अगले ही दिन से वे दोनों सुसमाचार की सेवा में जुट गये। यह फंदा है या पंख है....।

पहले ही दिन जॉर्ज ने ध्यान दिया। घर में कुछ बदलाव आ गया है ।....खिड़कियों, दरवाजों पर पर्दे नजर आने लगे हैं.....। सुबह की चाय भी नये कप मे मिली थी.....।

एक सफ्ताह बीत गया! एक शाम हेनरी क्रेक, जॉर्ज और मेरी के साथ चाय पी रहे थे। चारों ओर देखकर उन्होने कहा, हफ्ते भर में ही यहाँ कितना परिवर्तन आ गया है...।

जॉर्ज ने उनकी बातों को मजाक में नही लिया.....। ''आप ही कहिये, क्या अन्तर आया.....? अच्छा यह बात रहने दीजिये.....यह बताईये, इन परिवर्तनों के विषय आप क्या सोचते है? जॉर्ज ने अपने बदले हुये घर की ओर देखकर कहा.....।''

''यह तो मेरे सोचने से बढ़कर है.....। मेरी, तुमनें इसके पुरातन जिंदगी को बदलकर रख दिया.....। अद्‌भुत है.....।''

चाय के कप को होंठों से हटाकर मेज पर रखकर मेरी, जॉर्ज की ओर देखने लगी। यह सब इतना आसान नहीं था हेनरी....। पिछले एक सफ्ताह से मैं सफाई कर रही हूँ....। सब कुछ बिखरा हुआ पड़ा था।''

''ठहरो.....।'' जॉर्ज ने जोर से मेज पर हाथ मारा....। ''एक क्षण

रुककर मेरे प्रश्न का उत्तर दो। यह सब देखकर आपको कैसा लग रहा है हेनरी.....? ये चांदी के बर्तन और बहुमूल्य डिनर सेट.....। ये मखमल के कुशन....., मंहगे कालीन.....। सच बताईये, आपको कैसा लग रहा हैं?''

हेनरी समझ गया कि जॉर्ज गम्भीर है..... हेनरी ने मेरी की तरफ देखा जो घबराई हुई खड़ी थी.....। ''जॉर्ज मैं सोचता हूँ कि यह तुम्हारे जीवन और उपदेश के विपरीत है।'' उसने कहा।

''अच्छा.....।'' जॉर्ज ने कहा। ''यह हमारे प्रभु के जीवन और उपदेश के अनुसार है या नही? इस पृथ्वी पर जिसके पास सिर टिकाने के लिये भी जगह नहीं थी....उसके लिये यह घर आरामदायक होगा....?''

''हेनरी....।'' मेरी ने उसकी बात काटते हुये कहा। ''वे बर्तन मैने अपने घर से लाये हैं।'' उसकी आवाज शांत थी।

''और वह मंहगी सजावट की वस्तुएं?'' हेनरी ने उत्सुकतावश पूछा?

''वे भी और ये पर्दे भी। वे सब मैं अपने घर से लायी हूँ.....।''

''तुम इस पृथ्वी पर धन इकट्‌ठा नही करो जहां कीड़े और काई बिगाड़ते है...।'' जॉर्ज ने उनकी बातों को अनसुनी करते हुये कहा।

''जॉर्ज..।'' हेनरी ने उसकी बात को काटते हुये कहा, ''मुझे ये चीजें पसंद है....। मैं नही सोचता कि ये सब पसंद करने के कारण मैं नरक जाऊंगा.....। लेकिन क्या करूँ? मेरी पत्नी के पास ये सब चीजें दहेज में लाने के लिये नहीं थी। तुम्हारी पत्नी के पास ये सब चीजे थीं। अब तुम इन वस्तुओं को क्या करेगे? क्या तुम इन्हें वापस कर दोगे?'' जॉर्ज को लगा जैसे हेनरी उसके विचारों का मजाक उड़ा रहा हो।

''जॉर्ज, बताओ, मेरी अब इन वस्तुओं का क्या करेगी? क्या वह इन चीजों को वापस अपने घर छोड आये?''

''नहीं, इतना ही काफी नहीं है.....। उसे उन वस्तुओं को पूर्णतः छोड़ना होगा क्योंकि बाईबल ऐसा सिखाती हैं।''

''बाईबल! कहाँ?'' मेरी ने आश्चर्य व्यक्त किया।

''अपनी सम्पत्ति बेचकर दान कर दो (लूका 12:33)''

हेनरी अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए। ''जॉर्ज यह अक्षरशः पालन करने की बात नही हैं।''

''नहीं...। ऐसा ही है।'' जॉर्ज अपनी बात पर अडिग रहे।

''जॉर्ज, क्या आप चाहते हैं कि मैं चाँदी के इन बर्तनों को बेच दूँ?''

''केवल चाँदी के बर्तन ही नहीं..... बाकी सबकुछ भी.....।''

''जॉर्ज.....।'' हेनरी ने आंशका से जॉर्ज को पुकारा। ''तुम्हारी वार्षिक आमदनी 55 पौण्ड है। अर्थात एक महिने में 5 पौण्ड भी नहीं । यह चांदी के बर्तन बैंक में जमा धन के समान है। जरुरत के समय.....।''

''रुको, मैनें एक ऐसी युवती से विवाह किया हैं जो उस एन्टनी ग्रोव्स की बहन है जो एक नये पैसे की सहायता के बिना खाड़ी देश में सुसमाचार प्रचार के लिये गये हैं। उस एन्टनी ग्रोव्स से मैनें यह पाठ सीखा है। लेकिन अभी मेरे सामने ऐसी युवती खड़ी है जो अपनी सम्पत्ति को छोड़ना नहीं चाहती। सब कुछ बेचकर दान कर दो। यही परमेश्वर ने मुझसे कहा है।''

मेरी ने जॉर्ज की तरफ देखा। वह निःशब्द प्रार्थना कर रहे थे ....। ''हे परमेश्वर यह फंदा है या पंख है?''

मेरी बुदबुदाई, ''ठीक है जॉर्ज, जैसा आप कहेंगे वैसा ही होगा.....।''

एक शाम को टेन माउथ के समुद्र तट पर घूमते हुये जॉर्ज ने मेरी के हाथों को थाम लिया.....।

''तुम्हें मुझसे विरोध तो नहीं है?''

''.....विरोध! क्यों?''

''कही तुम यह तो नही डर रही हो कि मै अगला कदम क्या उठाउंगा...?''

''जॉर्ज, मैं भी परमेश्वर पर आसरा रखती हूँ....।''

''मेरी, तुम्हे जीवन साथी के रुप में पाना परमेश्वर का विशेष अनुग्रह है। विवाह करने से मैं डरता था लेकिन अब देखो तुमने मुझे इतनी स्वतंत्रता दी है कि मुझे कभी-कभी शक होता है कि मैं विवाहित हूँ कि नही.....।''

''जॉर्ज...।'' मेरी की आवाज गहरे प्रेम की अनुभूति के कारण कांप रही थी।

''मेरी.....।'' उसने प्यार से पुकारा। मुझे विश्वास है कि कुछ अच्छे दिन हमारी प्रतीक्षा कर रहे है। इसमें आरंभ में थोड़ा डर भी लग सकता है.....। मैनें एक नया निर्णय लिया है....। मैं बहुत दिन से कहना चाहता थौ.....।''

समुद्र की हवा सर्द हो चली थी। वह जॉर्ज से सटकर चलने लगी। अपने कंधो पर जॉर्ज का हाथ उसे रिश्ते की गर्मी का अहसास करा गई।

''ऐसा ही एक अनभव मुझे पहले भी हुआ है....। मैंने अपने पिता से कहा था कि अब मैं कभी उनसे पैसा नहीं लूंगा.....। अब यह निर्णय लेते हुये भी मैं खुद पक्षी के समान स्वतंत्र महसूस कर रहा हूँ.....। हां एक ऐसा पक्षी जो बहुत उपर नीले आसामान तक उड़ सकता है, जो पूरी तरह स्वतंत्र है.....।''

''अच्छी बात है,'' मेरी ने आगे की ओर बढ़ते हुए कहा। ''आपका नया निर्णय क्या है? परमेश्वर ने आपसे क्या करने के लिये कहा है?''

''मैने अपनी कलीसिया की बैठक का फीस को हटाने का निर्णय

कर लिया है।''

उन दिनों 'प्युरेन्ट' कलीसियाओं का अभिशाप था। कलीसिया में बैठने के लिये सदस्यों को फीस देनी पड़ती थी..... वेदी के पास की सीटों के लिये ज्यादा फीस और पीछे की सीटों के लिये कम फीस देनी पड़ती थी। इसलिये आगे की सीट पर केवल धनी लोग ही बैठते थे। उस कलीसिया के केनरली नामक वृद्ध को जॉर्ज ने याद किया जो पीछे बैठकर संदेशकर्ता के होठों को पढ़ने का प्रयास करते थे....। जॉर्ज ने माना कि यह मसीहियत की आत्मा के विपरीत हैं.....। एब्नेजर चैपल में ऐसा नहीं होना चाहिये....।

''मुझे नहीं लगता कि वे इस बात के लिये तैयार होंगें.....। वर्षों से वे इस परम्परा को मानते रहे हैं।''

''किन्तु मेरी, उन्हें यह छोड़ना ही होगा।''

''लेकिन जॉर्ज....।'' मेरी ने समझाना चाहा। ''कलीसिया की आमदनी का मुख्य जरिया यही है। उसी मे से वे आपको तनख्वाह देते हैं।''

''हाँ, इसलिये मैं कह रहा हूँ कि वे उसे छोड़ सकते हैं. प्युरेन्ट से ही मुझे तनख्वाह दी जाती है। तब मैं यह निर्णय कर सकता हूँ कि मुझे तनख्वाह चाहिए या नहीं।''

जॉर्ज चलते-चलते रुक गये। उन्होने एक दूसरे की ओर देखा....।

''मैं समझ गई जॉर्ज।'' मेरी ने शांत स्वर में कहा।

जॉर्ज पुनः उस अनुभूति मे खो गये। उन्हे ऐसा लगा मानों उनके पंख निकल आये हों।

अक्टूबर 1830 का अन्तिम सप्ताह! जॉर्ज मूलर और मेरी अपने निवास स्थान से एब्नेजर चैपल की ओर जा रहे थे। वह इतवार का दिन नहीं था। न ही कोई विषेश प्रार्थना सभा थी।

''कील ले लिये हो न मेरी.....?''

''हां मेरे पास है....। हथौड़ी?''

''.....मेरे कोट के जेब में है,'' चैपल की चाबी भी.....। उस रात समुद्र शांत था। चारों तरफ चन्द्रमा की ठंडी रोशनी फैली हुई थी। वे चैपल के सामने पहुँचे। उन्होने चैपल के द्वार को खोला।

''जॉर्ज, एक क्षण रुको। देखो ये तारे कितने सुन्दर लग रहें हैं.....।'' मेरी ने कहा।

''जॉर्ज, समझ गये कि मेरी अपने इस नये निर्णय के आने वाले परिणाम से व्याकुल नहीं है.....। अब भी वह प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव कर रही है।''

''हमारा आने वाला जीवन भी इसी प्रकार सुन्दर होगा.....।'' मेरी ने सहमति में सिर हिलाया।

''वह बॉक्स कहाँ है?'' उसने बॉक्स जॉर्ज के हाथों में दिया। बहुत जल्दी ही जॉर्ज ने उस बॉक्स को वहाँ स्थापित कर दिया। उसके उपर उन्होने हाथ से लिखा हुआ नोटिस भी लगा दिया। थोड़ा पीछे हटकर जॉर्ज ने हल्की रोशनी में उस नोटिस को पढ़ा....। आज से आपका पास्टर तनख्वाह नहीं लेगें....। अब जो भी उदारता के साथ इस बॉक्स में डाला जाएगा उसी से वह जियेगें.....। वह कभी भी किसी से धन की मांग नहीं करेगें। वह अपनी आवश्यकताओं के लिये केवल परमेश्वर से ही कहेंगें। जॉर्ज ने गहरी सांस ली....।

''अब कैसा लग रहा है जॉर्ज?'' मेरी ने पूछा।

''मै उड़ रहा हूँ।'' जॉर्ज ने कहा।

''मैं भी.....।'' मेरी ने उनकी बात का समर्थन किया।

चैपल बंद करके वे अपने घर की ओर लौटने लगे।

8

जॉर्ज मूलर! मेरी मूलर!!

विश्वास से जीने के लिये तनख्वाह लेने से इनकार कर ने वाले प्रभु के महान दास दासी....। दो हफ्ते बाद ही उनका उनका पर्स हल्का हो गया। उनके पास केवल आठ शिलिंग बचा था। बीच बीच में जॉर्ज बॉक्स को खोलकर देखते। प्युरेन्ट के न होने से लोगों को आराम तो हो गया था किन्तु वह पैसा बॉक्स में नहीं आया।

18 नवम्बर 1830

जॉर्ज और मेरी को लगा कि अब परमेश्वर से थोड़ा धन के लिए प्रार्थना करने का समय आ गया है....। दोनों ने अपने घुटने मोड़े....।

लगभग चार घंटे बीतने पर बिशप स्टिगटन में रहने वाली एक बहन उनसे मिलने आई । बातचीत के मध्य में उन्होनें जॉर्ज से पूछा,

''आपको किस बात के लिये धन की आवश्यकता है?''

''प्रिय बहिन।'' जॉर्ज ने उत्तर दिया, ''जब मैनें तनख्वाह लेना छोड दिया था तब मैंने परमेश्वर से वाचा बांधी थी कि भविष्य में मैं अपनी आवश्यकताएं केवल परमेश्वर से ही कहूँगा।''

''तब तो एक बात सुनिये, पास्टर साहब।'' उस स्त्री ने कहा। ''वह परमेश्वर जिससे आपने अपनी आवश्यकताएं कही थी उसने मुझसे कहा है कि मैं आपको कुछ धन दूँ।''

उस बहिन ने दो शिलिंग निकालकर जॉर्ज के हाथों मे रख दिये।'' जॉर्ज के आधे महिने के तनख्वाह के बराबर रकम.....।

1831 नया साल जॉर्ज और मेरी के जीवन में नया उत्साह एवं नयी उमंगे लेकर आया लेकिन तब भी उनका पर्स खाली था। जनवरी 6,7,8 जॉर्ज लगातार परमेश्वर के सामने अपनी आवश्यकताओं को लेकर जाता रहा किन्तु परमेश्वर मौन ही रहा।

18 जनवरी के शाम का समय। जॉर्ज अपने कमरे से बाहर निकले। एबनेजर चैपल पंहुच कर उन्होनें द्वार खोला। उन्होने दान की पेटी का निरीक्षण किया। वह खाली था.....। हे परमेश्वर, यदि ऐसा ही चलता रहा तो तुझ पर विश्वास करने वाले निराश हो जाएंगें। कुछ क्षण के लिये जॉर्ज अविश्वास के अंधकार में खो गया।

अपने घर वापस पहुँचने पर मूलर ने देखा कि एक बहिन उनका इंतजार कर रही थी। उन्होनें जॉर्ज को २ पौण्ड और ४ शिलिंग दिये।

जनवरी 10

जॉर्ज सुबह ही एब्नेजर चैपल पहुँच गये.....। विश्वास की पेटी में पांच पौण्ड का एक नोट.....। जॉर्ज को बडा आनन्द हुआ।

तुरंत ही किसी ने उनके मन में कहा, अब यह एक आदत बन गई हैं.....। एब्नेजर चैपल की पेटी खोलना एक आदत सी बन गई है। यह, मेरा भरोसा अब किस पर होता जा रहा है.... पहले मनुष्यों

पर.....अब इस निर्जीव पेटी में.....।

जॉर्ज के कदम बड़ी तेजी से डीकन के घर की तरफ बढ़ने लगे.....। दूर से ही उन्हें बुजुर्ग डीकन तोंसबरी की लाल टोपी दिखाई दे गई। जॉर्ज उनके पास पहुँचे। वे अपने मछली पकड़ने वाले जाल को सुधार रहे थे। जॉर्ज को देखकर उनकी आंखो में आश्चर्य के भाव उभर आये।

''क्या हुआ पास्टर साहब, आपने भी मछली पकड़ना शुरु कर दिया.....।''

''अरे नही में तो आपसे मिलने आया हूं.....।''

''क्या हुआ? कुछ विशेष बात!''

''मैं दान पेटी के विषय कहने के लिये आया हूं।'' डीकन ने अपने जालों को एक तरफ रख दिया। वे ध्यान से मूलर की तरफ देखने लगे।

''कोई बात नही, पास्टर मूलर। उस बॉक्स को हम कभी भी हटा सकते हैं। साल में ५५ पौण्ड.....उससे कुछ बढ़ा भी सकते हैं। .....इन दिनों मैं ध्यान दे रहा था। मेरी बहुत कमजोर हो गयी है। आप भी कुछ कमजोर लग रहें हैं.....। क्या पता? घर में चूल्हा जल भी रहा है या नहीं।

''हम परमेश्वर पर विश्वास करके एक साहसिक जीवन का प्रारंभ कर चुके हैं। इससे पहले हमने परमेश्वर के अद्‌भुत मार्गो को नहीं पहचाना था।'' जॉर्ज एक सांस में कह डाला।

''मेरी के कारण ही आप यह साहसी कारनामें कर पा रहें हैं।''

जॉर्ज सोचने लगे। क्या कहकर इस व्यक्ति को विश्वास जीवन की महत्ता समझाउं? उसने यहाँ तक सोचा कि यदि वह डीकन से नहीं मिलते तो कितना अच्छा होता.....

''परमेश्वर रोज हमारे जीवन में अपनी विश्वस्तता प्रगट कर रहा है। वह आज भी कार्य करता है। लेकिन डीकन, आप तो जानते

हीं है, मैं जीवन भर किसी से भी अपनी आवश्यकताएं नहीं कहूँगा। मैंने अपने परमेश्वर यह प्रतिज्ञा की है.....। लेकिन.....।''

''कोई बात नहीं, पास्टर मूलर, यदि छोटी-मोटी आवश्यकता हो तो घर में देखता हूँ।'' डीकन अपनी जगह से उठने लगे।

''डीकन.....।'' जॉर्ज ने जोर देकर पुकारा.....। ''मैं धन मांगने नहीं आया हूँ। मैं कुछ और कहने आया हूं.....। अब से मैं जाकर उस पेटी मे से धन नही निकालूंगा। सफ्ताह में एक बार आप उसमें से धन निकालकर दे सकतें है।'' मेरा आश्रय मनुष्यों मे या उस निर्जीव पेटी में नहीं है।''

बहुत देर तक डीकन तोन्सबरी अपना सिर झुकाए बैठे रहे.....। अन्ततः उन्होने जॉर्ज की तरफ देखा। ''.....ठीक है, सफ्ताह में एक बार मैं उस पेटी में जो कुछ भी होगा उसे निकालकर आपको सौप दूँगा।''

1831 जनवरी 24 आधी रात बीत चुकी थी। मेरी गहरी नींद में सो रही थी। उसे देखकर जॉर्ज सोचने लगे। क्या मेरा विश्वास मेरी प्रिय पत्नी को भूखा रखेगा? केवल परमेश्वर पर भरोसा रखने का मेरा निर्णय कहीं मेरा बचपना और गैर जिम्मेदारी से भरा हुआ तो नही है?'' जॉर्ज मेरी के पास पहुंचकर उसे जगाने लगे। ''मेरी, उठो....।'' मेरी घबराकर उठ बैठी। ''क्या हुआ जॉर्ज?''

''मेरी, उठो.....।'' जॉर्ज ने उसकी बात को अनसुनी करते हुये कहा। मेरी धीरे से उठकर बैठ गई। उसे कुछ समझ में नही आया....।

''मेरी, उठो, प्रार्थना करते हैं....।'' मेरी की नींद गायब हो गई। उसने उठकर अपनें बालों को सम्भालते हुये पूछा।'' .....क्या हुआ जॉर्ज कोई समस्या आ गई?

''नहीं, कोई समस्या नहीं है.....।'' दोनों पलंग के समीप ही घुटनों के बल बैठ गये।

''क्या परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में तुम्हें कुछ संदेह है?''

जॉर्ज का यह पूछना जायज है। दो हफ्ते बीत गये जबकि जॉर्ज ने यह निश्चय किया था कि अब वह स्वयं एबनेजर चैपल की पेटी को नहीं खोलेंगे। इस समय जॉर्ज के पास एक शिलिंग भी नहीं है.....। पहले का समय होता तो बीच बीच में जाकर उस बॉक्स मे देख आते किन्तु अब डीकन का इंतजार करने के अलावा कोई चारा नही है। पिछले सफ्ताह भी तोन्सबरी डीकन को उन्होनें पेटी खोलते देखा था.....। किन्तु अभी तक उन्होने वह धन नहीं सौपा हैं.....। अब तो जेब भी खाली हैं।''

''मेरी, मेरे साथ प्रार्थना करो.....।'' जॉर्ज ने मेरी के हाथ को अपने हाथ मे लिया और उससे कहा। फिर वे धीमी आवाज में प्रार्थना करने लगे।

''हे परमेश्वर, हम पूरी रीति से आपके हैं.....जो कुछ हमारा है वह सब आपका ही है....। हम इस प्रतिज्ञा को दृढ़ता से थामते हैं.....। हम कभी भी इस प्रतिज्ञा को नही छोड़ेगें....। यदि अपने पाप के कारण हमें आपसे उत्तर नहीं मिल रहा है तो कृपया हमें क्षमा करें .....। परमेश्वर, हमसें बातें कर और हमारी आवश्यकताओं को पूरा कर....।''

ठीक इसी समय तोन्सबरी अपने बिस्तर पर करवटें बदल रहे थे। आखिर परेशान होकर उन्होने बिस्तर छोड़ दिया और खिड़की के पास पड़े कुर्सी पर आकर बैठ गये।

''क्या हुआ?'' उनकी पत्नी जूलिया भी बिस्तर से उठकर उनके पास आ गई।

''कोई बात नहीं जुलिया।'' डीकन ने अपनी पत्नी को सांत्वना दी। ''नींद नहीं आ रही है। पास्टर मूलर और उनकी पत्नी आँखों के सामने घूम रहे हैं। यह धन यहाँ रखकर हमने अच्छा नहीं किया।''

''मैंने कितनी बार आपसे कहा था? आपने पास्टर से वायदा किया था कि आप हर सफ्ताह पेटी खोलकर उसमें का धन उनके घर पहुँचाएंगे।

''हाँ, किन्तु जूलिया मैं कैसे उस छोटी सी रकम को लेकर उनके पास जाउँगा? मेरे लिये ही नहीं बल्कि एबनेजर चैपल के हर व्यक्ति के लिये यह शर्म की बात है।'' अभी तीन हफ्ते बीत चुके हैं। इन तीन हफ्तों में एक पौण्ड आठ शिलिंग मिला है। कुछ भी हो मैं अब यह पैसा अपने हाथ में नहीं रखूंगा। सुबह होने दो।''

वे सोने का प्रयास करने लगे।

मूलर परिवार सुबह सुबह तोन्सबरी डीकन को अपने घर के सामने दखकर आश्चर्य से भर गये।

''ज्यादा नहीं है पास्टर मूलर, एक पौण्ड और थोड़ा चिल्हर.., सच पूछो तो मुझे यह लाने में शर्म आ रही थी।'' तोन्सबरी ने अपनी झिझक प्रकट की।

''डीकन, इसमें लज्जा की कोई बात नहीं है। यह परमेश्वर का धन है। प्रार्थना का उत्तर स्वीकार करते हुये मूलर का हृदय गीत गाने लगा।''

''पास्टर मूलर, यह तो बहुत अच्छा सबक है।'' यदि मुझे पहले ही पता होता कि ईश्वर के धन में शर्माने की आवश्यकता नहीं है तो मैं पहले ही यह धन लाकर दे देता।'' उन्होंने कहा।

''यह तो अच्छा ही हुआ। यदि आप पहले ही पहुँचा देते तो मैं परमेश्वर की विश्वास योग्यता के लिये उसकी महिमा इतनी अधिक नहीं कर पाता।'' जॉर्ज के जीवन में कई आश्चर्य कर्म होते रहे। उसी वर्ष अप्रैल के अन्त में जब उनके पास थोड़ा भी पैसा नहीं बचा तब एक दिन मेरी ने अपने हैण्डबैग में एक लिफाफा पाया जिसमें दो पौंड था। संभवतः ट्रेन में यात्रा करते समय विश्वासियों में से किसी ने उनके बैग में डाल दिया था।

जुलाई महीने में जॉर्ज के घर में एक मिशनरी मेहमान थे। अतिथि सत्कार के लिये उन के पास पैसे नहीं थे लेकिन एक अज्ञात व्यक्ति ने कुछ भोजन सामग्री किसी के हाथों उनके पास पहुँचा दिया।

नवम्बर की एक शाम। घर में खाने की वस्तुयें सब खत्म हो

चुकी थी। उन्होंने दरवाचे पर किसी के खटखटाने की आवाज सुनी। एक अपरिचित स्त्री एक टोकरी भरकर गरमागरम पाव रोटी लिये खड़ी थी। बाद में जॉर्ज को पता चला कि किसी ने उसे भ्रम में डाल दिया था कि मूलर परिवार भूखा हैं। कई बार इस प्रकार की झूठी खबरें भी मूलर के जीवन में परमेश्वर की विश्वास योग्यता को अनुभव करने का कारण बनी।

1931 के दिसम्बर माह में जॉर्ज ने उस वर्ष उन्हे मिले धन का हिसाब लगाया। एक सौ इकतीस पौण्ड। उनकी तनख्वाह से ढ़ाई गुना अधिक।

1832 फरवरी 18 शनिवार। उनके पेट में शायद कुछ आघात लगा था। जॉर्ज को उस दिन खून की उल्टियाँ हुई। एबनेजर चैपल के एक डीकन ने उनके पास संदेश भेजा। कल की आराधना के लिये क्या करें?

एबनेजर के चारों डीकन हर रविवार की सुबह चार पड़ोसी गाँवो में आराधना लेने जाते थे। वे यह पूछना चाह रहे थे कि क्या मूलर की बीमारी के कारण वे अपना कार्यक्रम रद्द कर यहीं रुक जायें? मूलर ने दूत से कहा कि एक घण्टे के अंदर वे उत्तर देंगे। प्रार्थना के दौरान परमेश्वर ने उन्हें पूर्ण चंगाई का आश्वासन दिया। मूलर ने उनसे कहा कि वे हमेशा की तरह ग्रामीण कलीसियाओं में चले जाएं। वे खुद एबनेजर चैपल की आराधना का संचालन कर लेंगे। उनके डॉक्टर मित्र ने उनको विशेष सलाह दी थी कि वे पूरी रीति से आराम करें और प्रचार न करें किन्तु जॉर्ज ने उनकी बात नहीं मानी।

अपने घर से चैपल तक पहुंचते पहुंचते जॉर्ज को थकावट महसूस होने लगी किन्तु प्रचार के लिए जब वे खड़े हुये तब उन्हें एक विशेष सामर्थ प्राप्त हुई। उनकी आवाज दृढ़ और साधारण थी।

दोपहर के बाद भी चैपल में सभा थी। डॉक्टर ने उनको स्मरण दिलाया कि वे आराम करें और प्रचार न करें किन्तु उनकी बात को अनसुनी करके दोपहर की सभा में भी जॉर्ज ने सामर्थ के साथ

प्रचार किया।

शाम को भी एक सभा थी। डॉ. और अन्य मित्रों ने जॉर्ज से बिनती की कि वह प्रचार न करें किन्तु उन्हें आश्चर्य में डालते हुए जॉर्ज शाम की सभा में प्रचार करने के लिये खड़े हुए।

रात्रि विश्राम के पश्चात् अगले दिन से उनका दैनिक कार्य पूर्ववत् जारी रहा। बुधवार की सुबह एक सभा में भाग लेने के बाद ६ मील पैदल चलते हुये न्यूओबोट पहुँचे। वहाँ से वे दूसरे शहर जाने के लिये गाड़ी पर सवार हुये। वह भी खून की उल्टी करने के कुछ ही दिनों के भीतर।

1832 का अप्रैल माह। एक शनिवार की शाम को मेरी छोटे बच्चे के कपड़े सिल रही थी और जॉर्ज बच्चे के लिये झूले के निर्माण मे व्यस्त थे।''

''जॉर्ज, अभी रहने दो यह सब। .....बाद में कर लेना। वैसे भी बहुत महीने बाद ही इनका उपयोग होगा।''

''तो तुम ये कपड़े सिलना भी बन्द करो.....उसका उपयोग भी बहुत महीनों बाद होगा।'' जॉर्ज ने जवाब दिया।

''मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है।'' कल आपको संदेश देना है। जाकर बाइबल पढ़िये।'' मेरी ने अपने पति को उत्साहित करना चाहा।

''कल संदेश नहीं होगा।'' जॉर्ज ने कहा।

''संदेश नहीं होगा? फिर कैसी आराधना?'' मेरी को आश्चर्य हुआ।

''हाँ संदेश नहीं होगा.....। कल मैं टेन मौथ के विश्वासियों से कुछ बातें करने जा रहा हूँ।''

''अच्छा, वैसे भी आपका प्रचार बातचीत जैसा ही होता है। फिर कल कौन सी नई बात होगी?''

''कल मैं केवल एक पद पढ़ने के बाद सीधे बातें करूँगा। मैं मत्ती 28:19,20 पद पढ़ूंगा।''

''इसलिये तुम जाकर सब जातियों को.....।''

''आप क्या कहने जा रहे हैं, जॉर्ज?''

जॉर्ज ने झूला बनाने का उपकरण नीचे रख दिया। फिर वह मेरी के पास पहुँचे। ''मेरी, मैं टेन मौथ की अपनी प्रिय भेड़ों से कहूँगा कि मेरी यहाँ की सेवा समाप्त हो गई है।''

मेरी ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसका चेहरा सफेद पड़ गया था।

''मेरी, तुम्हे मेरी शर्त याद है? मुझे जब जाना होगा.....जब परमेश्वर मुझसे कहेगा तब मैं चला जाऊंगा।''

''पर जॉर्ज, यह कैसे मालूम कि अभी ही जाना है? देखिये जॉर्ज, परमेश्वर अभी हमें यहाँ सब कुछ दे रहा है। किसी भी पास्टर से दुगुनी आमदनी हो रही है। सब लोग प्रसन्न हैं। सब लोग प्यार दे रहे हैं।''

''यहाँ पर जो परमेश्वर हमें सम्भाल रहा है वहीं परमेश्वर हमें ब्रिस्टल में भी सम्भाल सकता है।'' जॉर्ज ने कहा।

''ब्रिस्टल.....? तो क्या आपने निर्णय भी कर लिया है? जॉर्ज, जब से आपने सुना है कि हेनरी क्रेक ब्रिस्टल में सेवा कर रहे हैं आप भी ब्रिस्टल की लियों में मना चाह रहे हैं।''

''मेरी, ब्रिस्टल जाने निर्णय मेरा नहीं है। मैंने यूँ ही ब्रिस्टल का नाम लिया लेकिन परमेश्वर मुझसे टेन मौथ छोड़ने के लिये कह चुका है।''

''जॉर्ज, अब तक हम दो ही थे, लेकिन अब तीसरे के बारे में भी सोचना होगा। सितम्बर में वह भी आ जाएगा।''

''मेरी, परमेश्वर का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया है कि वह मूलर परिवार के एक और सदस्य का पेट न भर सके। अगले सप्ताह

ब्रिस्टल से हेनरी क्रेक का पत्र मिलने पर जॉर्ज और मेरी आश्चर्य में पड़ गये। उस दिन की बातचीत में जॉर्ज ने ब्रिस्टल का नाम यूं ही लिया था लेकिन अब इस पत्र के द्वारा हेनरी ने जॉर्ज को ब्रिस्टल आने का निमंत्रण दिया था।

''नई गली का गिडियन चैपल कुछ वर्ष पहले ही स्थापित हूआ। वहाँ पर हम साथ मिलकर सेवा करेंगे। साथ ही साथ एक नया चैपल भी शुरु होने संभावना है। अगर ऐसा हुआ तो वहां की सेवकाई भी हम मिलकर करेंगे। उन्होंने मुझे निमंत्रण दे दिया है। तुम्हारा विश्वास से जीने का जो सिद्धान्त है। वह मुझे कभी भी व्यवहारिक नहीं लगा था लेकिन यहाँ पर ऐसा लगता है कि हम इसके बिना नहीं जी पायेंगे। हम साथ मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। क्या तुम ब्रिस्टल नहीं आ सकते?''

हेनरी क्रेक

13 अप्रैल 1932

20 अप्रैल को मूलर अपने परिवार के साथ हेनरी क्रेक से मिलने ब्रिस्टल जा पहुँचे। वे हेनरी के साथ 10 दिन रहे। इन दिनों जॉर्ज ने गिडियन चैपल में वचन की सेवा की। साथ ही साथ पितेय मैं और क्लिफोन चैपल में भी जिन्हे एक जहाज को चैपल का रूप देकर बनाया गया था। हर जगह असाधारण भीड़ थी। इन सभाओं में कईयों ने अपना मन फिराया। 29 अप्रैल की रात की सभा में स्थानाभाव के कारण सैकड़ो लोग परेशान हुये। हर खाली जगह पर लोग भर चुके थे। कई लोगों ने उनसे बिनती की कि वह ब्रिस्टल हमेशा के लिए आ जायें। जॉर्ज और मेरी परमेश्वर की इच्छा को समझने का प्रयास कर रहे थे।

2 मई को वे टेन मौथ वापस आ गये।

18 मई को जॉर्ज मूलर को हेनरी क्रेक ने एक और पत्र लिखा। खत का मजमून यह था कि गिडियन चर्च के विश्वासीगण मूलर और क्रेक के शर्तो को मानकर उन्हें पास्टर बनाने के लिये तैयार हैं। उनकी शर्ते ये थीं :--

एक-उनके कार्य और संदेश विश्वासियों की धारणाओं और नियंत्रण से परे होंगे। परमेश्वर के प्रकाशन के अनुसार ही हम बाईबल की व्याख्या करेंगे और सेवा करेंगे।

दो-प्यूरन्ट प्रथा समाप्त की जाएगी। बदले में पास्टरों के जीवन निर्वाह के लिये टेन मौथ के समान ही स्वेच्छा दान पेटी स्थापित की जाएगी।

मई 21 को जॉर्ज मूलर ने टेन मौथ के विश्वासियों से विदा लिया। यह एक दुःखद समय था। विश्वासियों की आंखों से अविरल आंसू बह रहे थे। जॉर्ज और मेरी स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पा रहे थे किन्तु यह विचार उन्हें सामर्थ दे रहा था कि परमेश्वर ने उन्हे ब्रिस्टल में सेवा हेतु बुलाया है।

मई 23 को उनहोंने टेन मौथ छोड़ दिया। उस समय उनके पास यात्रा के लिये आवश्यक, केवल 15 पौण्ड ही थे।

9

''प्रिय बहन आपके पति बहुत कमजोर हो चुके हैं। हम चाहते हैं कि वे कुछ दिन और जीवित रहें लेकिन.....।''

''कोई बात नहीं, पास्टर क्रेक, ...आप लोगों की प्रार्थना ही काफी है। यद्यपि वह अचेत पड़े हैं फिर भी आप लोगों की प्रार्थनाएँ तो उनके साथ है। प्रार्थना से आश्चर्यजनक काम हो सकते है।''

बेथसदा चैपल के पुलपिट से जॉर्ज ने जो संदेश दिया था उसी को वह ग्रामीण स्त्री जॉर्ज को सुनाने लगी। 1832 मई माह के अंतिम दिनों में मूलर ब्रिस्टल पहुंचे थे ताकि गिडियन चैपल की सेवकाई में वह हेनरी क्रेक का सहभागी बने लेकिन जून समाप्त होते होते ब्रिस्टल शहर के मध्य में स्थित बेथसदा चैपल की जिम्मेवारी भी उनके कंधों पर आ गयी। बेतसदा चैपल कुछ ऐसे विश्वासियों की कलीसिया थी जो लूथरन कलीसिया से विश्वास भिन्नता के कारण अलग हो गये थे किन्तु जब उनका अगुवा ही उन्हें गलत शिक्षा देने

लगा तब उस अगुवे को कलीसिया के बाहर करना ही एकमात्र विकल्प था। बिना अगुवे के विश्वासियों का भटकना स्वभाविक था। इस प्रकार जब उन्हें बैथसदा चैपल में सेवा करने का अवसर मिला तब उन्हें महसूस हुआ कि यह परमेश्वर द्वारा खोला गया द्वार है ताकि वे शहर के मध्य भाग तक अपनी सेवकाई को फैला सकें। इसी बुलाहट के कारण ही मूलर और क्रेक बेथसदा चैपल की जिम्मेवारी सम्भालने के लिये तैयार हुये थे।

''अब क्या हूआ? अभी तक हम विश्वास की डींगे हाँकते थे लेकिन अब जब मौका आया तब यह संदेह कैसा? उस ग्रामीण स्त्री का विश्वास देखो। उसने हमारे संदेश को बिना प्रश्न किये ग्रहण कर लिया। कम से कम इस स्त्री के विश्वास के कारण परमेश्वर उनको चंगा करेगा.....।'' उस बीमार व्यक्ति के घर से निकलकर जाते हुये हेनरी ने जॉर्ज से कहा।

जॉर्ज ने हेनरी की बातों पर ध्यान नहीं दिया। जॉर्ज के हावभाव से लग रहा था कि वह कुछ तथ्यों को जोड़ तोड़कर किसी विचार को रूप देना चाहते हो।

''हेनरी, तुमने उनकी आंखों पर ध्यान दिया।'' जॉर्ज ने चलते हुये पूछा।

''हाँ जॉर्ज, क्या हुआ उनकी आँखों को?''

''उनका चेहरा और उनकी त्वचा पर ध्यान दिया? एक दम पीला पड़ गया है।''

''हाँ जॉर्ज, उनकी स्थिति बड़ी दयनीय है। मुझे तो प्रार्थना करने में भी डर लग रहा था। क्या हुआ जॉर्ज? क्या बात है?''

''दो साल पहले लंदन से भी ऐसा ही हुआ था। मैं ने वहां भी ऐसे ही देखा था।''

''क्या जॉर्ज? क्या देखा था?''

''परमेश्वर उन्हें बचाये बल्कि हम सबको भी बचाए.....।''

''हेनरी, उन्हें हैजा हो गया है।''

''हैजा!'' हेनरी का मुंह खुला रह गया। ''हे परमेश्वर। अब क्या होगा?''

''हाँ, यह बीमारी अब लन्दन से ब्रिस्टल पहुँच चुकी है। संसार में उसे कोई भी रोक नहीं सकता। केवल परमेश्वर ही कुछ कर सकता है।'' जॉर्ज वे दिन याद करने लगे जब लंदन में हैजा की बीमारी फैल गई थी।

''हर गली में मौत का बोलबाला था। सुबह से रात तक लोगों का विलाप सुनाई देता था। लगभग हर घर में मौत ने दस्तक दिया था। जंगल की आग की तरह यह बीमारी फैल गयी थी।'' जॉर्ज कहने लगा।

ग्रेट जॉर्ज स्ट्रीट के बड़े गिरिजाघर के घण्टा की आवाज गूंज उठी। जॉर्ज मन में प्रार्थना करने लगा कि काश यह घण्टा मछुवारों की चेतावनी के लिये बजने वाला घण्टा हो। लेकिन घण्टा फिर से बज उठा 1,2,3,4 वह मौत का घण्टा था। यह ब्रिस्टल शहर में मौत की शुरुआत भर थी।

ब्रिस्टल शहर में हैजा भयंकर महामारी का रूप ले चुका था। पूरा शहर मौत के ताण्डव से कंपकपाने लगा। दो युवा सुसमाचारकों के लिये यह अच्छी स्थिति नहीं थी। गली की नालियाँ गंदगी से भरने लगी। अगस्त के महीने में भी सूर्य अपनी पूरी तेजी पर था। भोजन की तलाश करने वाले सुअर के झुण्ड ग्रर्मी से बचने के लिये छाया तलाशने लगे।

हेनरी क्रेक और जॉर्ज मूलर ने सेवा का व्रत लिया था। हैजा जैसी महामारी उन्हें रोक न सकी। वे बीमारों के पास जाकर उनके लिये प्रार्थना करते। इस महामारी के कारण अनाथ हुये लोगों के पास जाकर वे उन्हें सांत्वना देते। दिन रात दोनों उनके लिये बराबर था।

''हमारी पड़ोसन श्रीमती विलियम्स को भोर से ही तीव्र पेचिस

का लक्षण दे रहा था। शाम को तीन बजे तक उस बेचारी की मृत्यु हो गई। अब उनके पति भी इस बीमारी के चपेट में आ गये है। उनके भी बचने की उम्मीद नहीं है। चर्च का घण्टा लगातार बज रहा है। अब लोगों को घण्टे की आवाज से डर लगने लगा है।

हेनरी क्रेक

24 अगस्त 1832

''रात के 10 बज चुके हैं। चर्च का घण्टा अब भी बज रहा है.....। सुबह से उसका बजना बदस्तूर जारी है। लगातार लोगों को दफनाया जा रहा है। आज की रात किसका नम्बर है? शायद मेरा.....। यदि ऐसा हुआ तो कोई डर नहीं.....क्योंकि मैं प्रभु यीशु मसीह के लहू से धोकर शुद्ध हो गया हूँ।''

जोर्ज मूलर

24 आगस्त 1832

सितम्बर का महीना आ चुका था। जॉर्ज हैजा ग्रस्त लोगों की सेवा के लिये जाना चाहा। मेरी उसका रास्ता रोककर खड़ी हो गई। उसका चेहरा सफेद पड़ गया था। उसकी आंखों में आंसू भर आये।

''मैं यहाँ से नहीं हटूंगी, जॉर्ज। आज आप इस घर से बाहर नहीं जायेंगे।''

''जॉर्ज को उसका दुःख समझ में आ गया। पिछले कई दिनों से वह अत्यधिक दुःखी थी लेकिन परमेश्वर की इच्छा में कोई भी कैसे बाधक बन सकता है?

''मेरी, हट जाओ।'' जॉर्ज ने धीमे से कहा।

''नहीं, मैं नहीं हटूंगी।'' जॉर्ज मूलर आज इस घर से बाहर नहीं जायेंगे।

जॉर्ज ने उसकी ओर देखा। उसकी आंखों में बिनती थी। उसने धीरे से उसके हाथों को थाम लिया। ''मेरी, वे मेरे लोग है। उनकी सेवा के लिये ही मैं ब्रिस्टल आया हूं।''

''लेकिन जॉर्ज, आप स्वयं को मार रहे हैं। क्या आप इसिलिये आये थे? वैसे भी इस महामारी में आप क्या कर सकते है।''

''मैं प्रार्थना कर सकता हूँ।''

''सुबह दो घण्टे तक तो आपने प्रार्थना की है। चैपल में भी सौ दो सौ लोग प्रार्थना कर रहे हैं लेकिन क्या हूआ? जॉर्ज, यह हैजा है।''

''ऐसा मत कहो, मेरी। हमारी दोनो कलीसियाओं में किसी की मृत्यु नहीं हुई है। चाहे कुछ भी हो, अभी हमें अपने शहर के लिये गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करने की आवश्यकता है। साथ ही साथ मौत की घाटी में जीने वाले लोगों को सांत्वना कुछ चन्द बोल।''

''प्रार्थना ..... सांत्वना.....। जॉर्ज, आप विनाश की ओर जा रहे हैं। मुझे कुछ नहीं सुनना। आज आप बाहर नहीं जायेंगे।''

''मेरी, मैं बहुत सुन चुका। मुझे जो कहना था वह मैं कह भी दिया। मुझे जाना ही होगा। जॉर्ज ने धीरे से उसका हटाना चाहा।''

''जॉर्ज, आपकी बात जाने दो। कम से कम मेरे बारे में सोचो। अपने बच्चे के बारे में सोचों जो बहुत जल्दी पैदा होने वाला है।''

जॉर्ज को एक घक्का सा लगा। ''मेरी.....।'' जॉर्ज ने जोर से पुकारा किन्तु मेरी ने उसकी पुकार नहीं सुनी।

''आप तो बुलाहट की बात कर रहे हैं। यदि आपको कुछ हो जाएगा तो अपनी बुलाहट को कैसे पूरी करेंगे। अन्दर चलिये, कम से कम अपने बच्चे के बारे में सोचकर ही सही।'' वह रोने लगी।

''मेरी, मेरे मन को छोटा मत करो। मुझे जाना ही होगा।''

''जॉर्ज, कृपया आप मत जाईये। आप मर जायेंगे।''

शहर में फिर से घण्टे की आवाज सुनाई देने लगी। मेरी का करुण क्रन्दन घण्टे की आवाज में खो गया। जॉर्ज ने मेरी के हाथों को बलपूर्वक हटाया। ''जब परमेश्वर ने ब्रिस्टल जाने के लिये कहा

था तब मेरी ने कोई शर्त नहीं रखा था। अनुकूल परिस्थितियों में, अच्छे मौसम में ही सेवा करनी है। तुम्हारे बारे में सोचकर मुझे दुःख होता है मेरी, किन्तु मेरी प्राथमिकता सेवकाई के लिये है। मैं इसिलिये आया हूँ।''

जॉर्ज घर से बाहर निकल गये।

''ऐसा कब तक चलेगा? हैजा की बीमारी अब गिडियन चैपल के लोगों को अपने चपेट में लेने लगी। काश, वह उत्साही बहन नहीं मरती.....। हमारी कलीसिया में से पहला शिकार.....। हमने कितनी प्रार्थना की थी।'' एक शाम वे सभा से अपने घर की ओर वापस लौट रहे थे। इस बार जॉर्ज की जगह हेनरी तेज कदमों से चल रहे थे।

अपनी बात का जवाब न पाकर हेनरी पीछे मुड़कर देखने लगा। जॉर्ज रास्ते के किनारे बन्धे बाड़ को पकड़े खड़े थे।

''थोड़ा चक्कर आ गया था। हेनरी, एक मिनट रुको।'' जॉर्ज उनकी ओर देखकर पुकारा। हेनरी दौड़कर जॉर्ज के पास आये। एक कदम भी आगे रख नहीं पा रहा हूँ। परमेश्वर ही कुछ कर सकता है।''

उन्हें हैजा का अहसास हुआ। जॉर्ज अपना पूरा भार बाड़े पर डालकर टिक गया। हेनरी को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें। सिर्फ परमेश्वर ही उनकी सहायता कर सकता था।

गली की एकान्तता में जॉर्ज अपने घुटनों पर आ गये। ''हे परमेश्वरा! हम अपने आपको आपके हाथों में सौंपते हैं। यदि आज रात हम हैजा का शिकार हो जाते हैं तो हमारी आशा केवल आपके पवित्र लहू में है जो हमारे लिये बहाया गया है। प्रभु हमारी सहायता कर। यदि हम कल का दिन देखने पायेंगे तो यह आपकी करुणा के कारण ही होगा।''

परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी। जॉर्ज और हेनरी की सेवा में कोई बाधा नहीं आई। इसी दौरान मेरी को प्रसव पीड़ा आरंभ हुई।

वह बहुत थकी हुई थी। लेकिन जैसा वह डर रही थी वैसा कुछ नहीं हुआ। न तो जोर्ज को न घर में किसी और को हैजा हुआ।

जॉर्ज रात भर प्रार्थना करते रहे। अगले दिन मेरी ने एक सुन्दर और स्वस्थ लड़की को जन्म दिया। बिल्कुल अपने पिता पर गई है। मेरी ने उसे देखकर कहा। उन्होंने उसका नाम लिडिया रखा।

अक्टूबर का महीना शुरू हो चुका था। हैजा की बीमारी लगभग समाप्त हो चुकी थी। लगातार हैजा पीड़ितों की सेवा के कारण जॉर्ज मूलर और हेनरी क्रेक काफी थक गए थे।

1832 अक्टूबर 5

युवा सुसामाचार प्रचारकों ने उस दिन को अलग किया ताकि वे परमेश्वर को उसकी सुरक्षा के लिए धन्यवाद अर्पित करें। दोनो कलीसियाओं के लोगो के लिये एक विशेष धन्यवाद की आराधना।

उस दिन सुबह प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के सन्मुख जॉर्ज का हृदय भर आया। जब चारों तरफ हैजा फैला हुआ था उस दौरान मेरी ने लिड़िया को जन्म दिया था। फिर भी वह स्वस्थ और सुन्दर बच्ची थी। जॉर्ज और मेरी के हृदय धन्यवाद से भर उठे।

कलीसिया कि गतिविधयाँ सामान्य होने लगी। लेकिन जॉर्ज और हेनरी के पास आराम का समय नहीं था। वे एक कलीसिया से दूसरी कलीसिया में सेवा के लिये जाते रहे।

1833 जनवरी

ब्रिस्टल के इन युव सुसमाचारकों को आश्चर्य चकित करते हुए उन्हें एक पत्र मिला। तुरंत बगदाद में मिशनरी बनकर जाने मिमंत्रण पत्र था। जहाज की यात्रा खर्च के लिये 2000 पवन लिफाफे में उस पत्र के साथ था।

जॉर्ज मूलर आवेश से भर उठा। 20 साल की उम्र से उसके मन में अभिलाषा थी कि वह यूरोप छोड़कर कहीं भी मिशनरी बन कर जाये। बगदाद के लिये निमंत्रण पत्र क्या उसी का उत्तर है?

महंगे कपड़े पहने हुए गेहुँए रंग के पुरुष, अद्‌भुत रीति से सजी हुई स्त्रियाँ, सुन्दर गलियाँ, हाथी दाँत और सुगध वस्तु बेचने वाले। छोटे बड़े व्यापारी। यह था बगदाद शहर।

कलीसियाई सेवा के दौरान लोगों की प्रार्थना सुनते हुए, ब्रिस्टल की गलियों में घूमते समय और नन्हीं बेटी लिडिया की किलकारियों में भी जॉर्ज के मन पर हमेशा बागदाद शहर छाया रहा। क्या परमेश्वर वास्तव में चाहता है कि वे ईराक जाएँ?

उन्होने प्रार्थना करने का प्रयास किया। उठते-बैठते वह इसी विषय पर सोचते रहे। एक शाम गिडियन चैपल की ओर जाते हुए उन्होने बगदाद शहर की कल्पना की। नबुकदनेज़र राजा का देश। बेलतशस्सर का देश!! यह वह देश है जहाँ दानिएल अपनी उपरौठी कोठरी में बैठकर दिन में तीन बार प्रार्थना किया करता था। बगदाद उनके लिये एक वास्तविकता बनती गई। बाजार में तुर्किस्तान के व्यापारियों की आवाज भी उन्हे सुनाई देने लगी।

''बाबूजी, कुछ चिल्हर दे दीजिये। कई दिनों से भूखा हूँ।'' लेकिन यह तो किसी तुर्की की आवाज नहीं है। यह तो ब्रिस्टल की भाषा है। जॉर्ज ने मुड़कर देखा। सड़क के किनारे लगी लोहे के जाली के पीछे से एक 12 साल का बालक जॉर्ज की ओर हाथ बढ़ा रहा था। उसके चेहरे पर दीनता के भाव थे।

''क्या, कुछ पैसे मिल सकते हैं?'' उसका छोटा सा मैला हाथ जॉर्ज की ओर बढ़ा हुआ था। वास्तव में उसका हाथ लोहे के जाली के बीच फँसा हुआ था।

''हम बाहर नहीं जा सकते। हर तरफ लोहे की जाली लगी हुई हैं।'' उसने दीनता से पुकारा। उसके ठीक पीछे पुराना विशाल जर्जर भवन था। उसके कमरे जेल के कमरों से भी छोटे थे। उसकी खिड़कियाँ बहुत ही छोटी थी। यह भवन सरकारी अनाथालय का था।

''हा ..... हा..... हा..... मैं सब को मार डालूंगा। दो साल के नीचे के सारे बच्चों को मार डालो।'' उस अट्‌टहास को सुनकर

जॉर्ज डर गये। यह आवाज उस विशालकाय भवन से आ रही थी। किन्तु वह बालक जस का तस खड़ा रहा।

''बाबूजी आप डरिये मत। वह एक पागल बूढ़ा है। कहाँ है मेरा पैसा?'' उस बालक का हाथ अभी भी जॉर्ज की तरफ बढ़ा हुआ था।

वह उस शहर का एक सरकारी अनाथलय था। उसमें भिखारी, पागल, जेबकतरे, शराब पीकर हुड़दंग मचाने वाले मजदूर और माता पिता को खोकर अनाथ हुए बच्चे आदि सभी तरह के लोग रहते थे। जॉर्ज ने अपना जेब टटोला। एक सिक्का निकाल कर उन्होने बालक की हथेली पर रखा। ''यह, इस एक सिक्के से क्या करेगा? वह भी इन पागलों के बीच में रहते हुए।''

उस घटना को भूलकर जॉर्ज फिर से बगदाद को याद करने लगे।

''बगदाद? क्या मुझे बगदाद जाना चाहिये? जॉर्ज विचलित हो उठे। नहीं, मैं ब्रिस्टल नहीं छोड़ सकता। ब्रिस्टल की तंग, गंदी गलियों में मेरी एक सेवकाई है। उस बारह साल के बालक और उसके साथियों के बीच में मेरी एक सेवकाई है। लेकिन, एक रुपया का सिक्का देने के अलावा मैं उनकी क्या सहायता कर सकता हूँ?'' जॉर्ज कुछ समझ नहीं पा रहे थे। लेकिन उन्होने एक बात का निश्चय कर लिया था कि वह बगदाद नहीं जा रहे हैं। ब्रिस्टल को उनकी आवश्यकता है।

1833 मई

जॉर्ज मूलर को सपरिवार ब्रिस्टल में रहते हुए १ वर्ष बीत चुके थे। उनके परिवार में ३ सदस्य थे। जॉर्ज मूलर, मेरी और नन्ही लिडिया? उस महीने गिडियन चैपल और बैतसदा चैपल के लोगों ने मिल कर एक प्रेम भोज का आयोजन किया। इस प्रेमभोज के बारे में जॉर्ज मूलर लिखते हैं कि यह मेमने के विवाह को याद दिलाने वाला भोज था। उस भोज के दौरान मूलर और हेनरी क्रेक ने यह प्रचार किया कि कलीसिया को याजकीय बंधन से अलग रहना

चाहिये और कलीसिया की उन्नति के लिये आवश्यक संदेश देने की स्वतंत्रता हर विश्वासी को होनी चाहिये।

जॉर्ज अपनी १ वर्ष की सेवकाई का मूल्यांकन करने लगे। बैतसदा चैपल में लोगों की उपस्थिति अब ० से ६० तक पहुंच गई थी। गिडियन चैपल में पहले 100 से कम सदस्य थे लेकिन अब ६५ नए चेहरे दिख रहे थे। इनमें से अधिकांश लोग क्रेक और मूलर के संदेश को सुनकर मन फिराए हुए लोग थे। कई ऐसे लोगो ने भी नए सिरे से अपने आपको समर्पित किया था जो विश्वास से पीछे हट गये थे। निश्चय ही मुझे ब्रिस्टल में लाने वाला परमेश्वर है। जॉर्ज और हेनरी का दैनिक जीवन पूरी रीति से परमेश्वर पर आश्रित था।

जॉर्ज ने अपनी डायरी में लिखा- ''एक भाई ने 'मेरे प्रेम और धन्यवाद का प्रतीक' कहते हुए मेरे लिए और हेनरी के लिए एक-एक टोपी भिजवाया। यह मेरी चौथी टोपी है। मेरी आवश्यकता के समय और कई बार उससे पहले भी परमेश्वर मेरी आवश्यकताओं के अनुसार उसकी पूर्ति करता है। कई बार लोगों ने बहुत सार सेब, अंगूर हम तक पहुँचाए। परमेश्वर हमारी आवश्यकता से बढ़कर हमारे लिए प्रवंध करता है। कठिन गर्मी के दिनों में शरीर को ठण्डा रखने के लिये आवश्यक फलों के रस भी हमें मिले। संभवतः परमेश्वर यह जानता है कि हम इस तरह की वस्तुओं को खरीदने में उसके धन का इस्तेमाल नहीं करेंगे। इसीलिए वस्तुओं के रुप में चीजें दे दी।''

जॉर्ज मूलर

1833 जून 22

1833 दिसम्बर

परमेश्वर के अलावा किसी से भी धन न मांगने का निर्णय लिये हुए जॉर्ज को तीन साल हो गये थे। उस समय वह 55 पवन सालाना आमदनी वाले एक पास्टर थे। किन्तु तनख्वाह को छोड़ने के बाद

पहले साल उन्हे 150 पवन की आमदनी हुई। उसके अगले साल उसको 200 पवन मिले। तीसरे साल उनकी आमदनी बढ़कर 267 पवन 12 शिलिंग हुई। यह परमेश्वर के प्रबंध का प्रमाण था।

1834

जब से जॉर्ज ने सरकारी अनाथालय के उस १२ वर्षीय बालक का चेहरा देखा था तब से उनके मन में उन बच्चों के बीच सेवा करने की इच्छा बलवती हो उठी थी। बगदाद जाने की इच्छा इसके बाद धुंधली पड़ती गई। दोनों कलीसियाओं की सेवकाई से वह संतुष्ट नहीं थे। उन्हे ऐसा लगने लगा कि परमेश्वर उनके लिये कुछ खास बात तैयार कर रहा है।

उन दिनों में जॉर्ज को मालूम हुआ कि एक सामाजिक संस्था गरीब बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने के लिये एक स्कूल चलाती है। उन्होने निर्णय लिया कि वह अपने खर्चे को कम करके उस स्कूल की सहायता करेगें। लेकिन तब भी पूर्ण मसीही भाव से एक स्कूल संचालित करने की आवश्यकता उन्हे महसूस होती रही.....किन्तु कौन ऐसा स्कूल आरंभ करेगा?

प्रार्थना करते हुए जॉर्ज को महसूस हुआ कि परमेश्वर उनके जीवन में आंदोलनात्मक काम करना चाहता है। मैं स्वयं एक स्कूल क्यों नहीं खोल सकता। उन्होने अपने दर्शन के बारे में मेरी से कहना चाहा। उन दिनों में मेरी अपने दूसरे बच्चे का इंतजार कर रही थी।

एक रात को जब वे खाना खा रहे थे तब मेरी के सामने जॉर्ज ने अपनी बात रखी। सुनते ही खाना खाने का चम्मच मेरी के हाथ से छूट गया।

''क्या, अभी ही ये बात कहनी थी। अब तो मुझसे खाया भी नहीं जा रहा है।''

तब भी लिडिया इन सारी बातों से अंजान अपने खिलौने के साथ खेल रही थी।

''मेरी'', जॉर्ज ने उसे सांत्वना देना चाहा। ''परमेश्वर मुझे एक

फ्री स्कूल खोलने के लिए प्रेरित कर रहा है। तुम मेरे दर्शन को समझने का प्रयास करो।''

''ओह.....आपका एक दर्शन.....।'' मेरी चिल्लाई। ''और उससे बड़ा एक दार्शनिक क्या नाम बताया आपने एक फ्री स्कूल.....। सुनकर कितना अच्छा लग रहा है मेरी व्यंग किया। नाम कि बात छोड़ों बस एक फ्री स्कूल..... ऐसे बच्चों के लये जो फीस नहीं दे सकते। उनके लिये आवश्यक नैतिक और आत्मिक शिक्षा भी दी जावेगी। उसमें भौतिक वादी लोग नहीं पढ़ायेगे। उसका संचालन हम स्वयं करेंगे।

''बस, बस, मुझे ज्यादा नहीं सुनना है। लिड़िया, चलो, सोने का समय हो गया है।'' मेरी ने झुककर लिडिया को गोद में उठा ली।

''मेरी, तुम इसे हल्के रूप से मत लो?'' यह परमेश्वर की बुलाहट है।'' जोर्ज ने मेरी को रोकना चाहा। आपको परमेश्वर की बुलाहट ऐसे मौकों पर ही आते हैं। लिडिया के पैदा होने से पहले हैजा पीड़ितों की सेवा की बुलाहट और अब देखों दूसरे बच्चे के आने में एक सप्ताह ही बाकी हैं और आपको स्कूल खोलने की बुलाहट मिल रही है। आपके पास धन कहाँ से आएगा?''

''सब कुछ परमेश्वर प्रबंध करेगा।'' जोर्ज ने उसके हाथों के थामना चाहा। किन्तु उसने उनके हाथों को झटक दिया।

''परमेश्वर प्रबंध करेगा। अगले सप्ताह प्रसव के खर्चे होंगें। समान खरीदने हैं। इस बीच में आपका ये फ्री स्कूल.....अभी, आपके पास कितने पैसे हैं?

''अभी.....।''

''हाँ, अभी.....।''

''अभी तो मेरे पास एक शिलिंग है।''

''लेकिन, मेरी.....।''

''एक शिलिंग ..... लेकिन उससे तो एक वक्त की रोटी भी

नहीं मिलेगी और आप स्कूल चलाने की बात करते हैं। और भी न जाने क्या क्या? बाईबल का वितरण करना है..... परचे छपवाना है। अगले हफ्ते से दो बच्चों के पालना है। यह मत भूलिए।

1834 मार्च 19

जोर्ज मूलर के परिवार में पुत्र की प्राप्ति हुई। ''यहोवा मेरा परमेश्वर है'' करते हुए उन्होंने उसका नाम 'एलियाह' रखा।

एक महीने तक जोर्ज घर में रहे। खाना पकाना, बच्चे को नहलाना.....उन्हेंने खुशी से सबकुछ किया। छोटे भाई के आने से लिडिया भी बहुत खुश थी।

इन सब बातों के मध्य भी जोर्ज का दर्शन फीका नहीं पड़ा। उसे यह एहसास था कि कलीसियाई सेवा के अलावा इस ब्रिस्टल शहर के लिये वह बहुत कुछ कर सकते हैं।

अप्रैल का पहला सप्ताह।

उन्होंने परमेश्वर से कहा, ''परमेश्वर मुझे फ्री स्कूल खोलना है और उसके लिए धन चाहिये। यदि मुझे २० पौण्ड मिल जाते तो मैं कुछ बाइबल खरीदकर बाँटता, शुरुआत के रूप में इतना ही सही।'' जोर्ज की प्रार्थना सुनकर मेरी हँसने लगी। मेरी को देखकर लिडिया भी हंसने लगी। केवल एलिशा ही गंभीरता के साथ पालने में पड़ा रहा।

किन्तु उस दिन के अस्त होने से पहले एक बहन ने आकर जोर्ज के हाथ में एक लिफाफा थमा दी। पास्टर मूलर इसमें अधिक कुछ नहीं है।

मूलर को भी अधिक नहीं चाहिये था। ..... कितना होगा १०,१५ नहीं उसमें 20 पौण्ज था।

''बहन क्या आप चाहते हैं कि किसी विशेष काम के लिये यह राशि इस्तेमाल की जाए?

''आपने ऐसा क्यों पूछा?''

''यदि कोई किसी विशेष काम के लिये पैसा देता है तो उसे हम अन्य कामों के लिये इस्तेमाल नहीं करते हैं।''

''अच्छी बात है।'' उस स्त्री ने कहा। ''मेरा मन कहता है कि पैसे से आप बाइबल करीदकर वितरित कर सकते हैं।''

1832 मई 25 को वे ब्रिस्टल पहुँचे। उस समय जोर्ज मूलर 26 साल के थे और मेरी मुलर की उम्र 33 साल थी।

10

''स्क्रिप्चरल नॉलेज इंस्टट्यूशन फॉर होम एण्ड हेब्रोड,'' पाल स्ट्रीट के राहगीरों को वह बडा सा बोर्ड देकर आश्चर्य हुआ।

यह बोर्ड मूलर के स्वप्न का प्रगटीकरण था। पहले हेनरी क्रेक को जोर्ज की यह योजना अव्यवहारिक लगा था किन्तु अब उसको समझ में आ गया कि परमेश्वर ने जोर्ज को दर्शन दिया है। उसे पूरा करने का रास्ता भी परमेश्वर ही बताएगा।

उन्होने प्रार्थना पूर्वक निर्णय लिया कि उनकी संस्था के उद्देश्य क्या क्या होंगे। इस बात का उसने लिया। एक-फीश न दे पाने के कारण जो छात्र पढ़ाई छोड़ देते हैं उनके लिए एक फ्री स्कूल प्रारंभ करना। वचन के अध्ययन के लिए संडे स्कूल और वयस्क स्कूल शुरु करना। दो-बाईबल और बाईबल संबधी लेखों का वितरण करना। तीन-दुनिया भर में फैले मिशनरी भाईयों की सहायता करना।

1834 में उन्होंने अपना काम शुरु किया और सात महीने के

अंदर वे धर्मविज्ञान विद्यापीठ के दोनों विद्यालयों में 200 से अधिक छात्र मुफ्त शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। 120 लोग संडे स्कूल विद्यार्थियों के रूप में थे। 40 व्यक्ति वयस्क स्कूल में अध्ययन करते थे। 1000 से ऊपर बाईबल और नया नियम का वितरण हुआ। विदेशों मे मिशनरी के रूप में काम करने वालों के वे ५७ पौंड की सहायता कर सके। हेनरी और जोर्ज जान गए कि परमेश्वर उनकी सहायता कर रहा हैं।

''सर, बेकार में मारने से कोई फायदा नहीं। चाहे कुछ भी हो, में आज रात पुस्तकों को घर नहीं ले जाऊँगा।'' वह दुबला पताला बालक अपने फटे पैंट की जेब में हाथ डालकर कहने लगा।

''मुझे समझ में नहीं आ रहा,.....आखिर तुम क्या चाहते हो? अपना बस्ता स्कूल में छोड़कर क्यों जाना चाहते हो? तुम अपने गृहकार्य कैसे पूरा करोगे।'' धर्म विज्ञान विद्यापीठ के प्राचार्य मि. कोंगर को बालक की बात समझ में नहीं आ रही थी।

''सर, मैं आज रात को घर नहीं जा रहा हूँ। और अगले दिन स्कूल वपास भी नहीं आऊंगा।''

''यह क्या बात हुई?'' अपने सहायता करने वालों से क्या इस प्रकार धन्यवाद प्रकट करना चाहिये। प्राचार्य को उस बालक की हरकत पर क्रोध आ रहा था।

''सर, मैं स्वयं ऐसा नहीं चाहता हूँ लेकिन मैं नहीं सोचता कि मैं वापस स्कूल आ पाऊँगा। कल रात को मेरी माँ को वे लोग अपने साथ ले गये।''

''कौन.....? कहाँ.....?'' मिस्टर कोंगर आश्चर्य से पूछने लगे।

''न्यू गेट के पागलखाना में वे मेरी मां को ले गये हैं।''

''अब से मुझे सरकारी अनाथालय में रहना होगा।''

''कॉलिन, ऐसा नहीं हो सकता।'' तुम पढ़ने में कितने अच्छे थे।

तुम स्कूल या पढ़ाई नहीं छोड़ना।''

''सर, एक बार कोई अनाथालय में चला जाता है तो वहीं का होकर रह जाता है। ....कुछ भी हो, वहाँ कम से कम खाना तो मिलेगा।''

''कॉलिन, तुम वापस आना। कम से कम तुम्हारे मां के ठीक होने के बाद।'' प्राचार्य से इतना ही कहते बना।

''मुझे नहीं लगता कि मैं वापस आ पाऊंगा। सर, मैं जा रहा हूँ। पास्टर मूलर को मेरी तरफ से धन्यवाद कहियेगा। मैं स्कूल को बहुत पसंद करता था। काश! की मैं यहाँ रह पाता।''

''योग्य छात्रों के पढ़ने के लिए यदि समुचित व्यवस्था नहीं कर पाएं तो इस स्कूल का महत्व क्या है, मिस्टर कोंगंर?'' कॉलिन के बारे में सुनकर मूलर ने विचलित होते हुए कहा। कॉलिन की घटना ने उन्हे बहुत दुःख पहुँचाया था। परमेश्वर ! क्या मैंने कोई गलती की है। यदि इन गरीब और योग्य बच्चों की नियति सरकारी अनाथालय ही है तो फिर इस प्रकार के स्कूल चलाने से क्या लाभ है। वहाँ पर पागलों और अपराधियों का साथ इन बच्चों को किस प्रकार का भविष्य प्रदान करेंगा। उस अनाथालय से बाहर निकालने का रास्ता भी तो नहीं है।''

''श्रीमान् कोंगर, हमें कुछ करना ही होगा। देखिए, हमें उन बच्चों को वहाँ से बाहर निकालना ही होगा। किन्तु उनका पालन पोषण करने के लिए, माता-पिता नहीं हैं। कम से कम उन्हें वहाँ पर खाना तो मिल जाता है। इस उमर में उन्हें वही तो चाहिए। हम और क्या कर सकते हैं। मिस्टर कोंगर ने अपने विचार मूलर के सामने रखे। और अपने लम्बे डग भरते हुए चलने लगे। मूलर जैसे नाटे व्यक्ति को उनके बराबर चलने में कठिनाई हो रही थी। हम कर सकते हैं, मिस्टर कोंगर। हम उन्हें मसीही बाल मंदिर में रख सकते हैं।''

''बाल मंदिर ? कहाँ पर ?'' मिस्टर कोंगर को समझ में नहीं आया। इंग्लैण्ड में एक दो बाल मंदिर हैं। ऐसा सुना था लेकिन यहाँ

ब्रिस्टल में?''

''.....हाँ यहीं ब्रिस्टल मे। यहाँ बच्चों के लियए एक बाल मंदिर होना चाहिये।'' जोर्ज मूलर की आवाज में दृढ़ता थी।

''पास्टर मूलर, आप एक क्रांतिकारी के समान बात कर रहे हैं। अनाथालय खोलना। एक परीक्षण के समान है। क्रांतिकारी परीक्षण .....। कौन यह काम करेगा और तो और अनाथालय खोलने से आपको स्कूल के संचालन में किस प्रकार सहायता मिलेगी?''

''मिस्टर कोंगर, हम स्कूल के बारे में नही, बच्चों के बारे में सोंचे।'' जोर्ज ने कहा।

''मुझे कुछ समझ मे नहीं आ रहा है।'' मिस्टर कोंगर ने कहा।

''मिस्टर कोंगर, हम झुग्गी झोपडी के बच्चों को बुलाकर पढानें के बदले बाल मंदिर के बच्चों को पढ़ायेंगे।''

''लेकिन यहाँ तो कोई बाल मंदिर नहीं है।''

''..... तो मैं एक बाल मंदिर खोलने जा रहा हूँ।'' जोर्ज ने कहा।

''मिस्टर मूलर, आप बाल मंदिर खोलेंगे? आप ऐसा नही कर पायेंगे।''

''क्यों ?''

''मतलब आपके पास समय कहाँ है। अभी आपके उपर इतनी साही जिम्मेदारियाँ है।''

''तो क्या मैं कॉलिन जैसे गरीब बच्चों के लिये नहीं सोंचू? आपके पास और कोई कारण है तो बताईये।''

''सार, बात समय की नहीं है। अनाथालय चलाना बहुत खर्चीला काम है। मैं नहीं सोचता कि एक अनाथालय चलाने के लिये आपके पास पर्याप्त धन है।'' मिस्टर कोंगर जानते थे कि सच में जोर्ज के पास पैसा नहीं है।''

''लेकिन हमें कुछ तो करना होगा। नहीं तो परमेश्वर ने मेरे मन ऐसा विचार क्यों दिया।''

''अनाथ बच्चों के लिये एक बाल मंदिर की आवश्यकता तो हमेशा सहसूस करते रहे हैं।''

धर्म विज्ञान पीठ के लिये आवश्यक धन समय पर मिलता रहा। फिर भी कई छात्रों ने बीच में ही पढ़ाई छोड़ दी। धीरे धीरे वे भी सरकारी अनाथालय में पागलों और अपराधियों के सहवासी बन गये।

1835!

शुरू के कुछ महीने जोर्ज ने जर्मनी में बिताये। मेरी के भाई एन्थनी ग्रोव्स के अनुवादक के रूप में जोर्ज जर्मनी गये थे। अपने देश पहुंचकर वे अपने पिता से मिले। बहुत समय बाद वे बेटे से मिलकर बहुत प्रसन्न हुये। बुढ़ाये में अपने पादरी बेटे के साथ उसके विशाल पार्सनेज में रहने की इच्छा वे कब का छोड़ चुके थे। अब वे निराश नहीं थे। उन्हें इतना मालूम था कि उनका बेटा कुछ भले काम कर रहा है।

जोर्ज ने हॉल विश्वविद्याल में डॉ. तोलक के साथ चाय पी। क्रोपन स्टेड के जोर्ज के पड़ोसी का बेटा भी हाल में रहता था। यह एक संयोग ही था कि वह भी वहीं पर ए.एच. फ्रैक द्वारा संचालित अनाथालय के अतिथिगृह में ठहरा हुआ था। हॉल में पढ़ते समय जोर्ज ने भी कुछ समय इसी कमरे में गुजारे थे। जोर्ज ने ब्रिस्टल के सरकारी अनाथालय की तुलना हॉल में फ्रैक द्वारा संचालित अनाथालय से करने का प्रयास किया। जल्दी ही जोर्ज को समझ में आ गया कि इन दोनों को तुलना नहीं की जा सकती।

17 वीं शताब्दी में फ्रैक द्वारा स्थापित यह अनाथालय विश्वासी जीवन का एक अच्छा उदाहरण था। वह ऐसा समय था जब बिना सरकारी सहायता के अनाथालय चलाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। ऐसे समय में फ्रैक ने केवल परमेश्वर की ओर देखकर अनाथालय प्रारंभ किया। फ्रैक के अनाथालय में बैठे हुये जोर्ज मिस्टर कोंगर के साथ हुई अपनी बातचीच याद आई। हे ईश्वर!

आप मुझे क्या सिखाना चाह रहे हैं?

मई माह के मध्य में जोर्ज ब्रिस्टल वापस पहूँचे। 1835 का जूल महीना मूलर परिवार के लिये दुःख का कारण था। जून 22 को जोर्ज के ससूर मिस्टर ग्रोव्स का निधन हो गया। उसके ठीक चा दिन बाद 26 जून को मूलर का बेटा एलियाह पंद्रह माह की अवस्था में निमोनिया के कारण मर गया। जोर्ज ने अपने डायरी में लिखा।

''पिठली शाम को मैंने यह प्रार्थना किया था कि हे परमेश्वर, यदि तू मेरे बेटे को वापस बुलाता है तो इस दुःख को सहने की ताकत मेरी पत्नी को देना। मैंने उसे वापस नहीं मांगा। मैंने ही प्रर्थना किया कि अधिक कष्ट सहे बिना परमेश्वर उसे अपने पास बुला लें। वह दो घण्टे के अन्दर परमेश्वर के पास पहुँच गया। इस प्रकार हमारे परिवार का एक बुजुग्र सदस्य और एक छोटा बच्चा एक ही सप्ताह में परमेश्वर के पास पहुँच गये। मेरी बहुत दुःखित है फिर भी वह सांत्वना पा रही है।''

टान्सिल की समस्या के कारण चिकित्सा के लिये और कुछ आराम के लिये हेनरी से क्रेक ब्रिस्टल से चले गये थे। इस कारण दोनो चैपल की सेवकाई जोर्ज को अकेले करना पड़ रहा था। आर्थिक रूप से भी जोर्ज को इन दिनों में बहुत कठिनाई हुई। जुलाई के शुरू के हफ्ते में जोर्ज ने अपनी डायरी में इस प्रकार लिखा।

''हमारा टैक्स देने का समय निकल चुका था। अब कभी भी टैक्स अधिकारी हमें बुलवा सकते थे। पिछले महीने बीमारी और मृत्यु के कारण धन कुछ अधिक खर्च हो गया था। इसीलिये हम जीवन में पहली बार समय पर कर नीं दे पाये। परमेश्वर हम पर करुणा करें।''

दो दिन बीत गये। अगले दिन जोर्ज ने अपने डायरी में लिखा।

''स्वेच्छादान और कुछ लोगों की सहायता से आझ णएँ खऱ धए शखआ। परमेश्वर की स्तुति हो। कर अधिकारी के पूछने से पहले ही मैं कर दे सका। परमेश्वर कितनी जल्दी प्रार्थनाओ को सुनता

है।''

अगस्त के मध्य में हेनरी क्रेक वापस गये। लेकिन वे पूरी तरह स्वस्थ नहीं थे। इस बीच जोर्ज भी पेट की बीमारी से पीड़ित हो गये। आराम करने के लिये मूलर परिवार ब्रिस्टल छोड़कार वाइट आईलैण्ड पहूँच गये। बीमारी के बिस्तर पर भी जोर्ज मूलर परिवार ब्रिस्टल छोड़कर वाइट आईलैण्ड पहुँच गये। बीमारी के बिस्तर पर भी जोर्ज ने परमेश्वर की निकटता को अनुभव किया।

1835 सितम्बर 27

''आज मैं तीस साल का हो गया हूँ। मुझे लगता है कि मैं इससे भी अच्छी रीति से परमेश्वर के लिये काम आ सकता था। मेरी यही प्रार्थना है कि यदि परमेश्वर मुझे कुछ दिन और जीने के लिये देता है तो मैं उसे पूरी रीति से परमेश्वर के लिये खर्च करूँगा।''

सितम्बर 29

''कल रात जब मैं अपने कमरे में पहुँचा तब तुरंत ही बिस्तर पर गिरकर सो जाना चाहा। मेरे मन में यह विचार आया कि मैं कुछ देर पहले थोड़ी प्रार्थना कर चुका हूँ। शरीर की दुर्बलता और रात्रि की नीरवता ने मुझे बिना प्रार्थना किये सो जाने को प्रलोभित करने लगा। लेकिन परमेश्वर ने मुझे घुटनों पर आने के लिये अनुग्रह किया। मैं जब प्रार्थना करने लगा तब एक अनोखी प्रार्थना की आत्मा मेरे अन्दर समा गई। ऐसा अनुभव पिछले कई हप्तों में मैंने नहीं किया था। परमेश्वर ने अपनी महान कृपा को मेरे हृदय में प्रक किया। एक घण्टे से अधिक मैंन् परमेश्वर की निकटता और प्रार्थना की मधुरता का अनुभव किया। बीमार होने के बाद पहली बार अपनी चंगाई के लिये मैंने प्रार्थना किया। गंभीरता के साथ प्रार्थना करने के लिये परमेश्वर ने मेरी सहायता की।''

15 अक्टूबर को मूलर परिवार वापस ब्रिस्टल पहुँचे। उसके बाद वे लगातार सेवा में व्यस्त रहे।

''आईये पास्टर साहब, इधर बैठिये।'' मैं चाय बनाकर लाती हूँ।''

''और कहिये। श्रीमती मूलर कैसी हैं? और छोटी लिडिया?

''सब लोग ठीक हैं। जल्दी ही प्रार्थना करके जाऊँगा।''

''चाय पीकर जाईये। बस, पाँच मिनट.....। मैं अभी लाती हूँ। तब तक आप ये किताबें देख सकते हैं।''

वह रसोईघर की ओर चली गई। जोर्ज उन पुस्तकों को देखने लगे। वरजीन, सीसरों, डीकन्स, जैसे लेखकों की पुस्तकों के पास जो छोटी सी पुस्तक रखी थी उसे लेकर वह देखने लगे। यह ए.एच. फ्रँक की जीवनी थी जिन्होंने हॉल में अनाथालय की स्थापना की थी।

जोर्ज इस पुस्तक को दो बार पढ़ चुके हैं। 18 वीं सदी में लोगों की धारणाओं एवं परम्पराओं के विरुद्ध एक अनाथालय प्रारंभ करने के लियए उन्होंने विश्वास के साथ कदम बढ़ाया था। इस महान व्यक्ति की जीवनी ने जोर्ज के जीवन में बहुत उत्साह भर दिया था। उनके पास भी पैसा नहीं था फिर भी जब भी उन्हें आवश्यकता होती थी वे परमेश्वर से मांगते थे ओर परमेश्वर उनकी आवश्कता को पूरा करता था।

जोर्ज को कोंगर की बात याद आई। ''सर, आपके पास अनाथालय के लिये पैसे नहीं हैं।''

फ्रँक के पास भी नहीं थे। फिर भी उन्होने अनाथालय चलाया। अभी इस स्त्री के आलमारी से मुझे यह किताब क्यों मिनी? उन्हें लगा कि परमेश्वर उनसे बात कर रहा है।

उस सप्ताह के अन्त में जोर्ज हेनरी क्रेक के घर में घरेलू प्रार्थना सभा में शामिल होने पहुँचे। परमेश्वर की इच्छा के अधीन होकर जो योजना उन्होंने बनाई थी उसे वे हेनरी क्रेक को बताने लगे। ''ब्रिस्टल शहर के मध्य में एक सस्ता मकान किराया पर लेना है। यदि किसी अनाथ बच्चे को घर जैसी सुरक्षा की वस्यकता हो तो वह वहाँ आकर रह सकता है। कम से कम 30 बच्चे वहाँ रह सकते हैं। वहाँ उन्हें खाना मिलेगा, शिक्षा मिलेगी और इन सबसे बढ़कर वे वहाँ पर एक पारिवारिक माहल में बढ़ेंगे।''

हेनरी सब कुछ सुनते रहे। फिर उन्होंने बिना लगा लपेट के कहा। ''जोर्ज, यह सब सम्भव नहीं है।'' हेनरी के पास इसका कारण भी था। ''जोर्ज के पास अनातालय चलाने के लिये पैसे नहीं हैं।''

''फ्रँक के पास भी पैसा नहीं था फिर भी उन्होने अपना अनाथालय प्रार्थना के साथ प्रारंभ किया।'' जोर्ज भी अपनी बात पर अडिग रहा।

''लेकिन यह भी याद रखो कि वह 100 साल पहले की बात है।''

''तो क्या अभी परमेश्वर की शक्ति कम हो गई है?'' जोर्ज की आवाज तोड़ी कठोर हो गी ती।

''नहीं नहीं, लेकिन अभी समय बदल गया है।''

1727 में अगर परमेश्वर ने फ्रँक की प्रार्थना का उत्तर दिया तो वह 1835 में मेरी प्रार्थना का भी उत्तर देगा। इसी को प्रमाणित करने के लिये मैं भी अनाथालय शुरु करना चाहता हूँ।''

''अच्छा तो यह बात है। मैंने सोच कि तुम्हारे मन में सरकारी अनाथालय और वहाँ रहने वाले बच्चों का दर्द है।''

''हां हेनरी, वहाँ के बच्चों का दर्द ही मेरे मन मैं है लेकिन उसी समय एक और बात मेरे मन मैं है। हम हमेशा क्या प्रचारकरते हैं? परमेश्वर यह भरोसा रखो। .....उससे प्रार्थना करे.....वह तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा। यही सब न? लेकिन यह सब लोगों को महसूस भी तो होना चाहिए।''

''अच्छी बात है, लेकिन यह मत भूलो कि हम निंदकों की दुनिया में रहते हैं।''

''फिर भी मैं संसार को यह बताना चाहता हूं कि परमेस्वर के विषय में जो कुछ हम कहते हैं वह सच है। जब परमेश्वर मेरी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा तब दुनिया जानेगी कि परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।''

''क्या इसी बात के लिये तुम अनाथालय शुरु कर रहे हो?''

''नहीं, हेनरी निश्चय ही मेरे मन में ये गरीब और अनाथ बच्चे हैं फिर भी यदि मैं बिना किसी से धन की अपील किये बिना यह

11

''हे परमेश्वर, सिर्फ शुरुआत करने के लिये ही मुझे 1000 पौण्ड की अवश्यकता है। ..... 30 बच्चों के इस परिवार के रहने के लिये एक उचित घर ..... 3-4 लोगों को मूझे अपनी सहायता के लिये रखना पड़ेगा। ऐसे लोगों की मुझे आवश्यकता है जो बच्चों से प्यार करते हों..... ..... जो मसीही विश्वास और समर्पण के साथ उनका पालन कर सकें। बच्चों के लिये कपड़े चाहिये... .....बिस्तर चाहिये.....बर्तन चाहिये.....मैं विश्वास करता हूँ कि यह सब आप देंगे। सब कुछ मैं आपके हाथों में साँपता हुँ। आमीन।''

कई हफ्तों से जोर्ज प्रार्थना कर रे थे किन्तु हजार पौण्ड तो छोड़ों एक शिलिंग भी उन्हे नहीं मिला। जोर्ज ने निर्णय किया था कि वह किसी से एक पैसा भी नहीं माँगेगें। लोग इस सच्चाई को जान जायें कि यदि हम विश्वास रखते हैं तो परमेश्वर निश्चय ही विश्वास योग्य रहता है।

1835 दिसम्बर 7

अनाथालय के लिये पहली सहायता पहुँची। एक शिलिंग। हजार पौण्ड का पहला किश्त। कुछ देर बाद ब्रिस्टल में ही रहने वाले एक और जर्मन व्यक्ति पहुँचे। एक शिलिंग। इस प्रकार यदि एक शिलिंग के रूप में ही सहायता मिलती रही तो कितने दिन लगेंगे।

८ दिसम्बर

वह परमेश्वर से पूछने लगा कि कहीं वह ज्यादा तो नहीं माग रहे हैं। बाईबिल खोलकर वह बैठ गये। ताकि परमेश्वर उनसे बात करे। जोर्ज मूलर भजन सहिता पढ़ रहे थे। भजन 79 के 30 और 31 पद पर उसका ध्यान गया। ''तू अपने मूंह को खोल मैं उसे भर दूँगा।''

जोर्ज बहुत जोर से हंसा। उसे उत्तर मिल गया था।

दिसम्बर ९

दोपहर के बाद एक बहुत बड़ी सहायता पहुंची। धन के रूप में नहीं, एक बड़ी लकड़ी की आलमारी के रूप में।

उस रात जोर्ज ने अपनी योजना के बारे में गिड़ियन्स चैपल के लोगों को बताया।

''एक ऐसा अनातालय चहां रंग-जाति भेद के बिना किसी भी बच्चे को प्रवेश दिया जाता हो। इस अनाथालय में किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जायेगा। उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षक और उनके परिचारक परिचारिकाएं पूरी तरह से मसीही अनुभव रखने वाले होंगें। बच्चे विद्याध्ययन के साथ.....साथ परमेश्वर के वचन के ज्ञान में भी बढ़ेगे।

.....किसी भी परिस्थिति में, हम किसी से भी धन की मांग नहीं करेंगें। न केवल ब्रिस्टल बल्कि दुनिया भर में रहने वाले अपने संतानों को परमेश्वर इस सेवा की सहायता करने के लिए उत्तोजित कर सकता है। इस संसार का सोना चांदी किसकी संपत्ति है? सब कुछ हमारे जीवित परमेश्वर का ही है।''

सभा समाप्त कर जोर्ज बाहर निकले.....।

''पास्टर मूलर, यह अनाथालय वगैरह चलाना इतना अच्छा काम नहीं हैं। सच पूछो तो यह एक नीच साम है.....।'' मिठाई दुकान वाले थामस की पत्नी बेलगाम बोलती गई।

''हां, हां..... उसका कहना सही है। गली कूचों में भटकने वाले इन अनाथ बच्चों का सही ठिकाना सरकारी अनाथालय ही है। वहाँ उन्हे किस बात की कमी है? क्या वहाँ उन्हे खाना नहीं मिलता है?'' थामस ने अपनी पत्नी की बात का समर्थन किया।

जोर्ज सिर्फ मुस्कुरा कर रह गया। फिर हमेशा की तरह सबसे हाथ मिलाने लगे।

''अगर एक बार ठान लेता है तो फिर करके ही छोडता है। छोटी उम्र है न?'' दूध बेचने वाली बूढी औरत गालों पर हाथ फेरना नहीं भूली।

''अभी तो तीस साल का ही हुआ है। लेकिन सोचता है जैसे सबकुछ जानता है।'' जोर्ज ने किराना दुकान वाले को क्लर्क से कहते सुना। ''इनके ब्रिस्टल आने से पहले क्या यहाँ के अनाथ बच्चे जीते नहीं थे?''

जोर्ज को लोगों की सोच पर दुःख हुआ। लेकिन उसने धीरज नहीं खोया। परमेश्वर ने उससे क्या कहा है? ''तू अपना मुँह खोल और मैं उसे भर दूँगा।''

''पास्टर मूलर! परमेश्वर आपको आषीश दे।'' एक स्त्री-शब्द सुनकर जोर्ज मुडे। आराधना सभा में सबसे आगे की पंक्ति में बैठकर ध्यानपूर्वक परमेश्वर के वचन को सुनने वाली चौड़े कंधों वाली महिला.....। ''पास्टर मूलर, आपको आराधना के पश्चात् अनाथालय के लिए अलग से भेंट लोना चाहिए था।''

''तू अपना मुँह खोल और मैं उसे भर दूँगा.....।''

''भेंट नहीं.....बहन। मैं ने परमेश्वर से कहा है कि मैं धन की मांग नही करूँगा।''

''हां.....कोई बात नहीं। भेंट नहीं, तो इस प्रकार ही सही। अनातालय के लिए मेरा हिस्सा.....थोटा सा ही है.....केवल दस शिलिंग।''

''पास्टर मूलर! मैं दिखने में ऐसी हूं लेकिन तंदुरूस्त हूँ।'' वह अपने चौड़े कंधों को उपर की और उटाते हुए बोली। ''मैं अच्छा खाना बना लेती हूँ। मुझे तो बच्चे अच्छे भी लगते हैं। क्या मुझसे आपके अनाथालय को किसी प्रकार का लाभ हो सकता है?''

''जरूर बहन..... परमेश्वर आपको आषीश दे।''

''पास्टर मूलर, मेरी तन्ख्वाह के लिए आप परेशान नहीं होना। मुझे तन्ख्वाह नहीं चाहिए। मुझे थोड़ी सी पेंशन मिलती है। यदि मैं अनाथालय में रहूँगी तो पेंशन का ुपयोग भी वहीं पर होगा।''

''तू अपना मुँह खोल और मैं उसे भर दूँगा.....।''

अगले दिन डाकिये के हाथ में उनके लिए किसी अनजान व्यक्ति का पत्र था। उत्सुकता के साथ वह लिफाफे का सिरा फाडने लगे।

''यह क्या कर रहे हो, जोर्ज ? मैं ने अभी-अभी सफाई की है। वहां पर कागज फाडकरमत डालो। यह आपका अनातालय नहीं है।''

''आश्चर्य.....यह देखो मेरी.....।''

जोर्ज ने शायद मेरी की बातों पर ध्यान नहीं दिया था। जोर्ज का पूरा ध्यान उस पत्र की ओर ही था। कल ही तो मैंने पहली बार अपनी अनाथालय की योजना के बारें में सार्वचनिक रूप से घोषणा की थी.....।''

''क्या हुआ.....? क्या अभी से अनाथ बच्चों की भीड ने आना शुरु कर दिया?''

''नहीं, मेरी। यह देखो, यह एक विश्वासी परिवार का पत्र है। दोनां पति-पत्नी हमारे अनाथालय में सेवा करने के लिए आ रें हैं।''

''यह तो बहुत अच्छी बात रहें हैं।''

''यही नहीं इसके अलावा वे अपने घर के सारे फर्नीचर भी

अनाथालय को दे रहें है। उन्हे काम के बदले तन्ख्वाह भी नहीं चाहिए।''

''वे कौन हैं, जोर्ज..... ?''

''नहीं मालूम.....शहर के उत्तरी भाग से कोई है।''

''जोर्ज, मैं मान गई आपको.....। एक अनाजान व्यक्ति आपके अनाथालय में काम करने का वादा कर रहा है। निश्चय है। निश्चय ही परमेश्वर आपके खुले मुंह को भर रहा है।''

''मेरी, उन्हे अनाजान कहना सही नहीं होगा। क्योंकि जिस मसीह पर मेरा आश्रय है उसी पर उनका भी आश्रय है।''

उन्होने दरवाजे पर किसी के खटखटाने की आवाज सुनी। मेरी ने द्वार खोला। एक अनजान व्यक्ति..... जिन्हे उन्होने कभी नहीं देखा था। उनके हाथों में एक बडा सा बंडल था।

''आपके अनाथालय के लिए है।'' मेरी ने उनके हाथों से बंडल लेकर घर के अंदर रखा। वापस द्वार पर पहूँची तो वहाँ पर कोई नहीं था। वह व्यक्ति जा चुका था। ..... वह कौन था?

''चलो हम इसे कोलकर देखते हैं।''

जोर्ज ने सावधानी से उस बंडल को खोलना प्रारंभ किया।

''खाना खाने के प्लेट.....।''

मेरी ने गिन कर देखा। ''कुल अठ्ठाइस प्लेट।''

''तीन बडे सब्जी बनाने के बरतन.....।''

''तीन देगची.....।''

''एक जग, चाय पीने के कप, तीन नमकदानी.....।''

''पाँच चम्मच.....और कई छोटी छोटी चीजें.....।''

मेरी और जोर्ज ने वहीं पर घुटनों पर आकर परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

उस माह उनके जीवन में ऐसी और भी कई घटनाएं हुई जो परमेश्वर में उनके विश्वास को मजबूत करने में ऐसी और भी कई घटनाएं हुई जो परमेश्वर में उनके विश्वास को मजबूत करने में सहायक हूई। ब्रिस्टल के एक व्यापारी ने अनाथालय के लिए जोर्ज को 50 पौंण्ड दिय।

''पाँच वर्ष पूर्व हमारी वार्षिक आय 50 पौंण्ड थी।'' मेरी ने याद किया। वे परमेश्वर की स्तुति करने लगे। इससे भी अधिक आश्चर्य उन्हे तब हुआ जब उनके प्रचार का विरोध करने वाले एक किराना दुकान संचालक ने अनाथालय के लिये 100 पौंण्ड उसके 10 वर्ष की आमदनी के बराबर था।

जोर्ज उनके घर पहुँचे। जोर्ज ने सोचा कि शायद उस स्त्री ने इतनी बडी रकम अनजाने में दे दिया हो।

अपने पुश्तैनी संपत्ति को बेचकर उन्होने वह धन जुटाया था। जोर्ज ने कहा कि उन्हें इतने बडे त्याग की आशा नहीं थी और अपना धन वापस ले लें। किन्तु उनका कहना था कि जब यीशु ने अपने खून का आखिरी कतरा भी हमारे लिए बहा दिया तब हम क्यों न अपनी संपत्ति का आखिरी हिस्सा भी उसके लिये खर्च कर दें?

1836 जनवरी

मेरी रसोईघर में सब्जी काट रही थी। छोटी लिडिया अपने खिलौने के साथ पास में ही खेल रही थी। जोर्ज ने बिना आवाज किये ही रसोई में प्रवेश किया।

''मेरी, हमें मिल गया.....।''

''क्या..... ? घर..... ?''

मेरी अपनी उत्सुकता छुपा नहीं सकी।

''हां.....। हमें घर मिल गया है। विल्सन स्ट्रीट में एक विशाल घर.....।''

''रसोईघर कैसा है?''

''काफी बड़ा है। साफ सुथरे चूल्हे..... विशाल ओवन.....सबकुछ परमेश्वर ने दिया है। जो कुछ अनाथालय के लिए आवश्यक था वह सबकुछ उसने दे दिया। परमेश्वर कितना विश्वासयोग्य है.....है न मेरी?''

''हां .....निश्चय ही.....।''

1836 फरवरी 3

विल्सन स्ट्रीट के नये घर के अपने दफतर में मूलर से ही उपस्थित थे। आज अनाथालय में बच्चों के प्रवेश के लिये आवेदन स्वीकार करने का दिन है। फरवरी ३ तारीख की घोषणा पहले से की गई थी। जोर्ज ने मन में सोच रखा था -- ''3 तारीख को जैसे ही वह दफतर खोलेंगों के लिए दफतर में जगह नहीं होगी तो कुछ लोगों को वह भोचनकक्ष में बिठायेंगें। किन्तु अभी तक कोई भी क्यों नही पहूँचा?''

दोपहर का समय आ पहुंचा।

जोर्ज अपनी कुर्सी से उठकर खिडकी के पास जाकर खडे हो गये। वह खिडकी से बाहर बडी आकांक्षा से देखने लगे। क्या कोई आ रहा है?

धीरे धीरे शाम होने को आई। अंततः जोर्ज ने इस सच्चाई को स्वीकार करने का साहस दिशाया। अनाथालय में प्रवेश के लिए आवेदन लेकर कोई भी नहीं पहुँचा। सहानुभूति लेकर भी कोई नहीं आया। अपने अनाथालय के बच्चों से तंग सरकारी अनाथालय के कर्मचारी भी नहीं पहुँचे थे।

''मैंने तो तभी कहा था कि अनाथालय चलाना निम्न स्तर का काम है। ब्रिस्टल के लोग अभी इसके लिये तैयार नहीं हुए हैं।'' ''यह किसकी आवाज है? क्या मिठाई दुकान वाले थामस की पत्नी की.....? नहीं, यहाँ तो कोई भी नहीं है।''

जोर्ज मूलर अपना दफतर बंद कर घर की ओर चल पडे।

''मुझसे कहाँ पर गलती हुई? 'तू अपना मूँह खोल और मैं उसे दूँगा.....।' यह तो परमेश्वर की प्रतिज्ञा थी। फिर क्या हुआ? मैंने तो इस प्रतिज्ञा पर विश्वास भी कर लिया था। फिर भी ऐसा क्यों हुआ, मेरी?''

जोर्ज रसोईघर में कुर्सी पर मुँह लटकाकर बैठ गये।

''परमेश्वर ने अब तक हरेक बात में सहायता की है.....है न जोर्ज?''

''हां, मैं ने परमेश्वर से 1000 पौंण्ड मांगा था। मेरे मांगने से ज्यादा परमेश्वर ने मुझे दिया। रसोई के उपकरणों के लिए मैंने प्रार्थना की। एक अनजान व्यक्ति के द्वारा परमेश्वर ने वह मुझ तक पहुँचाया। अध्यापकों के लिए, रसोईये के लिए, अन्य सहायकों के लिए मैने प्रार्थना की। यह सबकुछ परमेश्वर ने दिया। लेकिन इन सब के बावजूद अनाथालय के लिए बच्चे अब तक नहीं मिले।''

''हां जोर्ज, यही कारण है!!'' मेरी अपने स्थान से उछल कर खडी हो गई। जोर्ज आश्चर्य के साथ मेरी की ओर देखने लगे।

''हां, जोर्ज, हमने हर बात के लिए प्रार्थना की। हर छोटी बडी आवश्यकता को परमेश्वर ने पूरा किया। लेकिन बच्चों के लिए तो हमने कभी प्रार्थना नहीं की।''

जोर्ज के मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी। उनको कारण समझ में आ गया। हरेक ावश्यकता के लिए प्रार्थना करते समय भी मन में यही विचार रहता था कि अनाथालय खुलने की देर है, बच्चों की तो लाईन लग जाएगी। इसीलिए बच्चों के लिए प्रार्थना करना वह भूल गये। जोर्ज तुरंत प्रार्थना करने के लिए झुक गये ताकि अपनी गलती को सुधार सके।

अगले दिन प्रातः ही जोर्ज, विल्सन स्ट्रीट के ६ वें नंबर के घर की ओर चल पडे।

घर खोलते हुए उन्हें अहसास हुआ कि दो जोडी आंखें उन्हें देख रहीं हैं। एक युवती और दस वर्ष का एक बालक।

''अरे कभीतो शांत रहा करो। चलो पत्थर फेंक दो।'' वह युवती उस बालक को झिडकने लगी।

''फादर, मैं इस बच्चे को आपके अनाथालय में भर्ती करना चाहती हूँ।'' उसने जोर्ज की ओर देखकर पूछा।

''हां, अंदर आईए।'' जोर्ज जल्दी से दरवाजा कोलकर उन्हे अंदर ले गये। उस बालक के हाथ में तब भी पत्थर था।

उस युवती ने क्षण भर में पूरी कहानी कह सुनाई। जेरी, उसकी मृत बहन का बेटा है। ''उसके पिता?'' वह इधर उधर देखने लगी। जोर्ज ने भी सोचा कि व्यर्थ प्रश्न पूछकर उसे परेशान नहीं किया जाय। वह कल आने वाली थी किन्तु कल उसके 'दोस्त' का अवकाश था इसिलिए वह 'समय नहीं निकाल' पाई।

''आपको कल आना चाहिए था, बहन।'' जोर्ज ने कहा।

''नहीं, ऐसा मत कहिए। क्या एक भी सीट खाली नहीं है। ..... मैं ने उस मूर्ख से कहा था कि मुझे जाने दो।''

''कोई बात नहीं, बहन। आप उतना लेट नहीं हुई हैं। जेरी को यहाँ प्रवेश मिल सकता है। जोर्ज झूठ नहीं बोल सके। उन्होने कहा; बहन, आप ही सबसे पहले आई हैं और जेरी यहाँ का प्रथम निवासी भी। मुझे इस में खुशी है।''

अचानक जोर्ज के पैरों पर कुछ आकर लगा। वह दर्द से तिलमिला उठे। वह क्या है? क्या किसी ने गोली मारी है? नहीं। वह तो जेरी के हाथ से छूटा पत्थर था।

''कोई बात नहीं, पास्टर साहब। वह थोडा शरारती है.....लेकिन अच्छा लडका है।''

इस बात को मान लेने के अलावा जोर्ज के पास के कोई चारा भी तो नहीं था।

''लगता है मैं अंतिम आवेदिका नहीं हूँ'' अपने पीछे पैरों की आहट पाकर उस युवती ने पीछे मुडकर देखा। लगभग आधा दर्जन से

अधिक स्त्रीयो ने कमरे में प्रवेश किया। उनके साथ एक दर्जन से अधिक बच्चे भी थे।

उनमें से कईयों ने यह सोचा था कि अनाथालय के संचालक कोई बुजुर्ग पादरी होंगें।

''आप हीं पास्टर मूलर हैं?'' किसी ने पूछा।

''हमें पास्टर मूलर से मिलना है।'' पीछे से आवाज आई।

''तीस साल के जवान मूलर को देखकर उन्हे सहसा विश्वास नहीं हो रहा था।

जल्द ही जेरी नये बच्चों को लीडर बन गया।

क्टींग.....जेरी के हाथ का पत्थार अब की बार खिडकी के कांच से जा टकराया था।

''अरे, मेरी खिडकी,.....हे परमेश्वर.....।'' जोर्ज ने अपना सिर पीट लिया।

''पास्टर मूलर, आप परेशान क्यों होते हैं। ऐसे बच्चों के लिए ही तो आपने अनाथालय प्रारंभ किया है जेरी के साथ आई उस जोर्ज को सांत्वना दी।

12

1836 अप्रैल 11

विल्सन स्ट्रीट के ६ वें नंबर के मकान में बच्चों का आगमन होने लगा। खाना पकाने वालों और परिचारिकाओं का आगमान हो चुका था। अब से दिन में तीन बार और हफ्ते में सात दिन तीस बच्चों का और अनाथालय के कर्मचारियों का पेट भरना है। तीस जोडी नन्हे पांवों के लिए चप्पल चाहिए। फटे पुराने वस्त्रों के बदले बच्चों को नयी वस्त्र पहनाना है। यदि यह सब कुछ नहीं हुआ तब लोग कैसे जानेंगें कि जोर्ज मूलर का परमेश्वर विश्वासयोग्य है। मूलर ने धीरज नहीं खोया। वह अपने घर के लोगों और अनाथालय के कर्मचारियों के सामने यीशु के वचनों को दुहराता रहा। '..... इसिलिए तुम यह चिंता नहीं करना कि क्या खाओगे, क्या पीओगे या क्या पहनोगे।' यदि तुम परमेशव्र के राज्य और धर्म की खोज करेगे तो ये सारी वस्तएं भी तुम्हे मिल जाएंगी। मत्ती 6:31,33*

जोर्ज मूलर ने चिंता नहीं की। फिर भी समय पर सबकुछ मिलता रहा। सब्जी-भाजी, एक बोरा प्याज, बच्चों केलिए कपडे, एक टोकरी सेब, किराना सामान इत्याति। अवश्यकता के समय उन्हे इसी प्रकार चीजों मिलती रहीं। सितंबर के अंत में ब्रिस्टल के एक डॉक्टर ने बच्चों को मुफ्त चिकित्सा और दवाईयाँ देने का वायदा किया।

विल्सन स्ट्रीट के 6 वें नंबर मकान में सात वर्ष और उसके उपरके बच्चों को ही प्रवेश दिया जाता था। लेकिन बहुत जल्द ही मूलर ने इस सच्चाई को जाना कि सात वर्ष की उम्र से पहले ही बहुत से बच्चे अनाथत्व के शिकार हो जाते हैं। इस सच्चाई ने जोर्ज को प्रेरित किया कि ऐसी छोटी उम्र के बच्चों के लिए भी एक अनाथालय प्रारंभ किया जाय। अगले माह ही जोर्ज ने विल्सन स्ट्रीट के पहले नंबर मकान को भी किरायो े पर ले लिया।

1836 नवंबर 28 तारीख को सात वर्ष से कम उम्र के बच्चों का अ ाथालय भी प्रारंभ हो गया।

एक वर्ष बीत गया। सन् 1837 जून 11 तारीख को दोनों अनाथालयों में बच्चों की संख्या 60 से भी अधिक तक पहुँच गयी। जोर्ज ने महसूस किया कि एक और भवन किराये पर लेने की आवश्यकता है। अपनी आदत के अनुसार वह प्रार्थना करने बैठ गये। अक्टूबर 21 को किसी ने जोर्ज से मकान देने का वायदा किया। विल्सन स्ट्रीट में ही तीसरे नंबर का भवन।

1837 नवंबर १

जोर्ज मूलर पुनः बीमार पड गये। इस बार एक छोटे से सिर दर्द से उनकी बीमारी प्रारंभ हूई। जोर्ज को लगा जैसे उनका सिर फटा जा रहा हो। डॉक्टरों ने उन्हे सलाह दी कि वे कुछ दन आराम करने के लिए ब्रिस्टल से बाहर चले चाएं। क्योंखी ब्रिस्टल का खराब मौसम ही उनके बीमारी का कारण है।

किन्तु अनाथालय के धन का उपयोग स्वयं की आवश्यकता के करना उन्हे पसंद नहीं था। इसी मानसिक संघर्ष के दौरान किसी ने जो अपना नाम गुप्त रखना चाहते थे, पांच पौण्ड भेजा। उसके

साथ एक पर्ची भी थी जिसपर लिखा था -- ''यह धन आप की व्यक्तिगत आवश्यकता के लिए है।'' इस घटना को परमेश्वर की ओर से एक चिन्ह मानकर वे एक सफताह के विश्राम के लिए 'बेथ' नामक स्थान पर गये। पाँच पौंण्ड उनके एक हफ्ते के खर्च के लिए पर्याप्त था।

वापस आने के बाद भी जोर्ज का स्वास्थ्य ठीक नहीं हूआ था। पुनः उन्हे कहीं से 5 पौंण्ड व्यक्तिगत खर्च के लिए मिले। जिससे उन्होंने वेस्टन मेयर जाकर दस दिन विश्राम किया। वापस आने के बाद चिकित्सकों ने पुनः जोर्ज का परीक्षण किया। जोर्ज को लगा कि संभव है कि बहुत जल्द ही उनकी मृत्यु हो जाय। एक चिकित्सा विषेशज्ञ ने उनका परीक्षण कर बताया कि उनका लिवर काम नहीं कर रहा है।

जोर्ज आराम नहीं कर सकते थे। उस वर्ष के अंत तक उन के उपर काफी जिम्मेवारियाँ आ गई थी। वर्षात में तीन अनाथालयों में कुल 81 बच्चे और ९ कर्मचारी रह रहे थे। इसके अलावा वेद विज्ञान पीठ के फई स्कूल में 350 विद्यार्थी और 320 विद्यार्थी केवल रविवारिय कक्षाओं में अध्ययन हेतु आते थे। बीमारी के कारण पस्त होने के बावजूद मूलर परिवार अपने समर्पण से पीछे नहीं हटा। वे स्वयं अपने दायित्वों को निभाते रहे।

और दो तीन माह बिना किसी विशेष परेशान के निकल गये। लेकिन परिस्थितियों में परिवर्तन नजर आने लगा था। जोर्ज का बटुआ हल्का होने लगा।

1838 अगस्त 18

''अनाथालय के लिय आज मेरे पास एक पैसा भी नहीं है। एक दो दिन में काफी धन की आवश्यकता होने वाली है।''

ऐसा नहीं था कि जोर्ज का बटुआ पहली बार हल्का हो रहा हो।

टेन मौथ में रहते समय भी उनके साथ ऐसा कई बार हो चुका था जब वहाँ के डीकन तोन्सबरी स्वेच्छा-दानपेटी को की दिनों तक

नहीं खोलते थे।

किन्तु तब जोर्ज और मेरी ही उस अभाव का सामना करते थे। लेकिन अब पिरस्थिति भिन्न है। इस समय ९६ अनाथ बच्चे जोर्ज के विश्वास पर आश्रित हैं।

''हे प्रभु, छोटे बच्चों के अनाथालय में आज 10 पौंड की आवश्यकता है।'' जोर्ज ने परमेश्वर की ओर अपनी आंखों को उठाया।'' बैंक में जो कुछ भी था वह सब मैं उन्हे दे चुका हूँ। पाँच पौंड मेरे पास है....और पाँ पौंड की आवश्यकत है। आज ही.....। मैं इस के लिए केवल तुझ पर ही आश्रित हूँ।''

द्वार की घंटी बजी। ''इस समय कौन हो सकता है? कोई जान पहचान वाला या फिर कोई अनजान व्यक्ति! ''किमती परफयूम के सुगंध से ही जोर्ज समझ गया कि द्वार खोलने पर कीमती वस्त्रों में सजी एक युवती से उसका सामना होने वाला है।

''भाई मूलर, परमेश्वर ने मुझसे कहा, कि मैं अपने सोने के गहने वगैरह उतार दूँ। और जब मैं ने उन्हे उतार दिया तब पुनः परमश्वर ने मुझस कहा कि मैं उसे बेचकर जरूरतमंदों की सहायता करूँ। तुरंत ही मुझे आपके अनाथालय की याद आयी। बहुत अधिक तो नहीं है सिर्फ पाँच पौड और कुछ शिलिंग है.....।'' उसने संकोच के साथ कहा।

जोर्ज स्तब्ध खडा रह गया। उन्होने कहा,'' हां, बहुत अधिक तो नहीं है पर अभी की आवश्यकता के लिए काफी है।''

''भाई मूलर, यब वहुत अधिक नहीं है। सिर्फ पाँच ही है।'' मूलर के चेहरे की चमक को देखकर उसने सोचा कि सायद मूलर ने गलत सुन लिया हो।

''नहीं बहन, पाँ पौंड से भी बहुत अधिक। क्योंकि यह मेरी प्रार्थना का उत्तर है।'' जोर्ज के चेहरे की चमक और बढ़ गयी थी।।

अगले सफताह धन के आमद की रफतार बहुत कम थी। ''अभई हमारे विश्वास की परख हो रही थी किन्तु तब भी परमश्वर हमारी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करता रहा। कई बार परमेश्वर हमारी

प्रार्थनाओं का उत्तर अंतिम समय में देता है।''

सितंबर 5

जोर्ज मूलर

लेकिन हेनरी का तर्क था कि लोंगों को अपनी आवश्यकताओं से अवगत नहीं कराने के कारण ही यह सारी कठिनाईयाँ हैं।

''जोर्ज एक तरहसे तो तुमने सबकुछ बरबाद कर दिया है। पहले से ही तुमने गोषणा कर दी कि किसी से कुछ नहीं मांगोगे। बिना तुम्हारी आवस्यकताओं को जाने कोई कैसे तुम्हारी सहायता कर सकता है?'' हेनरी ने अपना विचार रखा।

''हेनरी, परमेश्वर के मार्ग वह नहीं हैं जैसा आप सोच रहें हैं।'' जोर्ज ने हेनरी को बीच में ही रोककर कहा। ''मै किसी से भी धन के लिए अपील नहीं करूंगा। ऐसा करूँगा तब फिर विश्वास से जीने का मतलब क्या रह जाएगा? मुझे संसार के सामने यह प्रमाणित कर दिखाना है कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है। यदि मैं धन इकठ्ठा करने के लिए धूमता रहूँगा तब फिर विश्वास जीवन का महत्व क्या रह जाएगा? मैं परमेश्वर से मांगूगा। बस, इतना काफी है।''

''लेकिन, जोर्ज! हम सांसारिक लोगों से नहीं वल्कि विश्ववासियों से धन मांगेंगें। वे लोग सहायता करने से खुश भी होंगे। हमें केवल इतना करना है कि हम उन्हे बतायें कि हम यहाँ क्या कर रहें हैं। हमारी आर्थिक स्थिति कैसी है।''

''नहीं.....।'' जोर्ज, हेनरी के विचार सुनकर बौखला गया। वह हेनरी से कतई सहमत नहीं हो सकता था।

''लेकिन, देखो जोर्ज! यह मजाक नहीं है।। हमें लगभग सौ बच्चों की देखरेख करनी है। अपने घर की बात होती तो शायद सारा अभाव सह लेते। जहां तक अनाथालय की बात है इसमें ऐसी गौरजिम्मेदारी नहीं चलेगी। अपने अनाथालय प्रारंभ किया था तब क्या क्या डींग हांक रहे थे? उन्हें पारिवारिक माहौल में पालेंगें। हम उनके लिए पिता समान होंगे।''

''अनाथों के लिए वह एक अच्छा पिता है।'' जोर्ज बुदबुदाया।

''हां, यही तो मैं कह रहा हूँ कि हम थोडी और जिम्मेदारी का अहसास करें।'' हेनरी ने अपनी बात को सही ठहराने का प्रयास किया।

''अनाथों का पिता कौन है? क्या मैं? नहीं, कभी नहीं .....। स्वर्ग का परमेश्वर ही उनका पिता है। सारी जिम्मेदारी उसकी है। वही उनका पालन पोषण करेगा।'' जोर्ज ने कहा।

''किसने कहा कि पालन पोषण नहीं करेगा?'' हेनरी ने पलटकर पूछा। ''निश्चय ही वह देखभाल करेगा। परन्तु किसी के माध्यम से ही न? हर कार्य के लिए कोई न कोई माध्यय चाहिए न?''

''हां, लेकिन हेनरी, उस माध्यम को निश्चित करने का अधिकार परमेश्वर का है। जोर्ज मूलर का नहीं। देखो हेनरी, अभी तक परमेश्वर ने अपनी विश्वासयोग्यता दिखाई है। वह अविश्वासयोग्य नहीं हो सकता। मैं प्रार्थना करूँगा और परमेश्वर धन देगा।''

''हां, परमेश्वर अवश्य धन दैगा।'' हेनरी जाने के लिए उठा। ''लेकिन जिस प्रकार धन आयेगा उसी प्रकार खर्च भी हो जाेगा। कभी कभी तो आय से अधिक खर्च होगा। तब क्या करेगे, जोर्ज ? हेनरी उठकर बाहर की ओर जाने लगा। जाते जाते उसने कहा,'' अभी भी कुछ कर्मचारियों का तन्ख्वाह बकाया है..... है न जोर्ज?

हेनरी चला गया। वह ठीक ही तो कह रहा थे। कुछ कर्मचारियों का तनख्वाह अभी बाकाया है।

कुछ देर बाद बालकावास के अधिकारी भाई टोरन्स जोर्ज से मिलने पहुँचे। उन्होने अपनी जेब से कुछ सिक्के निकालकर जोर्ज के मेज पर रखे। ुस दिन पाँच व्यक्तिअलग-अलग समय पर आनाथालय देखने आये थे और उन्होने कुछ धन भी दिये थे। यद्यपि सबने छोटी-छोटी राशि दान दी थी। फिर भी जोडने पर वह एक बडी राशि बन गई। जोर् उस धन को अपने बटुए में रखने लगा।

''अरे, मैं सोच रहा था कि यह धन आप अनाथालय के खर्च

के लिए देंगें।'' भाई टोरन्स ने कहा। ''कल किराना दुकान में पैसा देना है। यह पैसा मिल जाता तो.....।''

''आज के लिए आज का दुःख काफी है, टोरन्स भाई। आज कुछ भुगतान बाकी है। मैं उस के लिए प्रार्थना कर रहा था। पहले मुझे अपने सहायोगियों का भुगतान करने दो। किराना दुकान का भूगतान कल करना है न? उसके लिए परमेश्वर कल प्रबंध करेगा।''

हेनरी का कहना भी गलत नहीं था। जोर्ज प्रार्थना करते और धन मिलता लेकिन वह जल्द ही खत्म भी हो जाता।

1838 सितंबर 10

बाहर जोरदार बारिश हो रही थी। कल भी दिनभर बारिश होती रही थी। जोर्ज का सुस्त दिमाग विचारों का आहट पाकर गर्म होने लगा। 'इस सेवकाई की सफलता में मेरे सहयोगियों का योगदान क्या है? निश्चय ही वे सभी विश्वासयोग्य हैं। उनमें मसीही समर्पण है। लेकिन क्या वे िसके प्रबंध के बारे में जानते हैं? मैं प्रार्थना करता हूँ और परमेश्वर धन का प्रबंध करता है। अभी तक कर्मचारियों का तन्ख्वाह समय पर दिया जाता रहा है। सारी जिम्मेवारियां अभी तक मेरे कंधों पर ही रही है। केवल मैं ही सारी समस्याओं को जानता रहा हूँ। इसिलिए मैं ही हमेसा हर आवश्यकता के लिए प्रार्थना करता रहा हूँ। क्या वर्तमान आर्थिक स्थिति के बारे में उन्हे नहीं बताना चाहिए?''

तब भी जोर्ज के मन में एख शंका बनी रही। ''क्या अपने सहयोगी कर्मचारियों को वर्तमान परिस्थिति से अवगत कराना उनसे धन के लिए अपील करने के समान होगा?''

जोर्ज ने महसूस किया कि वे केवल कर्मचारी ही नहीं हैं. इस सेवा में जोर्ज के सहयोगी हैं। ऐसी स्थिति में सारी परिस्थितियों से ्वगत होना उनका अधिकार ह। उन्हे न बताना उनके साथ एत तरह का विश्वासघात होगा। तुरंत ही जोर्ज ने एक स्टाफ मीटिंग बुलाी।

''दोस्तों, मैं खेदपूर्वक कुछ आवस्यक तथ्यों को आपको बताना

चाहता हूँ।'' जोर्ज ने कहना प्रारंभ किया।'' सभी ने जोर्ज की बात को सुनने के लिए ध्यान लगाया। वे अपने मनों में सोचने लगे कि कहीं जोर्ज अनाथालय बंद करने का विचार तो नहीं कर रहें है। जोर्ज ने उन्हे सबकुछ विस्तृत रूप से बताया यदि परमेश्वर ने हम अपनी अनंत करूणा की वर्षा नहीं की तब अगले दिन अनाथालय अनाथ हो जाएगा।

सबकुछ सुननें के बाद ए महिला कर्मचारी उठी।

''क्यों न हम अपने खर्च में थोडी कटौती करें।'' उसने पूछा।

''वह कैसे, बहन? अभी भी हम अनाश्वयक चीजों के लिए एक पैसा भी बरबाद नहीं करते हैं।'' जोर्ज ने कहा।

''किन्तु मुझे ऐसा नहीं लगता है, मूलर.....यदि हम चाहें तो खर्च में थोडी कटोती अवश्य कर सकते है। उदाहरण के लिए; अभी आप मुझे तन्ख्वाह देते हैं। मुझे तन्ख्वाह न दें। मुझे सरकार की ओर से विधवा पेंशन मिलता है। फिर मै तनख्वाह लेकर क्या करूँगी?'' उस महीला ने कहा।

''बहन, मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं था कि आप तन्ख्वाह लेना छोड दें। मैं तो केवल इतना चाह रहा था कि आप लोग भी यहाँ की स्थिति को जानें और प्रार्थना करें।'' जोर्ज ने कहा।

फिर भी, पास्टर मूलर। मैं सोचती हुँ कि मेरी तन्ख्वाह अनाथालय के लिए एक अनावस्यक खर्च है। मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है। उस महिला ने दृढ शब्दों मं कहा। ''पास्टर मूलर'' पीछे वाले बेंच से बालकावास की देखरेख करने वाला भाई उठकर आगे आया। ''मैं कुछ समय प्रार्थना करने के लिए उपर जा रहा हूँ। उससे पहले आप इन पौसों को ले लें।'' उन्होने कुछ सिक्कों को मेज पर रखा।

''नहीं भाी, मैं तो केवल यह चाह रहा था कि.....।'' जोर्ज ने कहना चाहा।

''पास्टर मूलर, मैं यह प्रार्थना करने जा रहा हूँ कि परमेश्वर अपने अनाथालय की दैनिक आवश्यक्ताओं को पूरा करे। अपने पास

यह धन रखकर आवश्यक्तओं के निर्वहन के लिए प्रार्थना करना ढोंग ही होगा।'' वे धीरे धीरे सीढी चढकर उपर जाने लगे।

तभी छोटे बच्चों के लिए खाना पकाने वाला नाटा व्यक्ति उठकर सामने आया।'' श्रीमान्, मेरी तरफ से यह ६ पौंड! मैं ने बहुत दिनों में इसे इकठ्टा किया है। कृपया इसे स्वीकार करें। मुझे जाने दें। मुझे रसोई में काम है। बच्चों के लिए सूप बनना है। जब तक सूप गरम होता है मैं थोडी देर प्रार्थना में बैठ सकता हूँ।''

स्टाफ मीटिंग समाप्त हुआ। जोर्ज ने जो घन एकत्र हुआ था उसे गिनकर देखा। दो दिन का किराना सामान और रोटी खरीदने कि लिए यह धन पर्याप्त था।

सफताह के समाप्त होते होते परिस्थितियां पुनः पहले जैसी हो गयीं। जोर्ज मूलर का बटुआ पुनः खली हो गया। उससे भी अधिक अनाथालय के कुछ रहवासियों का व्यवहार जोर्ज को बुरा लगा। किसी से जोर्ज ने किताबों की एक अलमारी हटाने में सहायता करने के लिए कहा किन्तु वह अनसुनी करके किसी और काम में जुट गया। दोपहर के बाद जोर्ज ने कुछ कर्मचारियों को कुछ सामानों के साथ अनातालय से बाहर जाते देखा। जोर्ज ने जब बच्चों की परिचारिका को बुलाना चाहा तब उसे तेच गति से बाहर जाते देखा।

उस रात जोर्ज ने अनाथालय से ही भोजन किया। भोजन के पश्चात् एक युवा कर्मचारी ने खडे होकर कुछ्कुछ कहा। उसकी बातों का सार था कि अनाथालय के लिए जोर्ज मूलर ही नहीं वे भी प्रार्थना कर रहें हैं और परमेश्वर अनाथालय को बहुत अच्छी रीति से चलायेगा। अंत में उसने जोर्ज के हाथों में एक लिफाफा रखा जिसमें कुछ पौंड थे।

''यह पैसे कहां से आये?'' आस्चर्य से जोर्ज ने पूछा। ''आप लोगों के पास जो कुछ भी था उसे कल ही आप लोगों ने मुझे दे दिया था। फिर यह पैसे कहाँ से आये?''

''यह आपकी प्रार्थनाओं का उत्तर है। उस युवक ने कहा। ''परमेश्वर नहीं चाहता कि यह अनाथालय बंद हो जाय।''

''फिर भी कहाँ से.....?''

''पास्टर मूलर, यह आपकी प्रार्थना का उत्तर है.....।''

''ठीक है, लेकिन यह तो बताओ कि यह धन आया कहाँ से.....।''

''हमारे पास कुछ गैर जरूरी वस्तुएं थी.....।'' पीछे के बेंच से उठकर एक व्यक्ति ने कहा। ''कुछ चाँदी के बर्तन और कुछ फर्नीचर और दीवाल पर टांगन वाले कुछ चित्र.....।''

''.....तो आप लोगों ने उसे बेच दिया?''

''पास्टर मूलर, वे वस्तुएं हमारे उपयोग की नहीं थी। हम भी तो जरा विश्वास जीवनें रोमांच का अनुभव करें।''

''विश्वास जीवन का रोमांच.....।''

''हां, प्रार्थना करने और परमेश्वर से पाने का वह रोमांच हमें भी अनुभव करने दीजिए पास्टर मूलर।''

वह धन भी कुछ दिनों बाद समाप्त हो गया। सितंबर १८ तारीख को जोर्ज के पास एक शिलंग भी बाकी नहीं था। इस बार जोर्ज मूलर का ही नहीं उनके सहयोगियों का बठुआ भी खाली था। अनाथालय में किसी भी व्यक्ति के पास एक शिलिंग भी शेष नहीं था।

मूलर अपने अध्ययन कक्ष में अकेले बैठे हुए थे। सहसा एक स्त्री द्वार खोलकर भीतर आई।

''पास्टर मूलर, वे लोग कह रहें हैं कि आप बहुत व्यस्त है। लेकिन मैं भी कितनी देर इंतजार करूँ। यदि मैने बिना अनुमति के अंदर आकर कोई गलती की है तो कृपया मुझे क्षमा करें। मैं काफी देर से बाहर इंतजार कर रही थी। मैं इंग्लँड से एक रिश्तेदार से मिलने आई हूँ। यहीं पास ही रह हूँ। ब्रिस्टल, इंग्लँड जैसा नहीं है। यह कितना सुंदर शहर है। है न पास्टर ? आपको क्या लगता है?''

मूलर अचानक आये इस मोहमान को देखकर और उनकी

बेलगाम बातें सुनकर घबरा गये। इनका उद्देश्य क्या है? वह सोचने लगे।

''यदि आप चाहें तो अनाथलय के बच्चों से मिल सकती हैं। मैं किसी को आप के साथ भेज देता हूँ। ''मूलर ने उनसे मुक्ति पाने के इरादे से कहा।

''हां, हां। अवश्य। मैं आपका अनाथालय अवश्य देखना चाहूंगी। किन्तु उससे पहले एक काम की बात हो चाय। दरअसल मेरे बटुए में आपके अनाथालय के लिए कुछ पैसे हैं। पहले आप उसे स्वीकार कर लें।''

उस स्त्री ने कुछ नोट निकालकर मेज पर रखा। जोर्ज ने देखा, ''वह धन तीनों अनाथालयकेदो सफताह के खर्च के लिए पर्याप्त था।''

''मुझे यह घन पहले ही पहुँचा देना चाहिए था। पाँच दिन से मैं आपके पडोस में रह रही हूँ। मैं कई बार आपसे मिलने आई लेकिन आप व्यस्त थे। कल जब मैं आई तो कुछ लोग बडी तेजी से कुछ सामान लेकर इधर उधर जा रहे थे। शायद आप लोग कहीं पिकनिक जा रहे थे।''

''बहन, हमें यहाँ पिकनिक के लिए समय नहीं मिल पाता।'' जोर्ज को कल की घटना याद आई जब कुछ कर्मचारियों ने अपनी गैरजरूरी वस्तुएं ले जाकर बेच दी थी। ''आपने कहा कि आप इस धन के साथ पिछले पाँ दिनों से हमारे पडोस के घर में रह रहीं हैं। और इन पाँच दिनों में हम कुछ व्यस्त हो गये थे। आखिर इस धन को यहाँ वहुँचाना जो था।''

मूलर के अधरों पर मुस्कुराहट खेलने लगी। उस महिला को कुछ भी समझ में नहीं आया। जोर्ज कल की घटना का वर्णन करने लगे।

सन् 1832 में हेनरी क्रेक के सहायक पास्टर के रूप में गिडियन चैपल में सेवा करने के लिए मूलर सपरिवार ब्रिस्टल आये थे। उस समय गिडियन चैपल में मात्र 60 सदस्य ही थे। किन्तु एक वर्ष के अंतराल मे वहाँ की सदस्य संख्या बढकर 120 के आसपास हो गयी थी। उसी वर्ष उन्होने बेतसैदा चैपल की सेव को

13

1843

जोर्ज मूलर के अनाथालय को सात वर्ष हो चुके थे!! परमेश्वर प्रतिदिन का भोजन उन्हे देता रहा। जोर्ज को लगा कि यद्यपि परमेश्वर का भंडार समुद्र की भांति विशाल है फिर भी परमेश्वर उसे छोटे नालों से होकर हम तक पहुँचाता है। परमेश्वर ने कभी भी अनाथालय में अति-समृद्धि नहीं दी। प्रतिदिन का भोजन वह उन्हे देता रहा!! उनकी रोज की जरूरत परमेश्वर की कृपा से पूरी होती रही। ''हमारा दयालु पिता हमें दरिद्र ही रखता है। इसमें उसका क्रोध नहीं बल्कि उसकी दया दिखाई देती है। वह हमें इसिलिए दरिद्र ही रखता है ताकि उस पर हमारा आश्रय सदैव बना रहे।''

परमेश्वर ने जब उन्हे अतिसमृद्धि नहीं दिया तो अति दरिद्रता भी नहीं दिया। उन्होने परमेश्वर की ओर देखा था इसिलिए उसने उन्हे लज्जित होने नहीं दिया।

नवंबर का एक दिन।

मूलर का बटुआ खाली था। अनाथालय के कर्मचारियों के साथ जोर्ज प्रार्थना करने बैठे। ''जोर्ज को दृढं निश्चय मिला कि परमेश्वर सहायता भेजेगा। प्रार्थना करके जब वे उठे तब उन्होने देखा कि एक लिफाफा रखा है। वह लिफाफा उस दिन के डाक में आया था। मेरी चुपचाप उसे भेज पर रख कर चली गई थी ताकि प्रार्थना में बाधा न पहुँचे। मूलर ने लिफाफा खोला। दस पौण्ड!! लगभग एक सफ्ताह तक अनाथालय में भोजन के लिए आवश्यक धन!!

किसी दूसरे दिन.....

बालकों के आवास में रात के भोजन के लिए आठ पेनी चाहिए -- उनके पास सात पेनी ही था। केवल एक पेनी कम है। एक व्यक्ति लड़िकयों के आवास की ओर गये। वहाँ कुछ पैसे बचे हैं? लड़कियों के आवास में भेंट की पेटी में कुछ बज रहा है। उन्होने उसे खोलकर देखा--मात्र एक पेनी!! लेकिन बालकों के रात के भोजन के लिए वह ''एक पेनी' अत्यंत उपयोगी था।

एक शनिवार की रात।

तीनों अनाथालय के भंडार गृह खाली थे। रविवार को बच्चे क्या खाएंगें?

जोर्ज के एक मित्र उस दिन अनाथालय के दौरे पर आये। भंडारगृह के खालीपन के बारे में जोर्ज ने उनसे एक शब्द भी नहीं कहा। किन्तु जाते समय उन्होने जोर्ज को कुछ भेंट दिये। रात के आठ बज गये थे जब जोर्ज के मित्र ने उन से विदा ली। नौ बजे दुकानें बंद हो जाती थी। यदि आधा घंटा और देरी हो जाती अगली सुबह लगभग सौ बच्चों को भूखा रहना पड जाता।

एक शाम मूलर ने अपनी डायरी में लिखा। यदि कल सुबह नौ बजे तक परमेश्वर सहाता नहीं करता है तो परमेश्वर के नाम की निंदा होगी।

सुबह आठ बजे ब्रिस्टल के एक व्यापारी ने अपने दुकान जाते

समय आकर तीन शिलिंग भेंट दी। वह तीन शिलिंग उस समय उनके लिए एक बहुत बड़ी रकम थी।

हर समय इसी प्रकार होता रहा। हर अनुभव में परमेश्वर जो रोमांच देता है उसे याद कर मूलर मुस्कुराये बिना नहीं रह साक।

नवंबर 1843

''परमेश्वर ऐसे ही मार्ग से होकर हमें चलाता है! इस समय सौ अनाथ बच्चे यहाँ रकहे हैं। प्रार्थन मात्र ही के द्वारा उन्हे भोजन, वस्त्र और शिक्षा देने के लिए परमेश्वर हमें सामर्थ देता है। पिछले सात वर्षो से परमेश्वर हमारा पालन पोषण कर रहा है।''

ब्रिस्टल में रहने वाले अपने एक रिश्तेदार के घर में आयी महिला से जोर्ज ने अनाथालय के संचालन के बारे में बातचीत की। वह भी तब जब उन्होंनें सब कुछ जानने की इच्छा प्रगट की। वह पॉल स्ट्रीट में जोर्ज के भवन में मुलाकात के लिए आयी हुई थी ।

सब कुछ सुनने के बाद भी उनके चेहरे के भाव में कोई परिवर्त नहीं आया ।

''श्रीमानय मूलर, मैं शाम की गड़ी से जा रही हूं । मैं अपना शाल आपके डायनिग रूम में भूल आई हू । कृपया उसे मंगवा दीजिए । ..... ठंड से बचने के लिए मेरे पास एक ही शाल है..... ।''

''मुक्षो जाना ही होगा । आप लोगों के साथ भोजन करे मुक्षो भी खुशी होती किन्तु क्या कंरू ?..... आप लोगों के अतिथ्य सत्कार के बाद तो पेट में जारा सी भी जगह नहीं बची है । आज तो मैं दैन में भी कुछ नहीं लूंगी । आपने मेरा वह पैसा भी बचा दिया ।''

''....ठंड से बचने के लिए मेरे पास एक ही शाल है ..... रास्ते में मैं अब कुछ नहीं लूंगी.....।'' उस गोरी, दूबली महिला पर जॅर्ज को तरस आया । ''बहन'', जॅर्ज उनके पास जाकर धीमि आवाज में उन्हे पुकारा । ''मैं जब भी किसी नई जिम्मेवारी को लेता

हूँ तब परमेश्वर मेरे लिए नया माग खोलता है । श्रीमती ब्रैटमान, मैं आपको भी अपनी जिम्मेवारियों की सूची में शामिल करता चाहता हूं । हमारे पास जो भी है उसे आपके साथ बांटने के लिए हम तैयार हैं । आज से हमारा बदुआ साक्षे का होगा....।''

''क्या हुआ, श्रीमान् मूलर ? अपने ऐसा क्यों कहा ? उन्हे मुलर की बात समक्ष में नहीं आयी ।''

''मैंने यह बात आज तक अपनी पत्नी से और अनाथालय के बच्चों से ही कही है ।

''श्रीमान् मूलर'', वह रत्नी मेज पर हाथ रखकर खड़ी हुई । आप जैसा सोच रहें है, वैसा नहीं कतई नहीं है । मैं एक गरीब रत्नी नहीं हूं । मेरा हुआ है इसिलिए मैने कहा कि मैं दें्न से कुछ नहीं लूंगी । अब और खाउंगी तो जरूर अपच हो जाएगा । पौसे की कभी के कारण नहीं । रही शॅल की बात । वह मेरे पति ने अपनी मृत्यु से पूर्व मुझो हमारी शादी की सालगिरह पर दी थी । मुझो हमारी शादी की सालगिरह पर दी थी । मुक्षो याद नहीं कि मुझे जीवन में कभी धन की कभी महसूस हुई हो । पिछले दिनों ही हमारे पाखिरिक संपत्ति का बंटवारा हुआ और मेरे इस्से में 500 पौंड आया है । कुल मिलाकर यदि कहूं तो मैं आपकी सोच से भी अधिक धनी हुं । ''

जॅर्ज से कुछ कहते नहीं बना । उन्होने कभी किसी से ऐसा नहीं कहा था - साझा बटुआ - ''मैं ने इस रत्नी से ऐसा क्यों कहा ?'' अंततः उस रत्न ने ही मौन तोडा

''कुछ भी हो, मुझे आपका विचार बहुत पसंद आया । मेरे ईस्से में जो 500 पौंड आया है उसे जमा करने के विबय मे सलाह लेने के लिए भी मैं आई थी ।''

''श्रीमती ब्रैटमान ने मूलर परिवार से विदा लिया । वह अपना शॉल ले जाना नहीं भुली । कुछ महीनों बाद जॅर्ज को उनका पत्र मिला ।

''श्रीमान् मूलर, मैं आपके विचारों की महानता को महसूस कर नहीं हूं । मैं इसे स्वीकार करती हुं - एक साझा बदुआ । मेरा 500 पौंड..... उसे आपके साथ बंटने के लिए परमेश्वर ने मुक्षसे कहा । बहुत जल्द ही वह ब्रिस्टल के आपके बैंक के खाते में पहुंच जाऐगा... ।''

1843 !

इस समय तीनों अनाखालय में सौ बच्चे रहते हैं । और बच्चों के प्रवेश के लिए काफी अवेदन आये हुए थे ।

एक दिन बालिकाओं की परचारिका ने मूलर से कहा, मर, विल्सन् स्दीट का 4 नंबर का धर खाली हो रहा है । उन्होने कहा है कि यादि हम चाहें तो उसे किराये पर ले सकते हैं । मैं ने उनसे कह दिया कि अभी पैसे की कठिनाई होने के कारण किराये पर नहीं लो पाएंगों ।''

जॉर्ज को आश्चर्य हुआ । तीन ही उनाथालय होने के कारण अभी भी कई बच्चों को प्रवेश नहीं दिया जा रहा है ऐसे है । ऐ से ही समय पर इसी गली में एक और धर किराये पर मिलना....!! क्या श्रीमती ब्रैटमान का 500 पौंड अनाथालय के मूल के लिए मूलधन हौ ?

मूलर तुरंत कोई निर्णय लेने के पक्ष में नहीं था । उन्होने उस विषय को परमेश्वर के सम्मुख रखा । परमेश्वर की ओर से एक स्पष्ट 'चिन्ह' के लिए इंतजार किया ।

जॉर्ज अपने छोटे से बगीचे में टहलते हुए प्रार्थना करते रहे । रात की बारिश से जमीन बहूत गीली हो गई थी । शायद इसिलिए हेनरी के आने की आहट जॉर्ज को सुनाई नहीं दी ।

''क्या हुआ जवान ? जरा धूप का इंतजार तो किया होता ... जमीन सूख जाती, फिर टहलते । लगता है सुबह से चहलकदमी हो रही है । कीचड़ सने चप्पल देखेगी तो मेरी धर में धुसने नहीं देगी ।'' हेनरी ने अपने निराले अंदाज में जॉर्ज का इभिवादन किया

।

''अगर किसी को फिसलना हो तो ब्रिस्टल में इससे अच्छी जगह और कहीं नहीं मिलेगी । ..... और प्रार्थना करने के लिए भी ....। '' जॉर्ज ने हेनारी के अभिवादन का उत्तर दिया । ''मैं एक दुढ निर्णय लेने का प्रयास कर रहा हूं । '' जॉर्ज ने कहा ।

''अच्छा तो यह बात है ... अभी तक तुम निर्णय नहीं ले सके ? इसमें इतना सोचना क्या है ? उस धर को किराये पर मत लो । क्यों नये नये बोझ अपने उपर लादना ?

जॉर्ज मैं जानता हूं कि तुम अभी ही बहुत थके हूए हो । मैं यह भी जानता हूं कि तुम मेरी बात नहीं मानोगे । नहीं जॉर्ज..... एक और अनाथालय नहीं.....।''

''मेरा रिर्णय यह नहीं है ।''

''फिर किस बात की देरी है? क्या बच्चे नहीं मिल रहे हैं ? ब्रिस्टल में अनाथ बच्चों की कोई कभी नहीं हो सकती ।''

''हेनरी, मैं परमेश्वर से एक चिन्ह मिलने का इंतजार कर रहा हूं । यादि वह मिल जाता है तो नये अनाथालय का कार्य शीध्र प्रारंभ हो सकता है । ''

''यह तो बड़े आश्चर्य की बात है ।''

हेनरी एक पेड़ के सहारे टिक कर ख़ड़े हो गये । मैने सोचा कि इन सात सालों मों तुमने जीना सीख लिया होगा । विश्राम रहित जिंदगी, अपनी दैनिक अवश्यकताओं के लिए परमेश्वर की ओर ताकना ..... आर्थिक अस्थिरता विरवास जीवन के इस परीझण से तुम तंग नहीं हुए, जॉर्ज । ''

''हाय, मुझे चिन्ह मिल गया....।'' जॉर्ज ने अपने हाथों को उपर की ओर उठाया ।

''कहां.....? कहां है चिन्ह.....? मुक्षो तो यहां कोई बिजली का कौंधन या बादलों की गड़गड़ाहट दिखाई नहीं दे रही है । ''हेनरी

ने अश्चयई व्याप्त किया ।

''हेनरी, आप ही हैं मेरे लिए परमेश्वर का चिन्ह .....। आप ने क्या कहा ?..... विश्वास जीवन का परिझाण.....मैं इससे तंग नहीं हुआ ? आवश्यक्ताओं के लिए परमेश्वर की और ताकना.....। क्या आपने हय सोचा कि विरवास जीवन जीते जीते मैं परमेश्वर पर अविश्वास करने लगा ? यही तो मोरा चिन्ह है । मुझो यह प्रामाणित करता है कि विरवास जीवन पराजय नहीं हैं । संसार इस बात को जान जाय कि विश्वास जीवन आज भी संभव है । परमेश्वर का हाथ एसा छोटा नहीं हो गया है कि सहायता न कर सके । मैं विल्सन स्टीट के ४ नंबर का भवन किराये पर लेने जा रहा हूं । ''

1844

जुलाई की एक तपती दुपहरी में नये बच्चों ने विल्सन स्दीट के 4 नंबर के भवन में प्रवेश किया । तांबइ रंग के बालों वाली दो छोटी लचड़कियां अपनी मैलि गुड़िया को अपनी छाती से चिवकाये हुए थी । एक बच्चा नाक पोंछना भूल गया था । एक और बच्चा अपनी टुटी हुई बांसूरी से संगीत निकालने का प्रयास कर रहा था । द्रार पर खडे होकर जॉर्ज प्रत्येक बच्चे के सिर पर हाथ फेरकर उनका स्वागत कर रहा था । उनके चेहरे पर आनंद के भाव थे । हेनरी केक जॉर्ज से अधिक प्रसन्न दिखाई दे रहे थे । अपने मित्र को विश्वास जीवन में विजयी होते देखकर उन्हे गर्व का अहसास हो रहा था ।

चारों अनाथालय में कूल मिलाकर 150 बच्चे थे । इसे अलावा धर्म विक्षान विधापीठ की गतिविधियां भि थी । दोनों नविवारीय कक्षाओं में सैकड़ों बच्चे परमेश्वर के वचन का अध्ययन कर रहे थे । वयस्कों के बिधालाय में लगभग 400 व्यक्ति अक्षर - झान पा रहे थे । उनके लिए आवश्यक पूस्तकें और अन्य बस्तुएं मुफ्त में ही दी जाती थी । कई बार वयस्क छात्र भी उद्दार के अनुभव में आते थे । इन सारी गतिविधियों के अलवा छः मुफ्त दिधालय भी उनकी गतिविधि में शामिल थे । इन विधालयों के संचालन के

लिए मुलर को इस बात नेे प्रेरित किया कि गरीबी केे कारण कोई बच्चा शिक्षा प्राप्त की । जॉर्ज मूलर इन विधालयों केे अलावा ब्रिस्टल केे बाहर दो और विधालय और संचालित करतेे थेे । इसकेे साख वेे किसी दुसरेे व्यक्ति केे द्वारा संचालित एसेे ही एक विधालाय का किराया भी देतेे थेे ।

उन्होनेे ब्रिस्टल केे निर्धन बच्चों को दोपहर का भोजन देनेे का एक कार्यक्रम भी प्रारंभ किया । मुफ्त बाईबल वितरण और लघु साहित्यों की छपाई का कार्य भी इसी केे साथ चलता रहा । इस बीच वेे लगभग दस हजार बाईबल और पच्चीस हजार लघु साहित्यों का वितरण कर चुकेे थेे ।

इस दौरान वे विदेशों में सेव करने वाले मिशनरियों की सहायता करना भी नहीं भूले। जमैका, आस्ट्रेलिया, कनाडा और ईस्ट इंडिया के मिशानरियों ने मूलर से निरंतर सहायता प्राप्त की।

किसी से भी धन की अपील किये बिना परमेश्वर पर ही आश्रय रखकर मूलर ने इन सेवाओं का संचालन किया। इन सेवाओं के लिए प्रतिवर्ष 2000 से अधिक पौंड की आवश्यकता थी। यह सब कुछ प्रार्थना के द्वारा ही होता रहा। कभी तो सबकुछ बहुत राम से चलता था। और कभी कभी तो थोड़े से पैसों के लिए भी बहुत मुश्किल हो जाती थी।

1844 सितंबर ४ बुधवार।

सुबह जब वह पैल स्ट्रीट के अपने घर में बैठे हुए थे तब विल्सन स्ट्रीट से किसी ने एक पर्ची भेची। उस दिन की आवश्यकता के लिए १ पौंड २ शिलिंग की आवश्यकता है। मूलर के जेब में एक पैसा नहीं है। जब मूलर प्रार्थना कर रहे थे तब खबर मिली कि आज एक अतिथि भी हैं। वह मांजस्टर के एक व्यापारी थे। विदा लेते समय उन्होने मूलरके हाथों में यह करते हुए 21 शिलिंग दिया कि यह राशि कुछ लेड़ीस बैग बेचने से मिले लाभ का दसवांश है।

वह घन उस दिन की आवश्यकता से कहीं अधिक थी।

1844 के सर्दी का मौसम प्रारंभ हो चुका था। बच्चों के लिए गर्म कपडों की आवश्यकता थी। उसी प्रकार काफी वर्षो से बलकों के भवन की पुताई भी नहीं हूई थी। मूलर ने बडे दिन के समय कर्मचारियों के नीजी खर्च के लिए भी कुछ राशि परमेश्वर से मांगा।

अक्टूबर के प्रथम सफ्ताह में मूलर की प्रार्थना का उत्तर मिला। 70 पौंड का एक बैंक आर्डर!! जिसने यह धन भेजा था उसने लिखा था कि अनाथालय में यदि किसी प्रकार की आवश्कता है तो सूचित करें। ''यह कैसे होगा।'' अपनी आवस्यकताओं को बताकर हम आपको धन देने के लिए प्रेरित नहीं कर सकते। ऐसा करने से हम कैसे परमेश्वर के आश्चर्य को पहचानेंगे? मुलर ने जवाब दिया, ''यह हमारे दर्शन के विपरीत है।'' कुछ भी हो उस धन से बालको के आवास की पुताई हो सकी। साथ ही साथ कर्मचारियों को बोनस भी दिया गया।

1845 अक्टूबर का एक सर्द दिन! विल्सन स्ट्रीट के किसी घर के मुखिया ने रसोईघर के दरवाजे को जोर से भींचते हुए कहा। ''मैं तो इनसे तंग आ गया हूँ।''

''क्या हुआ। फिर से उन्होने खिड़की का काँच तोड़ दिया?'' उनकी पत्नी सब्जी काटना छोड़कर बाहर निकल आई।

''इनके शोर के मारे तो कोई दिन में जरा आराम भी नहीं कर सकता।''

''हाँ, हाँ शोर ही होता तो जाने देते। लेकिन यह तो अति हो गई। पूरा मोहल्ला खराब करके रख दिया। लगता है पूरे ब्रिस्टल शहर के बच्चें यहीं आ गये हैं।

''अब हम इसे अनदेखा नहीं कर सकते, बेस्सी। मैं आच ही उन्हे एक पत्र लिखने जा रहा हूँ।''

''मुझे नहीं लगता कि इससे कोई लाभ होगा।'' कड़ाही को चूल्हे पर चढ़ाते हुए उनकी पत्नी ने कहा।

''मैं उन्हे लिखूंगा कि वे यातो अपने बच्चों के साथ बापस जर्मनी चले जायें या फिर इसे बंद करने का प्रबंध मैं स्वयं कर लूंगा। मेरा पेन कहां हैं?''

1845 अक्टूबर 30 को जोर् को उनका पत्र मिला। जोर्ज को

14

अध्याय – 14

''पापा, यह तो एकदम फालतू बात है। ''.....शोर होने से कोई मर नहीं जाता है।'' तेरह वर्षीय लिडिया ने कहा। फिर भी जोर्ज को इस पात से कोई सांत्वना नहीं पहुँची। अनाथालय के उस पडोसी का पत्र उन्हे एक बोरा पत्थर से अधिक बजनी लग रहा था। जोर्ज ने कभी भी इस प्रकार की प्रतिक्रिया की अपेक्षा नहीं की थी। ब्रिस्टल के अनाथ बच्चों को घर देने के कारण शहरवासियों का प्रतिफल ! उनके पत्र की मांगें जोर्ज के लिए आघत् से कम न थी। फिर भी जोर्ज को उनके प्रति किसी प्रकार का विद्धेष महसूस नहीं हुआ।

''लिडिया, लोगों की उनकी अपनी स्वतंत्रता है। उनकी परेशानी हमें इसिलिए समझ में नहीं आ रही है क्योंकि हम विल्सन स्ट्रीट में नहीं रहते हैं। सच कहूँ, यदि हमारा घर अनाथालय के पास कहीं होता तो मेरा तो सिर दर्द के मारे फट जाताथ समस्या केवन शोर

की ही नही। तुम तो जानती ही हो कि केवल शोर ही वहाँ की एकमात्र समस्या नहीं है। बारिश के समय वहाँ बहुत किचड़ हो जाता हैं। और उसके सात अब इन बच्चों के नहाने और कपडें धोने का पानी.....। चारों घरों की सामर्थ से भी अधिक बच्चे वाहां रह रहे है।''

''पानी की समस्या तो मैं नहीं जानती। लेकिन एक बात सच है। मैने कभी भी विल्सन स्ट्रीट को पसंद नहीं किया है।'' जब मै छोटी थी तब आप मुझे रोज यहां लाते थे। सच पूछो तो मुझे वहां के दुर्गध के कारण रोना आता था। वहां की गंदी नालियां, तंग गलियां, कतार में एक से एक सटे हुए घर.....। पापा, यदि मैं एक अनाथ बालिका होती ते कभी भी वहां रहनना पसंद नहीं करती।''

यह सुनकर जोर्ज स्तब्ध रह गये। उन्होने लिडिया की ओर गहरी नजरों से देखा। वह बेलती जा रही थी; पापा, एक हवादार खुली जगह.....। एक ऐसा स्थान जहां से हम कभी-कभी समुद्री हवा खाने जा सकें.....। बच्चों के खेलने के लिए खुली जगह। विल्सन स्ट्रीट में ऐसा कुछ भी नहीं है। पापा, बच्चे ऐसे तंग ओर गंदी जगह को पसंद नहीं करते। लिडिया अपनी उम्र से काफी बडी लग रही थी।

''लिडिया, बहुत अधिक लाड़ प्यार के कारण तुम ऐसा सपना देखने लगी हो। देखो, तुम क्यो ऐसे आडंबर में रहना चाह रही हो। यदि परमेश्वर तुम्हे ऐसे ही स्थान पर रखना चाहता है तो फिर हमें उसमें आनंदित होना चाहिए।'' जोर्ज ने थोड़ा दुःख के साथ कहा।

''जरूर पापा!!! परमेश्वर जों भी देता है उसमें मैं आनंदित हुँ। फिर भी मैं यह कह रही हूँ कि जब परमेश्वर ने इतना सबकुछ हमें दिया है तो वह हमें एक विशाल और खुली जगह क्यों न देगा? यह परमेश्वर के लिए असंभव तो नहीं है।''

क्या तेरह साल की लिडिया अपने अनुभवी पिता को सिखाना चाहती है? विशाल और खुली जगह.....हे परमेश्वर क्या आपकी यही इच्छा है?

''बेटी उस खुले विशाल स्थान में हम क्या करेंगें? देखो, हारे पास सिर्फ 150 बच्चे हैं। उनके खेलने की जगह ही तो चाहिए?''

''उनके रहने के लिए जगह चाहिए..... हम वहाँ घर बनाएंगें। अभी जैसे नहीं. .....वहां हम अपनी योजनानुसार और अपनी आवश्यक्तानुसार घर बनाएंगें।''

जोर्ज को अत्यधिक आश्चर्य हुआ। यह क्या कह रही है? किराये पर घर लेने के स्थान प हम घर बनाएंगें। जोर्ज ने आज तक इस बात पर विचार नहीं किया था। किन्तु उसके लिए कितने अधिक धन की आवश्यकता होगी। जल्द ही उन्हे लिडिया की बातें स्मरण आई। ''जब परमेश्वर ने इतना सब कुछ हमें दिया है तो वह हमें एक विशाल और खुली जगह क्यों न देगा? यह परमेश्वर के लिए असंभव तो नहीं है।''

तुरंत ही जोर्ज ने अपने मन में एक भवन की कल्पना की। ईटों से निर्मित एक विशाल भवन! बड़े चूल्हों वाला विशाल रसोईघर! बीमार होने वाले बच्चों की विशेष देखरेख के लिए विशेष करमे! आवश्यक स्नान घर और शौचालयों के साथ बच्चों के पढ़ने लिखने के लिए विशाल कमे....। कपड़े दोने और सुखाने के लिए आवश्यक सुविधाओं वाले विशाल आंगन। सबुकुछ एकही स्थान पर.....!!!

''लिडिया, बेटी, तेरा स्वप्न व्यर्थ नहीं है। परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है....तू सच में जोर्ज मूलर की बेटी है।'' जोर्ज ने उसके माथे पर एक चुंबन आंकित किया।

उस रात जोर्ज मेरी के साथ प्रार्थना करने लगे। ''हे परमेश्वर हमें विल्सन स्ट्रीट से बाहर निकलना है। उसके कई कारण हैं.... पहला कारण है कि वह स्थान हमारे लिए बहुत ही तंग है। दूसरा यह कि वचन यह कहता है कि जो तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे लिए करें वह तुम उनके लिए करो। उस गली के निवासी हमारे बच्चों से तंग आ गये हैं। हम होते तो भी यही चाहते कि ये बच्चे यहाँ से चले जाए। हम वहाँ के निवासियों को और अधिक परेशान करना नहीं चाहते। यदि तेरी इच्छा है तो हम वहाँ से बाहर निकलना चाहते है।''

यदि आप हमें तंग गलियों में रखाना चाहते हैं तो हम संतुष्ट

हैं। और यदि आप हमें एक विशाल स्थान देते हं तो उसमें भी हम आनंदित हैं। अधिक नहीं, बस सात एकड़ जमीन। ब्रिस्टल के ही किसी पहाड़ स्थान में होता तो अधिक अच्छा होता। और एक मसीही ठेकेदार.....एक भव्य भवन बनाने के लिए। लेकिन अनाथ बच्चों की संख्या बढ़ रही है। इसिलिए तीन सौ बच्चों के रहने लायक भवन.....। हाँ, इतने बच्चे ठीक रहेंगें। काम प्रारंभ करने के लिए कम से कम दस हजार पौंड की आवश्कता होगी।''

जोर्ज सूबह शाम लगातार यही प्रार्थना करते रहे.....। अगले छत्तीस दिनों तक वह यही प्रार्तथना करते रहै। अपने घर से अनाथालय की ओर जाते हुए.....या बेथसैदा चैपल की ओर जाते हुए.....या अपने दफतर में.....या कभी कभी मेरी की बाते ससुनते हुए भी वे यही प्रार्थना कर रहे होते।

थटटीसवां दिन.....1845 दिसंबर 10 को लिडिया का स्वप्न यथार्थ में बदल गया। किसी ने उन्हे 1000 पौंड की बड़ी राशि भेजी।

''जोर्ज, आप उछल क्यों नहीं रहे है। क्या हमने कभी जिंदगी में 1000 पौंड एक साथ देखा है। कैसे आप इतना शांत रह सकते हैं?'' मेरी अपनी खुशी को छिपा नहीं पा रही थी।

''मेरी, मैं प्रार्थना कर रहा था। मुझे मालूम कि यह मिलेगा। इसमें इतना उतेजित होने की आवश्यकता नहीं है।'' जोर्ज ने शांत भाव से कहा। ''लेकिन मै परमेश्वर की ओर से एक चिन्ह मांग रहा हूँ.....एक स्पष्ट चिन्ह.....। एक ऐसा चिन्ह मूझे इस बात का पूर्ण निश्य चाहिए कि बिल्सन स्ट्रीट सा बाहर निकलना परमेश्वर की इच्छा है।''

1845 दिसंबर 14

मेरी की बहन छुट्टी बिताने के लिए ब्रिस्टल पहुँची। सुबह नाश्ता करते समय उन्होने अचानक पिछले दिन का एक अनुभव सुनाया। ''कल मैं एक प्रार्थना सभा में पहली बार उस व्यक्ति से मिली। गरीबों

को सेवा के विष्य में आपने जो पुस्तके लिखी है वह उनहोने पढा है। वह अनाथालय वगैरह में वहुत रुचि रखते हैं। आप जो नया अनाथालय बनाने जा रहे हैं.....।''

''..... नया अनाथालय बनाने जा रहे हैं....? यह किसने कहा? मैं तो अभी इस बात कि लिए प्रार्थना ही कर रहा हूँ। मै परमेश्वर से एक चिन्ह पाने का इंतजार कर रहा हूँ। उससे पहल.....। जोर्ज उनकी गलती सुधारने का प्रयास करने लगे।

''ठीक है, जोर्ज। मैने उनसे नये अनाथालय के निर्माण के विषय में बात की है। वह एक जाने माने आर्किटेक्ट हैं। उन्होंने कई प्रसिद्ध इमारतों का निर्माण करवाया है। मैं यह कह रही हूँ कि.....।'' वह आकर जोर्ज के पास खड़ी हो गई। उनके होंठों पर एक विजयी मुस्कान थी। ''जोर्ज, वह ब्रिस्टल आकर आपके नये अनाथालय के निर्माण की पूरी देखरेख करेंगें। वह भी बिना एक भी पैसा लिए.....।''

''हे प्रभु, मैं यह क्या सुन रहा हूँ? परमेश्वर, आपके मार्ग कैसे हैं? क्या यही है आपका चिन्ह.....?

''बहन, क्या वह एक उद्धार प्राप्त, परमेश्वर की संतान हैं?'' जोर्ज ने पूछा।

''यह क्या बचपना है। जब एक व्यक्ति इतना सबकुछ कह रहे हैं तो फिर उनके बारे में ऐसा प्रश्न पूछने का औचित्य क्या है?'' वह वापस अपने स्थान पर आ बैठीं।'' जोर्ज फिर भी मैं आप की तसल्ली के लिए कह रही हूँ कि वह एक समर्पित मसीही हैं।''

''परमेश्वर, आपके मार्ग कैसे अद्‌भुत है..... जब मैने तो नये भवन की कल्पना ही की.....और एक मसीही आर्किटेक्ट के लिए प्रार्थना किया.....तभी देखो, एक अनजान व्यक्ति ने वादा किया हैं कि वह नये अनाथालय भवन के निर्माण की देखरेख करेगें।

नया भवन रमेश्वर की इच्छानुसार है। जोर्ज को चिन्ह मिल गया। उन्हें तसल्ली हुई।

दो माह और बीत गये। भवन निर्माण का धन थोड़ा थोड़ा करके आता रहा। 1846 फरवरी 21 तारीख को जोर्ज ने सुना कि आष्ली डौन नामक स्थान पर कुछ जमीन बिक्री के लिए है। जैसा जोर्ज ने प्रार्थना किया था.....लगभग 7 एकड़ जमीन.....।

सर्द मौसम की परवाह न करते हुए अगली सुबह ही जोर्ज आष्ली डौन के लिए चल पड़े। बंदरगाह के आसपास शहर जैसी भीड़-भाड़ नहीं थी। घरों की संख्या भी अपेक्षाकृत कम हो चली थी। अंततः जोर्ज के पैर उस स्वप्न-भूमि पर पड़े।.....विशाल, मनोहर भूमि.....। बारिश के दिनों में भी कीचड़ नहीं होगा।.....वसंत ऋतु में यहाँ का दृश्य बहुत खूबसूरत होगा। यहाँ गर्मी और सर्दी का मौसम सहने योग्य होगा। आष्ली डौन लोगों की बड़ा भीड़ से मुक्त हैं।

सात एकड़ भूमि! 300 लोगों के निवास निर्माण के लिए भरपूर जमीन.....। क्या इसी भूमि की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है?

अचानक हल्की हवा चली। ठंडी हवा के झोकें मे जोर्ज को नमकीनपन का अहसास हूआ। दूर कहीं समुद्र की धीमी गर्जन सुनाई दे रही थी!! ''एक ऐसा स्थान जहां से हम कभी-कभी समुद्री हवा खाने जा सकें....। बच्चों के खेलने के लिए खुली जगह।'' लिडिया की आवाज उनके कानों में गुंजने लगी। हां, यही है प्रतिजात् भूमि!! हां, यही है। नये भवन का निर्माण यही होना है.....यदि मैं इसका दाम दे पाया तो.....!!

अगली सूबह जोर्ज जमीन के मालिक से मिलने उनके निवास पहुंचे। उस समय वह घर पर नहीं थे। एक नौकरानी ने कहा कि वह बहुत जल्दी आ जाएंगें। किन्तु मूलर इंतजार करने के लिए तैयार नहीं थे। लंबे डग भर कर वह उनके दफतर की ओर चल पड़े। वहां पहुंचकर उन्हं और अधिक निराशा हुई। उनके कर्मचरियों में से किसी ने कहा कि कुछ ही क्षण पहले घर की ओर गये हैं। अभी घर भी नहीं पहुंचे होंगें।

वापस पुनः ुनके घर की ओर? जोर्ज वापस लौटने लगे। किन्तु ऐसा लगा मानो उन्हे कोई रोक रहा हो। एक आवाज.....आज उनसे

मिलने नहीं जाना.....। जोर्ज पशोपेश में पड़ गये। अंततः जोर्ज वापस अपने घर की ओर चल पड़े।

अगली सुबह जोर्ज उनसे दफतर में मिले। किन्तु उन्होंने अधक मित्रभाव नहीं दिखाया। ''आपको कल ही वापस आकर मुझसे मिल लेना चाहिए था।'' जमीन के मालिक ने शिकायत की।

जोर्ज ने कल का अपना अनुभव बताने का प्रयास किया। किन्तु वे बीच में ही बोल पड़े। ''मैं कल से आपका इंतजार कर रहा हूँ। कल की पूरी शाम मैंने आपके इंतजार में बरबाद कर दिया आपको मालूम है? समय की बरबादी से मैं सबसे अधिक घृणा करता हूँ। कल ही मैं ने निर्णय ले लिया था कि यदि अब आप आयेंगें तब भी मैं आपको जमीन नहीं दूँगा।''

जोर्ज के दिल की धड़कन रूकने सी लगी। ''कल किसने मुझे रोका था? क्या वह परमेश्वर की आवाज नहीं थी?''

''लेकिन एक बात कहूँ, श्रीमान् मूलर?'' आष्ली डौन के मालिक ने पुनः कहना प्रारंभ किया। ''कल रात मैं सो ही नहीं पाया। रात को तीन बजे मै बिस्तर स् उठ गया। फिर पांच बजे तक मैं सो नहीं पाया। पूरे समय मेरे कानों में एक ही आवाज गूंजती रही। आष्ली डौन मूलर को दो..... आष्ली डौन मूलर को दो.....!!''

पुनः जोर्ज के हृदय ने घड़कना प्रारंभ किया। ''अभी रुका कहां ? वह आवाज मुझे कंपकंपाने लगी। उनसे अधिक धन मत लेना। तुम जमीन का लाभ नहीं कमाना.....।'' मैंने प्रति एकड़ 180 पौंड का हिसाब लगाया था। लेकिन मैं आपको 120 पौंड प्रति एकड़ के हिसाब से दूँगा। यदि कल शाम आप आते तो मैं 180 से एक पेनी भी कम नहीं लेता।''

यदि 180 पौंड के हिसाब से देना पड़ता तो 1300 पौंड का खर्च आता किन्तु उस समय भवन निर्माण फंड मे उतनी राशि नहीं थी। चुंकि परमेश्वर ने आष्ली डौन के मालिक से बात की थी इसिलिए अब 120 पौंड के हिसाब से 840 पौंड ही देना है। जोर्ज बडी आसानी

से यह रकम दे सकते थे। परमेश्वर के मार्ग कितने अगम हैं!!

जोर्ज भवन निर्माण के लिए जमीन और आर्किटेक्ट के साथ फंड का इंतजार करने लगे।

चार महीनों तक कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। जोर्ज ने जल्दबाजी नहीं की। वह परमेश्वर के समय का इंतजार करने को तैयार थे।

1846 जुलाई ६

पिछले कुछ महीनों से भवन निर्माण फंड में धन नहीं आ रहा था। मुझे उसका कारण समझ में आ गया। वास्तव में उस समय धन की आवश्यक्ता नहीं थी। जब आवश्यक्ता होगी-जब मेरे धैर्य की परख हो जाएगी तब धन आ जाएगा। मेरे इतनी दृढ़ता से कहने का कारण है। आज ही मुझे 2050 पौंड भवन निर्माण फंड के लिए, 50 पौंड दैनिक आवश्यक्तओं के लिए। उसमें से भी 25 पौंड अनाथालय के खर्चों के लिए अलग कर दिया। बाकी 25 पौंड धर्मविज्ञानपीठ, बाईबल वितरण, मिशनरियों के खर्चो आदि के लिए अलग कर दिया गया। आज का दान अब तक मिले दानों में से सबसे बड़ा था। आगे इससे भी बड़ी राशि दान के रुप में आ सकती है। यह सब एक ही बात प्रगट करती हैं कि परमेश्वर के कार्य और उसकी आवश्यक्तओं की पूर्ति के लिए सबसे श्रेष्ठ मार्ग परमेश्वर के साथ सीधे संबंध बनाना है। किसी मनुष्य पर भरोसा न कर केवल परमेश्वर से मांगना है।

मैं वर्णन नहीं कर सकता कि इस दान को पाकर मैं कितना खुश हुआ। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि मैं बहुत अधिक उत्तेजित या आश्चर्यचकित हो गया हो। मैं। परमेश्वर से मांगता हूँ और परमेश्वर मुझे देता है। मेरा हृदय परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से भरा हूआ है। मैं दाुद के समान केवल इतना ही कह सकता हूँ ''हे प्रभु यहोवा, क्या कहूँ और मेरा घराना क्या है कि तूने मुझे यहां तक पहुँचा दिया है?'' 2 शुमु. 7:18* अंत में मैं परमेश्वर के सम्मुख गिरकर उसे दंडवत् करते हुए धन्यवाद देने लगा।

परमेश्वर ने हमेशा जोर्ज मूलर की प्रार्थना को सुनता था। महीने भर में भवन निर्माण फंड में 11000 पौंड की बड़ी राशि इकठ्ठी हो गयी। उसमें बड़ी भेंट की राशि ही नहीं बल्कि गरीबों की छोटी राशियां भी शामिल थी। मूलर की डायरी के कुछ नोट इस बात पर प्रकाश डालते हैं।

जनवरी 3

अनाथालय के एक बालक ने 6 पेनी भेंट में दी।

जनवरी 10

अनाथालय के एक बालक ने अपने आधे पौंड में से जो उसे उसके चचेरे भाई ने दिया थाष डेढ़ शिलिंग भवन निर्माण के लिए दिया। एक अन्य बहन ने तीन शिलिंग, एक अंगूठी, एक चूड़ी और एक जोड़ी बालियां दी।

1847 जूलाई 5

आष्ली डौन के अनाथालय का नींव रखा गया। दो वर्ष के पश्चात् जब भवन बनकर तैयार हो गया दब भवन निर्माण फंड में 700 पौंड शेष थे।'' परमेश्वर आवश्यक्ताओं की पूर्ति संकीर्ण रीति से ही नहीं बल्कि समृद्ध रीति से भी कर सकता है।''

1849 जून 18

आष्ली डौन के उस विशालकाय भवन के उपर खड़े होकर जोर्ज और मेरी ने नीचे की ओर देखा। बच्चे पंक्तिबद्ध रोकर प्रवेशद्वार से भीतर की ओर आ रे थे। बिल्सन् स्ट्रीट की तंग गलियों से दूर खुली हवा में सांस लेने का आनंद कुछ अलग ही था। उनके साथ कुछ नये बच्चे भी थे। कुल 300 लोग!! जोर्ज और मेरी के हृदय आनंद से पुलकित हो उठे।

15

जोर्ज मूलर ने तीस वर्ष की उम्र तीस बच्चों के लिए प्रार्थना करते हुए अनातालय का प्रांभ किया था। चौदह वर्ष के पश्चात् 300 बच्चे उस खुले विशाल भवन में आनंद के साथ रह रहे थे। 1849 में मूलर ने संतुष्टि का अर्थ चख कर जान लिया। लगभग पूरा दिन वे आष्ली डौन में ही व्यतीत करने लगे।

लेकिन धीरे धीरे संतुष्टि कम होने लगी। मूलर को असहजता सी महसूस होने लगी। ऐसा लगने लगा मानो परमेश्वर बात कर रहा हो। उन्हे मेरी से भी इस बारे में बात करने का साहस नहीं हूआ। जबसे नया अनाथालय प्रारंभ किया है तब से घर में या बेथसेदा चैपल में अधिक ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में नई जिम्मेवारियों के बारे में उनसे कैसे कहें?

1850 जोर्ज ने मन ही मन एक निर्णय ले लिया। अनाथालय की सेवा को और अधिक विशाल रूप देना है। और अधिक बच्चों

को लेना है। अभी जितने बच्चे हे उससे तीन गुना अधिक.....। 1000 बच्चे.....। अभी अनाथालय में 300 बच्चे हैं। और 700 बच्चों के रहने लायक घर बनाना है।

अपने दर्शन के बारे में उन्होने सबसे पहले हेनरी से कहा। ''तुम्हे तो पागलपन का दौरा पड़ा है!!'' हेनरी के पास ढेर पास ढेर सारे कारण थे। ''.....1000 बच्चे.....!! हर बात की एक सीमा होती है।''

''क्या सीमा.....? अनाथ बच्चों के पैदा होने की तो कोई सीमा नहीं है।'' जोर्ज वाद विवाद करने के लिए तैयार हो गये।

''यह एक प्रकार का आत्मिक घमंड है।'' हेनरी मूलर की बात से करई सहमत नहीं था।

''हेनरी, इसमें घमंड की कोई बात नहीं है। परमेश्वर सामर्थी है।'' जब भी कोई नई समस्या आती है तब परमेश्वर वश्वास के नये पाठ सिखाता है।''

''ठीक है, जोर्ज, मान लिया। लेकिन तुम्हे अपने स्वास्थ के बारे में भी सोचना चाहिए। डॉक्टरों ने क्या कहा है, तुमसे.....? अभी ही तुम्हारे उपर इतनी सारी जिम्मेदारियां हैं। और उपर से.....। हर बात की एक सीमा होती है।

जोर्ज मंद मंद मुस्कुराया। ''हेनरी, क्षय रोग की संभावना जताकर जर्मनी की सेना ने मुझे निकाल दिया था। तब से अब तक 16 वर्ष हो चुके हैं। आज तक मुझे ऐसी कोई समस्या नहीं हुई।''

''जोर्ज, तुम बहुत हठी हो। जो भी ठान लेते हो फिर बिना किये नहीं छोड़ते हो।'' हेनरी ने अपनी हार स्वीकरा की।

जोर्ज चार महिने के बाद अपनी नयी योजना के बारे में लोगों को बताया। 1851 के मई माह में ही भवन निर्माण फंड में पहला भेंट आया-500 पौंड।

जोर्ज समझ गया कि परमेश्वर ने उनकी योजना को हरी झंडी दे दी है। लेकिन उसके बाद कई महीनो तक कहीं से धन नहीं

आया। सायद परमेश्वर अधिक धैर्य सिखा रहा है। कभी ३ पौंड तो कभी 14 शिलिंग,..... इस प्रकार धन का आगमन होता रहा।

लगभग एक वर्ष के बाद एक बड़ी राशि आई--999 पौंड।

1853 जून 13*

अभी हम बहुत दरिद्रता का उनुभव कर रहे हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि हम कर्ज में हैं या हमारे हाथ खाली है। हमारे लगभग 12 पौंड है। लेकिन आटा खत्म हो गया है। साधारणतया हम दस बोरा आटा एक साथ लेते है। और भी कई जरुरतें हैं.....। इन सारे खर्चो के लिए 100 पौंड से अधिक की आवश्यक्ता है।

''आज सोमवार है। हफ्ते भर की जरूरतों के लिए 70 पौंड और चाहिए। लेकिन मानवीय रीति से तो कोई उम्मीद की किरण नजर नहीं आती है। है प्रभू, तू ही कार्य कर।''

सधारणतया सोमवार को कहीं से दान नहीं आता है। किन्तु आज सुबह अनाथालय की ओर आते हुए मैने परमेश्वर से कहा, हे प्रभू तू सोमवारका भी प्रभु है.....।''

''और सच में ऐसा ही हुआ। आज सुबह 301 पौंड मिला। मेरे आनंद की कोई सीमा नहीं थी। मैं कमरे में इधर उधर धूमकर परमेश्वर को थन्यवाद करने लगा। मेरी आंखों से आंसू निकलकर मेरे गालों पर बहने लगे।''

परमेश्वर के सेवको को यह सेवा इमानदारी से करनी चाहिए। उनका आश्रम कभी भी अपनी योग्यताओं या सेवा के लिए उपयोग में आने वाले माध्यमों में नहीं होना चाहिए। उनका आश्रय हमेशा परमेश्वर पर होना चाहिए।

1855!!!

25 वर्ष पूर्व 1830 में मैंने निर्णय लिया था कि मैं धन के लिए केवल परमेश्वर पर ही आश्रित रहुँगा। आज तक मुझे अपने निर्णय पर अफसोस नहीं हूआ है।

उन्होंने अपनी पत्रिका में लिखा कि एक सेवक को अपनी स्वयं की आवश्यक्ताओ के लिए किस प्रकार परमेश्वर पर आश्रित रहना चाहिए।

1855!!!

25 वर्ष पूर्व 1830 में मैंने निर्णय लिया था कि मैं धन के लिए केवल परमेश्वर पर ही आश्रित रहुँगा। आज तक मुझे अपने निर्णय पर अफसोस नहीं हूआ है।

उन्होंने अपनी पत्रिका में लिखा कि एक सेवक को अपनी स्वयं की आवश्यक्ताओं के लिए किस प्रकार परमेश्वर पर आश्रित रहना चाहिए।

यदि कोई इस मार्ग को स्वीकार करता है तब-

1. उसके लिए यह कहना काफी नहीं है कि वह परमेश्वर पर विश्वास करता है। उसे स्पष्ट रूप से इसे बात का अभ्यास करना चाहिए।

2. इस मार्ग को चुनने के बाद समृद्धि और दरिद्रता उसे प्रभावित नहीं करती है। परमेश्वर चाहे समृद्धि दे या गरीबी, उसे उसका अभ्यास करना है।

3. धन चाहे अधिक मात्रा में हो या कम मात्रा मे हो, जब परमेश्वर देता है तो उसे धन्यावद के साथ स्वीकार करना है।

4. परमेश्वर का सेवक भंडारी है। परमेश्वर उसे जो धन देता है उसे संचित करके नहीं रखना है। न ही उसे अपना समझकर अनाप शनाप खर्च करना है।

नये भवन की योजना बनाये हुए एक वर्ष बीतने के बावजूद फंड में अधिक धन एकत्रित नहीं हुआ। एक दिन जोर्ज ने हिसाब लगाकर देखा। 8,100 पौंड.....। उन दिनों में और भी बड़ी राशिदान के रूप में मिली। 1855 के मार्च महीने में भवन निर्माण प्रारंभ करने के लिए आवश्यक धन आया।

जोर्ज ने आप्लीडौन के अनाथालय के पास ही कहीं जमीन

खरीदने का विचार बनाया। अाथालय के उत्तर-पूर्व दिशा में उन्होने एक जमीन भी देख लिया। ब्रिस्टल के एक प्रापर्टी डीलर से उनहोने वह भूमि खरीदने की इच्छा प्रगट की। किन्तु उसका कहना था कि वह आपको कभी नहीं मिलेगा।

''लेकिन क्यों? मैं स्वयं उसके मालिक से बात करूँगा।'' जोर्ज ने कहा। ''अभी ही 750 बच्चे वहां नया भवन बनने का इंतजार कर रहे हैं। मैं मालिक से बात कर उन्हे समझाता हूँ।''

''लेकिन, श्रीमान् जी. आप उनसे बात नहीं कर सकते है। उनकी मृत्यु हो चुकी है।'' प्रापर्टी डीलर ने जोर्ज के साथ चलते हुए कहा।

''क्या.....? मृत्यु हो गयी है। तब तो कोई समस्या नहीं है।'' यही तो समस्या है। उन्होने वसीयत लिखकर सारी संपत्ति एक ट्रस्ट को सौंप दी है। वसीयत के अनुसार कोई भी उस जमीन को अगले 99 वर्ष नहीं सकता।'' प्रापर्टी डीलर ने स्पष्ट किया।

''99 वर्ष.....?'' जोर्ज वापस चलने लगे।

क्या हुआ? आप वापस क्यों जा रहे है? प्रापर्टी डीलर जोर्ज के पीछे पीछे आया। वे चलते रहे और सीधे आष्लीडैन पहुंचकर ही रुके।

प्रापर्टी डीलर को कुछ समझा में नहीं आया। जोर्ज ने कुछ कहा भी नहीं। जोर्ज अनाथालय के सामने चलने लगे।

एक.....दो.....तीन....दस....बीस.....एक.....सौ.....नब्बे.....दो सौ.....।

''दो सौ.....है न?'' जोर्ज ने उस प्रापर्टी डीलर से पूछा।

''मैं ने नहीं गिना.....। यह क्या पागलपन है।'' प्रापर्टी डीलर को कुछ भी समझ मं नहीं आया।

''हां, 200 गज काफी है। आधी लंबाई में यहां एक मकान.....दूसरा उध.....। भाई, मुझे उस जमीन की आवश्यक्त नहीं है। 99 साल क्या मैं तो 99 किन भी इंतजार नहीं कर सकता। मैं नया भवन इसी जमीन पर बनाऊँगा।''

''आज के डाक में एक लिफाफा था। मैंने नहीं पढ़ा है।'' मेरी ने खत जोर्ज की ओर बढ़ाया। नाश्ते का कौर मुंह डालते हुए जोर्ज ने लिफाफा खोला।

''मेरी, यह देखो.....।'' जोर्ज को पता नहीं चला की कब उनके हाथ से कौर छूट गया। ''यह देखो, एक व्यक्ति ने वादा किया है कि 300 खिड़कियों के लिए आवश्यक कांच वे देगें। वह भी एकदम मुफ्त मैं।''

''लगता है, हेनरी के कथन को सुधारना पड़ेगा। परमेश्वर के लिए कोई सीमा नहीं है।''

उसके बाद दानों का एक बहाव ही हुआ।

1856 फरवरी 19

आज 3000 पौंड दान के रूप मे मिला। साथ में एक निर्देश भी कि मैं अपनी इच्छानुसार उसे खर्च करुं। मैन् 1700 पौंड को भवन निर्माण फंड में डाल दिया। बाकी अनाथालय के दैनिक आवस्यकतोओं के लिए अलग कर दिया।

मार्ज 18

आज 4000 पौंड मिला। किसी विशेष निर्देश के बिना.....। मैं ने 3000 पौंड भवन निर्माण फंड में डाल दिया। कभी कभी लोग इस निर्देश के साथ धन भेजते कि यह मूलर के परिवारके लिए है। मूलर परिवार की जीवन शैली अत्यंत साधारण थी। अपनी जरुरत के लिए लेकर वे शेष रकम अनातालय की आवश्यक्त के लिए दे दिया करते।

उन्ही दिनों जोर्ज को 100 पौड का एक चेक मिला। साथ मे एक निर्देश भी जिसने जोर्ज को सोचने पर मजबूर कर दिया।

11 अक्टूबर 1856

श्रीमान् मूलर,

अनाथ बच्चों के लिए आपके द्वारा की जाने वाली सेवा के बारे

में जान कर मैं हम आपके लिए यह धन भेज रहे हैं। ताकि आप इसका उपयोग अपने परिवार के लिए एक फंड का स्थापना करने में कर सकें। उसके शुरुआत के रुप में हम यह रकम भे रहे है। हमें विश्वास है कि अन्य विश्वासीगणों के सहयोग से यह राशि बहुत बढ़ जाएगी।

आपका विश्वासयोग्य।

जोर्ज को अहसास हुआ कि यह उन्हे विश्वास जीवन से हटाने का प्रलोभन है। उन्होने उस व्यक्तिको पत्र लिखा।

21, पौल स्ट्रीट,

किंग्स् डौन

12 अक्टूबर 1856

प्रिय भाई,

मुझे आपका धन्यवाद देने में कठिनाई हो रही है। आज तक परमेश्वर ने मेरी और मेरे परिवार की सहायता की कि हम बिना किसी प्रकार की संपत्ति इकट्ठा किये जी सकें। पिछले 26 वर्षो में एक प्रचारक के रूप में या अनाथालय के मुखिया के रूप में या फिर धर्म विज्ञान विद्यापीठ के मुखिया के पूर में बिना एक रुपये तनख्वाह लिए जीने के लिए परमेश्वर ने सहायता की। परमेश्वर की महिमा के लिए मैं कहना चाहता हुँ कि मेरी हर आवश्यक्ता के लिए उसने लोगों को उभारा। ठीक समय पर वह सहायता भेजता रहा। मैं, मेरी पत्नी और मेरी 24 वर्षीया पुत्री भी इसी जीवन रीति का अभ्माय करती है। हमे विश्वास है कि आगे भी वह हमें संभालेगा। जब तक आप की ओर से स्पष्टीकरण नहीं मिलता है कि हम इस राशि का उपयोग किस प्रकार करें मैं इस चेक बैंक मं जमा नहीं करूँगा।

प्रेम पूर्वक,

जोर्ज मुलर

कुछ दिनों के बाद उनका पत्र मिला। ''आप उस धन का उपयोग अनाथालय के लिए कर लें।'' उन्होने लिखा। कुछ दिनों के बाद उन्होने पुनः 200 डालर भेजा।

1857 नवंबर 12 को आष्लीडौन के दूसरे भवन में बच्चे रहने लगे। आठ वर्ष के कम उम्र के 200 बच्चे और उससे उपर 17 वर्ष से कम उम्र के 200 बच्चे.....।

इस भवन के निर्माण से लेकर उसे सिज्जत करने में कुल 35335 पौंड का खर्च आया।

''जोर्ज की सीमा से 355 पौंड अधिक। जोर्ज ने हेनरी की और देखा। वह अपने खड़े बालों में हाथ फिराते हुए मंद मंद मुस्कुरा रहे थे।

जोर्ज ने आर्क्टिक्ट से संपर्क किया। 300 बच्चों लिये एक भवन का निर्माण करना है।

आर्किटेक्ट भवन का मानचित्र तैयार करने लगे। अचानक मूलर ने कहा। ''यदि 300 के स्थान पर 450 करें तो.....।''

आर्किटेक्ट अपने बनाए मानचित्र की ओर देखने लगे। ''लेकिन आप ने तो 300 कहा था। उन्हे शायद अपनी इतनी देर की मेहनत पर पानी फिर जाने का दुःख था।''

''हां, लेकिन अब 450 हो गया है। आप हिसाब करके बताईए कि कितना खर्च अधिक आयेगा।''

1862 मार्च।

तीसरा भवन भी बनकर पूर्ण हो गया था। जोर्ज ने इसके लिए 35000 पौंड के लिए प्रार्थना की थी किन्तु फंड में 46000 पौंड इकठ्ठा हुआ।

एक दिन जोर्ज ने जेम्स से कहा, ''क्यों न हम अनाथालय को 2000 तक बढ़ायें।''

''वह तो एक बहुत बड़ी योजनी होगी।'' जेम्स ने कहा।

''क्या आफ भी ऐसा सोचते है। अभी तक परमेश्वर ने ही हर बात किया है।'' जोरर्ज ने स्मरण दिलाया। ''आगे भी परमेश्वर की अपने अद्भुत कार्यो द्वारा हमें संभालेगा।''

''2000 बच्चे.....।'' जेम्स ने विश्वास करने का प्रयास किया।

''जेम्स, मेरे मन में 2000 बच्चे हैं। मैं भवनों का भूखा नहीं हूँ।'' जोर्ज ने कहा।

''हाँ, हम इसे करेंगें।'' जेम्स ने कहा।

जोर्ज मुस्कुराने लगे। शायद वह मेरा उत्तराधिकारी बने। अब शरीर की अस्वस्थाता से मुझे घबराने की आवश्यक्ता नहीं है।

''ठीक है, कल हीं हम नये अनाथालय के निर्माण की तैयारी प्रारंभ करे।''

''इतनी जल्दी.....?'' मूलर की बात ने जेम्स को अचरज में डाल दिया।

''हां.....।''

अगले ही मूलर ने एक प्रापर्टी डीलर से संपर्क किया।

''आपको जमीन तो मिल जाएगी किन्तु उसके लिए आपको कई चरणों में से होकर गुजरना पड़ेगा। उम्मीद है कि आप हमारी व्यवस्था को दोष नहीं देंगें।'' प्रापर्टी डीलर ने कहा।

जोर्ज ने हार नहीं मानी। उनहोने प्रयास करने की ठानी।

''लेकिन, पादरी साहब, वे मेरे बच्चे तो नहीं हैं। फिर मैं क्यों उन पर दया करूँ।'' उस व्यक्ति ने कहा।

जोर्ज को स्थिति की वास्तविकता को भान हुआ। इस व्यक्ति ने खेती करने के लिए दो वर्ष के लिए जमीन लीज पर लिया किन्तु बीमारी के कारण वह खेती नहीं कर पाये। अब यदि वे जमीन पर से अपना कब्जा छोड़ देते है तो उसे हर तरफ से नुकसान ही होगा। उन्हे उस व्यक्ति पर दया आई।

''यदि मैं आपका नुकसान भर दूं तो.....।'' मुलर ने दया दिखाई।

''आपको पहले ही ऐसा कहते तो कोई बात ही नहीं थी।'' जोर्ज से सीधे उस जमीन के मालिक के पास पहुंचे। 5700 पौंड में जमीन का सौदा पक्का हूआ।

7 मई 1866

पुनः ब्रिस्टल से काम करने वाले आये। अब ब्रिस्टल के अनाथ बच्चों के लिए आष्ली डौन में ५ भवन होंगें।

1870 जनवरी को जोर्ज का सपना पूरा हुआ। आष्ली डौन अब बच्चों का गांब है। ब्रिस्टल की गलियों की गंदगी से दूर, शैताल के पंजे से मुक्त 2050 बच्चे वहां विहार करने लगे।

''दुनिया जानेगी कि परमेश्वर कितना अधिक विश्वासयोग्य है।'' जोर्ज मेरी का हाथ थामे टहल रहे थे।

''क्या..... ?''

''यही कि परमेश्वर आज भी प्रार्थना सुनता है और प्रार्थना का उत्तर देता है।''

''निश्चय ही.....। चलों घर चलते हैं। मुझे अब कहीं नहीं जाना।'' मेरी ने कहा।

उनके कदम अनाथालय की ओर बढ़ने लगे।

16

मेरी की खांसी की तकलीफ समाप्त नहीं हुई थी। वह अभी तिहत्तर वर्ष की हो चुकी हैं। डॉक्टर की सलाह थी कि वे यथाशीघ्र आष्ली डौन छोड दें और कहीं जाकर आराम करें। किन्तु वह इन दोनों बात के लिए राजी नहीं हुई। रात मं कई बार उनकी नाड़ी गायब होने लगती थी। फिर भी वह आष्ली डौन की प्रत्येक गतिविधियों में हमेशा की तरह शामिल होती रहीं। किन्तु उनकी सेहत दिनों दिन गिरती रही। जनवरी के अन्त तक वह बेहद कमजो हो चुकी थीं।

1870 फरवरी 1

नौ वर्ष में पहली बार मेरी ने बिस्तर पकड़ लिया। आष्ली डौन के तीन नंबर के भवन में बैठे हुए जोर्ज ने मेरी के लिए प्रार्थना किया। उस दिन उन्होने 118 वां भजन पढ़ा था।

''हे परमेश्वर, आप कितनी धार्मिकता के साथ कार्य करते हैं।

मेरे जीवन की प्रत्येक घटना में आपकी इच्छा निहित है। यह आपकी विश्वासयोग्यता का परिणाम है!!'' जोर्ज ने 75 वां पद दुहराया। ''हां प्रभू, आपके निर्णय सदा सत्य होते हैं। मैं उसमें संतुष्ट हूँ। मेरे साथ होने वाली घटनाओं और घटियों को आप जानते हैं। मेरे दिन आपके द्वारा गिने गये हैं। होने वाली घटनाओं और घटियों को आप जानते हैं। मैं उसमें संतुष्ट हुँ। मेरे साथ होने वाली घटनाओं और घटियों का आप जानते हैं। मेरे दिन आपके द्वारा गिने गये हैं। भजन 31:15। मेरी प्रिय पत्नी के दिन भी आपके हाथों में हैं। यदि आपकी इच्छा है तो इस कठिन बीमारी के बावजूद आप उसे खड़ा कर सकते हैं। यदि ऐसा नहीं होता है तब भी मै उसे स्वीकार करूँगा।

2 फरवरी को मेरी की तबियत में कुछ सुधार सा नजर आया। सुबह उनके सिरहाने बैठकर जोर्ज भचन 84 पढने लगे।

क्योंकि यहोवा परमेश्वर हमारा सूर्य और ढाल है। यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा। और जो लोग खरी चाल चलते हैं उन से वहकोई अच्छा पदार्थ रख न छोड़ेगा। पद 11*

''मेरी, इधर ध्यान दो।'' जोर्ज पद की व्याख्या करने लगे। ''यहोवा परमेश्वर अनुग्रह और महिमा देता है। उसने अपना अनुग्रह तो हमें दे चुका है न? इसका क्या तात्पर्य है? वह हमें महिमा भी देगा। जब हमने परमेस्वर के अनुग्रह में शरण लिया है तो फिर वह हमें महिमा भी देगा। यह तो आने वाली महिमा ही है। है न, मेरी?

बाद में लिडिया से उन्होने कहा कि जोर्ज की बातें उन्हे काफी दिलासा दीं। उनकी बातों ने उन्हे आने वाली महिमा का स्मरण दिलाया। अनुग्रह देने वालस प्रभु हमें महिमा भी देता है। अनुग्रह के बाद ही वह अपनी महिमा ओढ़ाता है।

फरवरी ५ शनिवार।

जोर्ज घर पर ही रुककर मेरी की सेवा करते रहे। किन्तु दोपहर के बाद उन्हे आष्ली डौन तक जाना था।

''मेरी, मैं तुम्हे अकेला छोड़कर जाना नहीं चाहता। लेकिन मुझे

जाना होगा। मैं जल्द लौट आऊँगा।'' जोर्ज ने असहज होकर कहा।

''मै अकेली नहीं हूँ। मेरे साथ यीशु जो है।'' मेरी ने जवाब दिया।

उस रात मेरी की तबियत अत्यधिक खराब हो गी। वह पीड़ा से कराहने लगी। जोर्ज मेरी के पास ही थे। डॉक्टरों ने अपनी असाहयता दिखाई। मेरी के कमोर हाथों को अपने हाथ में लेकर जोर्ज ने कहा, ''मेरी अपना प्रभु आ रहा है।''

''हाँ वह शीघ्र आ रहा है।'' मेरी ने उत्तर दिया। दोपहर डेढ़ बजे जोर्ज ने मेरी के मूंह में दवाई डालकर दिया। उन्हे दवाई में कठिनाई हो रही ती। जोर्ज और लिडिया के साथ मेरी की दो बहने भी अंतिम समय में मेरी के पास थे। दो घंटे के पश्चात् 1870 फरवरी ६ की शाम चार बजकर बीस मिनट पर वे अपने अनंत विश्राम में प्रवेश कर गई।

1870 फरवरी 11 को शवसंस्कार के दौरान हजारों स्त्री पुरुषों और अनाथ बच्चों और परमेश्वर के सेवको ने भाग लिया।

मेरि, प्रिय मेरी.....'' जोर्ज के सिसकने की आवाज बीच में वहां पसरी सन्नाटे के भेदती रही। किन्तु कब्रिस्तान में वे बहुत शात थे। ''परमेश्वर आप की भलाई अगम्य है। आल हमारी भलाई ही करते हैं। जोरज ने भजन 119:68 पर प्रचार किया।

''1832 में जब हमने बेथसेदा चैपल प्रारंभ किया था तब मेरी ही पहली विश्वासी थी। हेनरी क्रेक और मैं पास्टर.....। किन्तु इन वर्षो में वहाँ 2700 विश्वासी ही गये हैं।

मेरी सेवा में मेरी का योगदान अविस्मरणीय था। वह प्यार करने वाली पत्नी थी तो एक उत्तम सहयोगिनी भी थी। मानवीय रीति से कहुँ तो इस समय जबकि मुझे उसकी अधिक आवश्यक्ता थी तब वह मुझसे दूर कर दी गई है। फिर भी परमेश्वर की इच्छा हमे शिरोधार्य है।''

कब्रिस्तान मे वे शांत थे किन्तु उनके बाद के दिन अधिक कष्टप्रद थे। अनाथालय के पुराने निवासियों में से कईयों ने उन्हे

सांत्वानादायक और मार्मिक पत्र लिखो। किसी ने लिखा,'' प्रिय मूलर, मैन ने आप दोनों को हमेशा अपने माता पिता के सीन पर देखा। अपने असली माता पिता को तो मैं नहीं जानता लेकिन प्यार करना मैं ने आप दोनों से ही सीखा है। मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपको सकुशाल रखो। यदि आप भी चले गये तो.....हो....मैं सोच भी नहीं सकता।

इस व्यक्ति के समान कई लोग उनसे पूछते कि यदि आप भी चले गये तो क्या होगा? वे उन्हे जवाब देते कि परमेश्वर किसी और को खडा करेगा। जोर्ज मूलर नहीं तो कोई औ। इस प्रकार परमेश्वर यह प्रगट कि उसका आश्रय जोर्ज मूलर पर नहीं था। यदि संस्था की बात लें तो वह तो अभी भी एक ट्रस्ट द्वार संचालित होता।

मेरी की मृत्यु के पश्चात् अनाथालय के कार्यो में वे वहले जैसे सक्रिय नहीं रहे। इसका एक और कारण था। आष्ली डौन के कर्मचारी और बाहर के लोगों ने गवाही दी कि उनका सहायक जेम्स रैट जिम्मेदरी पूर्वक सारे कार्यों को करेगें। किन्तु कुछ महीनो बाद ही रैट की पत्नी की मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् अपने जीवन साथियों को खोकर जोर्ज और रैट तथा अब तक जीवन साथी से वंचित लिडिया ने मिलकर अनाधालय के कार्यों का संचालन किया।

18 महीनों के बाद 1871 के अगस्त माह में रैट ने जोर्ज के समने लिडिया के लिए विवाह प्रस्ताव रखा। जोर्ज इस प्रसाव से संतुष्ट थे।

1871 नवंबर 16 को जेम्म और लिडिया विवाह हुआ। उस समय जेम्स की उम्र 45 वर्ष और लिडिया की उम्र 39 वर्ष थी। वेथसदा चैपल में उनका विवाह हुआ।

कुछ ही समय बाद बेथसदा चैपल मैं एक और विवाह हुआ। जोर्ज और ग्रेस सांदर का। सूसन्ना जोर्ज से 15 वर्ष छोटी थी। ..... लगभग 50 वर्ष की अवस्था।.....।

''सर्वशक्तिमान परमेश्वर से मैने इस विषय में निर्देश मांगा। उसने मुझे अनुमति दी। पिछले 25 वर्षो से मैं सूसन्ना को एक समर्पित

मसीही के रूप में जानता हूँ। मूलर ने अपनी डायरी मे लिखा।

1832 से ही मूलर का नाम प्रसिद्ध प्रचारकों की श्रेणी में आ गया था। फिर भी वे कभी भी दूरस्थ स्थानों में प्रचार हेतु नहीं गये थे। क्योंकि उनके उपर बहुत सारी जिम्मेदारियाँ थी। इन सारी जिम्मेवारियों ने मूलर को ब्रिस्टल में ही रहने को विवश कर दिया था। वे चाहकर भी ब्रिस्टल से बाहर नहीं जा पाते थे। किन्तु अब बेथसैदा चैपल में कई योग्य और सामर्थी सेवक हो गये हैं। अनाथालय जैसी जिम्मेवारियां जेम्स रैट निभाते हैं। उन्होने प्रार्थना के बाद निर्णय लिया कि अब कुछ वर्ष भ्रमण करते हुए बिताया निभाते है।

इतनी वृद्धावस्था मैं भी मूलर के लिए यात्रा करना दूष्कर नहीं था। सूसन्ना ने भी भ्रमण करना पसंद किया। अपनी पहली यात्रा के दौरान वे समुद्र के पार नहीं गये। 1875 में 70 वर्ष की अवस्था में वे यात्रा पर निकले।

उन्होंने अपनी इस यात्रा में पहना संदेश इंग्लैंड के मेट्रोपोलीटन टाबरनेकल में दिया। इस सभी का आयोजन स्पर्जन द्वारा किया गया था। जून के महीने में उन्होने न्यूकासी शहर में 18 सभाओं में प्राचार किया। उनकी प्रत्येक सभाओं में हजारों की संख्याओं में श्रोता होते थे। ओपन एयर मिश्न के प्रथम सचित गाविल किर्क हाम ने मूलर के संदेशों के बारें में इस प्रकार लिख-

''.....सार्वजनिक सभाओं में मूलर एक अध्यापक के समान के समान थे। किन्तु जब वे उद्धार का संदेश सरलतम भाषा में सुनाना प्रारंभ करते थे तो लोग इंकार नहीं कर पाते थे। प्रचारक लोग यदि उनका अनुकरण करें तो अच्छा होगा। जब परमेश्वर की ओर से उन्हे कोई संदेश मिलता तो वे प्रार्थनापूर्वक वचन का अध्ययन करके उसका विकास करते। उनके उदाहरणों में संतों की जीवनियां, इतिहास, आदि होते। किन्तु मुख्य रूप से वचन में वर्णित चरित्रों का हीं उदाहरण देते।''

अपने प्रथम भ्रमण के दौरान उन्होने सत्तर स्थानों में प्रचार किया।

1875 अगस्त में अमेरिका से डी.एल. मूडी और सांगी इंग्लैंड

आये। उनकी सभाओं ने ब्रिटिश जनता में उत्तेजा भर दी। मूडी ने कहा कि इंग्लैंड में जिन तीन मुख्य व्यक्तियों से मैं मिलना चाहता हूँ उनमें से एक मूलर हैं। जोर्ज से मिलने और उनके अनुभवों का गवाह बननें के लिए उन दोनों ने ब्रिस्टल का दौरा किया।

मूडी और सांगी के लौटने के बाद मूलर परिवार ने अपना द्वितीय दौरा प्रारंभ किया।

इस दौर को उन्होने मूडी और सांगी द्वारा किये गये सेवाओं का ही अगला अंक कहा। कयोंकि उनकी सभाओं में जिन्होने उद्धार प्राप्त किया था उन्हे शिक्षा देने के लिए उन्होने लंदन के मिल्ड्रे पार्क में 14 सभाएं ली। वहाँ हर सभा में 3000 से अधिक श्रोताओं ने अपनी उपस्थिती दी।

वहाँ से वे स्काटलैंड की ओर गये। वहाँ ग्लासगो शहर में जिस दिनों में अड़तीस सभाओं संदेश दिया। किसी किसी सभा में श्रोताओं की संख्या 5000 से भी अधिक हो जाती थी। ड्यूबलिन में तीन सफताह मं 21 सभाएं लेकर वे लिवरपूल की संख्या 5 से 6 हजार बहुँच जाती थी। अन्य दिनों में श्रोताओं की स्ख्या 2 से 3 हजार होती थी। फिर एडिनबर्ग.....। वहाँ उन्होने 53 सभाएं ली। वहाँ से अंब्रेथ, मोन्ट्रोस, अबरडीन.....।

1876 जूलाई को वे वापस बिस्टल पहुँचे। विश्राम के लिए नहीं.....बल्कि अगले माह की यूरोप भ्रमण की योजना के साथ। इस बार फ्रांस, स्विटजरलैंड, स्यूरिच, हॉलैंड, जर्मनी जैसे मुख्य यूरोपीय राज्यों में उन्होने प्राचार किया। अगली यात्र अमेरिका की ओर.....।

17

अमेरिका में मूलर की पहली सभा 1877 सितंबर 9 को हुई। न्यूयोर्क के तेलमेग्स टाबरनेकल मैं.....। लिन्युयोर्क, ब्रुकलिन जैसी जगहों पर मूलर ने 50 सभाएं की। नवंबर 4 को उन्होने बैट फील्ड द्वारा न्यूबरी पोर्ट में स्थापित ओल्ड प्रिस्बिटेरियन कलीसिया में संदेश दिया। फिलादेलफिया में विभिन्न कलीसियाओं के 500 सेवकों के लिए उन्होने एक विशेष सभा की। वहां से वे बाल्टिमोर गये। उसके बाद उन्होने वाशिंगटन शहर के पास स्थित वेथलैंड सेमिनरी के विदेशी विद्यार्थियों के लिए कक्षाएं ली।

1878 जनवरी 10 को राष्ट्रपति हेयस के विशेष निमंत्रण पर वे परिवार के साथ वाइट हाउस गये। वाशिंगटन से वे अलहानी के कुछ गांवों मे गये। वहाँ से कोलंबिया, सावन्ा, मिसोरी सानफ्रांसिस्कों, कालिफोर्निया, गये। अंत में वे 1878 जून 27 को शिकागो से वापस लिवरपूल के लिए रवाना हूए। जूलाई 8 को वे वापस ब्रिस्टल पहूँचे।

एक माह तक आष्ली डौन में रहने के बाद मूलर परिवार पुनः भ्रमण के लिए निकल पड़े। 1878 सितंबर से 1879 जून तक वे फ्रांस, स्विटजरलैंड, जैसे यूरोपीय देशों का दौरा कर सभाएं लेते रहे।

1880 में धर्मविज्ञानपीठ की अधीनता में दुनिया भर में 76 विद्यालय संचालित हो रहे थे। इन में से 14 स्पेन में, 4 भारत में, 1 इटली में, 6 ब्रिटिश गियना में और शेष इंग्लैट और वेइल्स में में थे। 7000 से अधिक बच्चे इन विद्यालयों में मुफ्त शिक्षा प्राप्त कर रहे थे।

अपने पाँचवें दौर में वे स्पेन के कुछ विद्यालयों में भी गये। उन्होने बच्छों से सरल भाषा में सुसमाचार बांटा। ''मेरे प्यारे बच्चों, मैं आप लोगों से बहुत अधिक प्यार करता हूँ। आप लोगों के लिए मैं प्रतिदिन किया करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप सब लोग स्वर्ग में भी हों। किन्तु उसके लिए आप लोगों को प्रभु यीशु में आश्रय लेना होगा.....।'' इस प्रकार वे सुसमाचार बांटते रहे। उन्होने आष्ली डौन के बच्चों के बारे में भी बताया। उन्होने कहा कि उनमें से अधिकांश यीशु की संतान हैं और आप लोगों को भी यीशु की संतान बनना। है।

1889 को मूलर भारत पहूँचे। उनकी पहले दौर की सभाएं कलकत्ता में हुई। उसके बाद वे दार्जिलिंग के लिए ट्रेन पर सवार हुए। जलेपहार में जर्मनी लोगों के लिए एक विशेष सभा का आयोजन किया गया। वे देहरादून, आगरा, शिमला, मसूरी, आदि स्थानों पर भी गये। तत्पश्चात् वे इलाहबाद में पांच कलीसियाओं द्वारा ओयोजित प्रेमभोज में शामिल हुए।

1890 जनवरी में मूलर परिवार जबलपूर मे थे। 10 तारीख को मूलर के पास एक तार पहुँचा जिसने उन्हे हिलाकर रख दिया। वह उनकी इकलौती पुत्री लिडिया की असामयिक मृत्यु का समाचार था। 58 वर्ष की उम्र में लिडिया प्रभु के पास चली गई थी। वह अपने पति के साथ अनाथालय के संचालन में व्यस्त थी। मूलर के इंग्लैड

छोड़ते समय वह स्वस्थ थी।

मूलर परिवार इंग्लैड वापस जाने की तैयारी करने लगे। कलकता से मुंबई के लिए रेलगाड़ी पर सवार हुए। उनकी योजना थी कि वहाँ से वे जहाज द्वारा इंग्लैड जाएंगें। किन्तु उन्हे जहाज के लिए 15 दिन तक इंतजार करना पड़ा। इस अवधइ में भी वे प्रचार करते रहे। उन्हे जहाज के कुछ जर्मन कर्मचारियों के लिए सभा लेने का अवसर मिला।

वापस ब्रिस्टल आकर वे कुछ महीनों तक आष्लीडौन में ही रहे। चिकित्सकों ने कहा कि उनके लिए विश्राम लेना बहुत ही अनिवार्य है। किन्तु गर्मी के मौसम के बाद मूलर परिवार पुनः यात्रा पर निकल पड़े। जर्मनी, स्विटजरलैंड, वियना, इटली में फ्लोरंस, रोम, नेपल्स आदि देशों में वे दो वर्षो तक भ्रमण करते रहे। 1892 के मई माह में वे वापस लौटे।

पिछले सत्रह वर्षो से वे यात्रा ही कर रहे हैं। इस बीच लगभग दो लाख मील की यात्रा वे कर चूके हैं। उन्होने बर्फ से यूरोपीय प्रदेशों से लेकर उष्णकटिबंध के गर्म प्रदेशों की भी यात्रा की। लगभग 20 वर्ष बहले 73 वर्ष की उम्र में मृत मेरी होती तो निश्चय ही वे इन यात्राओं में मूलर का साथ नहीं दे पाती। लेकिन सूसन्ना इन यात्राओं में मूलर के साथ रहीं। वे उनके लिए एक अच्छी साथी और परिचारिका भी थी। उन्होने कभी भी वेदी पर से प्रचार में उत्सुकता नहीं दिखाई। किन्तु वे जहां भी जाती, गांवों और शहरों में घूम घूमकर वहाँ की क्षेत्रीय भाषा में लिखित मसीही पर्चो का वितरण करती। वे क्षेत्राय भाषा में बाइबल और नया नियम का वितरण करती। इन सबसे बढ़कर उन्होने हजारों लोगों को व्यक्तिगत रूप से भी सुसमाचार सुनाया।

मूलर परिवार ने लंबी यात्राओं का दौर समाप्त किया। लंबे अंतराल के बाद आष्मीडौन में उनकी उपस्थिति ने पुनः सभों में आनंद का संचार किया।

1894 जनवरी 10*

जोर्ज पुनः विधुर हो गयो। सूसन्ना मूलर अपनी 73 वर्ष की उम्र में प्रभु के पास चली गई।

बेटी और पत्नी को खोने के बाद उन्होने ब्रिस्टल के बाहर जाना छोड़ दिया। उन्हे लगा कि अब पौल स्ट्रीट के 21 नंबर के आवास की आवश्यक्ता नहीं है। काफी लंबे समय से मूलर के अनुभवों का साक्षी बने उस घर को अंततः मूलर ने भी छोड़ दिया। वे आष्लिडौन के तीसरे नंबर के अनाथालय में 2050 अनाथ बच्चों के साथ ही एक कमरे में रहने लगे।

1897 की गर्मी के एक दिन एक पत्रकार मूलर का साक्षात्कार लेने आये।

''.....क्या हमेशा आपकी आवश्यक्ताओं के लिए अपको धन मिला.....? क्या परमेश्वर ने हमेशा अपनी प्रतिज्ञा क निभाया.....? उसने पूछा।

''निश्चय ही.....।'' मूलर ने दृढ़ता के साथ कहा। इस सेवा को प्रारंभ हुए ७ दर्शक से उपर हो गोये हैं। एक भी दिन ऐसा नहीं आया जब किसी बच्चे को भूखा सोना पड़ा हो। कभी कभी तो खाली जेब के साथ हमारा दिन प्रारंभ होता है किन्तु ठीक समय पर परमेश्वर प्रबंध कर देता है। अब तक परमेश्वर ने मुझे प्रार्थना के उत्तर के रुप में 14 लाख पौंड दिये हैं। इस समय हमारा वार्षिक खर्च 50000 पौंड है। यह सह कुछ बिना किसी से कुछ मांगे परमेश्वर हमें देता है।

''मुलर मैने आपका जीवन चरित्र पढ़ा है कि किस प्रकार आपने विश्वास के गहरे अनुभवों को प्राप्त किया। क्या वह अब भी ऐसा ही है?

''मुलर मैने आपका जीवन चरित्र पढ़ा है कि किस प्रकार आपने विश्वास के गहरे परमेश्वर हमें देता है।

''कभी कभी हमारा फंड मृतप्राय हो जाता है। पिछले ऐसी अवस्था आई। मैंने भाईयों को बुलाकर कहा, आओ हम प्रार्थना करें। हमने

प्रार्थना किया। पहले 100 पौंड मिला। फिर 200 पौंड। जल्द ही1500 पौंड आया।''

मैं तुम्हे कभी नहीं छोडुँगा और न त्यागूंगा। परमेश्वर के कार्य करने की कोई सीमा नहीं है। जब उसने एक शिलिंग भेजा तब भी मैने उसे धन्यवाद दिया और जब 12000 दिया तब भी मैंने उसका धन्यावाद किया।''

''क्या आपने कोई रिजर्व फंड बना रखा है जिसका उपयोग बहुत तंगी के समय किया जग सके।''

''यह मूर्खता की बात है मेरे भाई।'' जोर्ज की आवाज गंभीर हो उठी। रिजर्व फंड रखकर हम किस मुंह से प्रार्थना करें। परमेश्वर कहेगा कि पहले उस धन को निकाल लाओ। हमने स्वर्ग में अपना घन जमा कर रखा है। हमारा विशवास जीवित परमेश्वर पर है।''

''क्या कभी आपको इच्छा नहीं हुई कि अपने लिए कुछ संपत्ति इकठ्ठा करें।''

जोर्ज ने अपना पुराना सा पर्स निकालकर उसके सामने रख दिया। ''मेरी सारी कंपत्ति इसमें है। मैं अपने लिए जमा करूँ.....? सच पूछो तो मुझे कभी ऐसा करने की हिम्मत नहीं हूई। यदि मैं ऐसा करूँगा तो अपने प्रेमी और दयालु परमेश्वर का अपमान कर रहा हूँगा।''

जब जब उन्हे व्यक्तिगत आवश्यक्ता के लिए भी धन मिला उसे भी उनहोने अपनी जरूरत का धन लेकर शेष अनाथालय के लिए दे दिया करते थे। इस प्रकार अपने जीवनभर में उन्होने 80000 से अधिक पौंड अनाथालय की सेवकाई के लिए दिया था।

मूलर हमेशा परमेश्वर के अनुग्रह के प्रति जागरुक रहते थे। उन्होने पत्रकार से कहा, ''मेरे भाई, जोर्ज मूलर एक हीं बात का दावा कर सकते थे। वह था, आग से जलता हुआ नरक। मैं एक खोया हुआ पापी था लेकिन अब एक बचाया हुआ पापी हूँ। मैं पापी स्वभाव का था किन्तु अब मेरा जीवन पाप में नहीं है। मैं पाप से घृणा करता हूँ..... पवित्रता से प्यार करता हूँ.....बहुत अधिक प्यार

करता हूँ.....।''

1889 मार्च।

जब लोगों ने सुना कि आज जोर्ज मूलर संदेश दे रहे हैं तब ब्रिस्टल के पुराना बाजार के चैपल में उस दिन अपार जन समूह उमड़ पड़ा।

संदेश के अंत में जोर्ज ने कहा। ''मैं एक संतुष्ट वृद्ध हूँ। मैं संतुष्ट हूँ। मैं अपने कमरे में इधर घूम घूमकर परमेश्वर से कहता हूँ, हे यीशु मैं अकेला नहीं हूँ। आप मेरे साथ है। मैं ने अपने हाथों से अपनी दो पलियों ओर बेटी का दफनाया है। सब मुझे छोड़कर चले गये किन्तु आप सदा मेरे साथी है। मैंने कभी भी अकेलापन का अनुभव नहीं किया। आपकी मुस्कुराहट मेरे लिए जीवन से भी बढ़कर है।''

मार्च 6 रविवार।

मूलर ने अल्मा रोड़ चैपल में आराधना में भाग लिया। प्रभु भोज लिया.....। सोमवार और मंगलवार को अनाथालय की गतिविधियों में भाग लिया। किन्तु बुधवार की सुबह उन्हे कुछ थकावट सी लंगी। वस्त्रधारण करना भी मुशिकल सा लगा। जेम्स रैट ने सलाह दी कि वे अपने बेडरूम में किसी के लिए रख लेवें।

''कल के बाद.....।'' जोर्ज ने उत्तर दिया।

दोपहर तक वे फिर स्वस्थ हो गए। पुर्व की भांति अनाथालय के कार्यो में अपना योगदान दिया।

1989 मार्ज 10 गुरुवार।

सुबह सात बचे एक सेवक चाय लेकर मूलर के कमरे पर पहूँचे। किन्तु उस संत का शरीर निर्जीव हो चुका था।

अपनी मृत्यु तक वे एक बात के लिए प्रार्थना किया करते थे। मेरी मृत्यु के पश्चात् आष्लीडोन के अनाथाल विश्वास पथ छोड़कर व्यवसायिक तरीके अपनाने न लगें। आज उन्हे प्रसन्नता हो रही होगी। आज भी उसके संचालक हर बात के लिए परमेश्वर पर आश्रित रहते हैं। हां, उन उंची अट्टालिकाओं के ढांचे परिवर्तन आ गया है। मसीही परिवार का माहौल बनाने के लिए उन्हे छोटे छोटे घर का रूप दे

एक नजर में

जोर्ज मूलर विश्वास जीवन का शिरोमणी है। जब वे शून्य की अवस्था मे थे तब उन्होने परमेश्वर की आवाज को सुकर एक बहुत बड़ा कदम आगे बढ़ाने का साहस किया। मूलर का मूल धन उनकी प्रार्थनाएं ही थी।

परमेश्वर के कभी समाप्त न होने वाले भंडार में वे अक्सर अपने विश्वास रूपी चेक को मूनाया करते थे।

1836

रोज की तरह एक सुबह। अनाथालय का रसोइया घबराया हुआ था। ''सर, नाश्ते का समय हो गया है लेकिन रसाई में एक दाना भी नहीं है।''

''यह एक कठिन समय है। पर्स में एक पेनी भी नहीं है। इससे पहने भी कठिन समय आया है लेकिन ऐसा नहीं।''

''मैं उन बच्चों से क्या कहूँ? उनमें कई से कई तो अभी टाईफोइड़ की बीमारी से उबर नहीं पाये है।'' रसोईया अपनी व्याकुलता नहीं छुपा सका।

बच्चों, आज मैं भी आप लोगों के साथ भोजन करने आया हूँ। लेकिन उससे पहने मैं आप लोगों से कुछ कहना चाहता हूँ। आज हमारी मेज खाली है। किन्तु परमेश्वर जिसने आज तक कभी हमें भूख नहीं रखा वह आज भी हमें देगा। आओं हम, भोजन के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।'' मूलर ने कहा।

''लेकिन अंकल, हमारे प्लेट तो खाली हैं।'' एक बच्चा उछलकर खड़ा हो गया।

''बेटे, ईसी को विश्वास कहते है। बाईबल का परमेश्वर आज भी जीवित है। इसिलिए आओं हम प्रार्थना करें।'' जोर्ज ने बच्चों को अपने चारों ओर इकठ्ठा किया।

''हे परमेश्वर, आपको धन्यावाद कि आपने हमें आहार दिया.....।'' अचानक कुछ जोर की आवाज आयी। अभी उनकी प्रार्थना समाप्त भी नहीं हुई थी कि दरवाजे पर कोई खटखटाने लगा।

''माफ कीजिए, मैं एक बेकरी वाला हूँ। मै अगले शहर के लिए डबलरोटी लेगक यहाँ से गुजर रहा था कि मेरी गाड़ी का पट्टा टूट गया। अब तक गाड़ी बनेगी, मेरा सारी डबलरोटी अराब हो जाएगी। मुझे पता चला कि यहां एक अनाथालय है। कृप्या आप यह सारा ब्रेड अपने बच्चों के लिए ले लें।''

मूलर के पास धन्यावाद के शब्द नहीं थे।

1842 मार्च 9

स्कूल और अनाथालय काफी कठिन समय से गुजर रहे थे। बिना सहायता के अब एक कदम भी आगे की ओर नहीं रखा जा सकता।

मूलर रोज की भांति अपने परमेश्वर ओर देखा। डाकिया भी आकर चला गया। अब क्या.....?'' निराशा के सारे कारण मौजूद थे। परन्तु मूलर ने विश्वास नहीं खोया। कुछ ही देर बाद मूलर अनाथालय से एक व्यक्ति आया। उसके हाथ में 10 पौंड थे। अनाथालय के नाम से होने के कारण डाकिया मूलर के पास न आकर सीधे अनाथालय की ओर चले गये थे। इस प्रकार एक बार और मुलर के विश्वास की परख हुई।

2200 बच्चों के साथ ही साथ 189 मिशन केन्द्रो की जिममेवारी भी मूलर के उपर थी। 1963 के दिसंबर माह में एक घटना हूई। मिशनिरयों की सहायता के लिए 476 पौंड की आवश्यक्ता है। मूलर के पास मात्र 280 पौंड। मूलर ने प्रार्थना युद्ध प्रारंभ किया। नये साल के आगमन में अब तीन दिन ही शेष हैं। शाम को जब मूलर घर आये तो 200 पौंड इंतजार कर रहा था। 476 के स्थान पर 480 पौंड।

1846 जून 20 तारीख को लिडिया बहुत अधिक बीमार हो गई। वह मैत के बेहद करीब पहुँच गई थी। जोर्ज और मेरी ने उसे परमेश्वर के हाथों में सौंप कर प्रार्थना की। परमेश्वर ने उन्हे प्रतिज्ञा दी।

''परमेश्वर तुम्हारे मनोरथों को पूर करेगा।'' भजन 37:4। उनकी इच्छा थी कि परमेश्वर उसे अच्छा करे और प्रतिज्ञानुसार उसने लिडिया को अच्छी कर दिया।

मुलर ने प्रार्थना के लिए पाँच कदन बताए है–

1. यूहन्ना 14:13 के अनुसार प्राप्त करने के लिए हम केवल यीशु की महिमा पर आश्रय और ध्यान करे।
2. भजन 66:18 के अनुसार हमें अपने गुप्त पापों से भी छुटना है वरना परमेश्वर प्रार्थना नहीं सुनेगा।
3. परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास। अविश्वास करने से हम परमेश्वर को दोषी ठहराते है। इब्रा. 11:6; 6:13-20*
4. परमेश्वर की इच्छानुसार मांगना। अपनी सांसारिक अभिलाषाओं के लिए कुछ नहीं मागना। १ युहन्ना 5:14, याकूब 4:13*
5. परमेश्वर से बच्चों के समान जिद के साथ याचना करना। और बाट जोहना। याकूब 5:7, लूका 18:1-8*

बाईबल का परमेश्वर आज भी जीवित है। इस युग के लोगों के लिए भी वह उतना ही उपलब्ध है जितना जोर्ज मूलर के लिए था।

मूलर की जिंदगी के मील के पत्थर

18.05 सितंबर 27 - प्रष्या में जन्म।

1820 - मां की मृत्यु

1825 अप्रैल - फ्रेडरिक तोलक की शिष्यता में धर्मविज्ञान के अध्ययन के लिए हॉल विश्वविद्यालय मे प्रवेश।

1825 नवंबर - एक घरेलू प्रार्थाना सभा में उद्धार प्राप्त किया।

1828 मार्च - क्षयरोग की संभावना जताकर सैनिक सेव में प्रवेश नहीं।

1829 जनवरी - क्षयरोग की संभावना जताकर सैनिक सेवा में प्रवेश नहीं।

1829 मार्च - यहूदियों के मध्य सुसमाचार सुनाने के लिए लंदन सोसायटी के मिशनर के रूप में लंदन पहुचे।

1829 जून - हेनरी क्रेक और ब्रदरन समूह के संस्थापकों से मुलाकात।

1830 जनवरी - लंदन सोसायटी से संबध विच्छेद।

1830 - टेन मौथ के एबनेजर चैपल के पास्टर बने।

1830 आगस्त - ब्रदरन मिशनरियों में अग्रणी, एंथनी नोरिस ग्रोव्स की बहन मेरी से विवाह।

1830 अक्टूबर - प्यूरन्ट प्रथा को रद्द किया गया। बदले में विश्वास पेटी रखी गई।

1832 मई - ब्रिस्टल के गिडियन चैपल का निमंत्रण स्वीकार किया।

1832 सितंबर - लिडिया का जन्म।

1834 - धर्मविज्ञान विद्यापीठ की स्थापना।

1836 अप्रैल - 30 बच्चों को लेकर विल्सन स्ट्रीट में प्रथम अनाथालय की स्थापना।

1841 - मुलर के पिता की मृत्यु।

1849 जून - आष्ली डौन में 300 बच्चों के लिए अनाथालय का निर्माण।

1857 - वहीं पर दूसरे भवन का निर्माण।

1862 - तीसरे भवन की निर्माण।

1866 जनवरी - हेनरी क्रेक का निधन।

1869 - आष्ली डौन में चौथे भवन का निर्माण।

1870 फरवरी - मेरी की मृत्यु।

1871 नवंबर - सूसन्ना सांगर से विवाह।

1875 - प्रचार भ्रमण का प्रारंभ।

1890 जनवरी - लिडिया की मृत्यु।

1892 मई - प्रचार भ्रमण का अंत।

1894 जनवरी 10 - सूसन्ना की मृत्यु।

1894 मार्च 9 - आष्ली डोन चैपल की शाम की सभा का संचालन किया।

1898 मार्च 10 - 92 वर्ष की अवस्था में 6:00 बजे अनंत निवास की यात्रा पर निकल गये।

मूलर के अनाथालय का वर्तमान पता
The Muller Homes for Children,
Muller House, 7, cotham Park
Bristol, BS6 6DA
UK